क्रिस्टोफर कोलंबस.

कोलम्बस ।

[अमेरिकाके आविष्कर्ताका जीवनचरित ।]

लेखकः—

पण्डित शिवनारायण द्विवेदी ।

संशोधकः

नाथूराम प्रेमी

प्रकाशकः—

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय, बम्बई ।

श्रावण १९७४ वि० ।

जुलाई १९१७ ।

प्रथमावृत्ति] [मूल्य बारह आने ।

निवेदन ।

क्रिस्टोफर कोलम्बस इतिहासप्रसिद्ध आविष्कारक है। योरपनिवासियोंमें कोलम्बस ही सबसे पहला साहसी वीर था, जिसने सबसे पहले अमेरिकाखण्डका पता लगाया। उसे केवल अपनी बुद्धि, तर्क और अनुमानका ही सहारा था, इसी सहारेसे उसने सैकड़ों विपत्तियोंका सामना करके यह महान् आविष्कार किया। इस विषयमें वह किसीका भी ऋणी नहीं है।

कोलम्बसके पहले योरपके साथ सारे संसारके लिए भी अमेरिका अदृष्टपूर्व था या नहीं, इस विषयमें कुछ सन्देह उपस्थित हुआ है। कुछ ऐसे प्रमाण मिले हैं जिनसे मालूम होता हैं कि कोलम्बससे बहुत पहले—अबसे कोई दो हजार वर्ष पहले--भारतवासियोंको अमेरिकाखण्डका पता था और यहाँके बौद्धभिक्षु अपने धर्मका प्रचार करनेके लिए वहाँ जाया करते थे। बंगला भाषामें ' प्राचीन हिन्दूदिगेर समुद्रयात्रा औ वाणिज्यविस्तार ' नामकी एक पुस्तक है, उसके एक अध्यायमें इस विषयके अनेक प्रमाण दिये गये हैं। पीरू और मेक्सिकोमें प्राचीन मकानोंके मन्दिरोंके और शिल्पके जो चिह्न मिले हैं, वे सब बौद्धयुगके भारतीय स्थापत्य और भास्कर्यसे मिलते-जुलते हुए है। मेक्सिकोके दक्षिणका 'ग्वाटीमाला' प्रदेश संस्कृत 'गौतमालय' (गौतमबुद्धका स्थान) का बिलकुल स्पष्ट अपभ्रंश है। मेक्सिकोके ' पालके ' नामक

स्थानमें बुद्धदेवकी एक मूर्ति मिली है। इस मूर्ति पर लिखा हुआ है—'शाकोमल'-जो शायद 'शाक्यमुनि' का अपभ्रंश है। तिब्बतके बौद्ध अपने पुरोहितोंको 'लामा' कहते हैं। उसी प्रकार पीरू और मेक्सिकोवाले भी अपने पुरोहितोंको 'लामा' कहते है। मेक्सिको, पीरू तथा संयुक्त राज्यके पश्चिमी देशोंमें सैकड़ों बौद्धमन्दिर और बौद्धमूर्तियाँ मिली है। इसके सिवाय कई शिलालेख भी ऐसे मिले है जिनसे मालूम होता है कि वहाँके प्राचीन निवासी बौद्धधर्मके उपासक थे। जिन लोगोंने वहाँ जाकर धर्मके प्रचारका काम किया था, वे भारतवासी बौद्ध थे और चीनके रास्तेसे उस ओर गये थे। अमेरिकाका अलास्का प्रदेश चीनके निकट है। चीनसे अलास्का और इस अलास्कासे मेक्सिको तक समुद्रके किनारे किनारे जितने प्रदेश हैं उन सबमें बौद्धसभ्यता और बौद्धधर्मके चिह्न पाये जाते हैं। यद्यपि इनमेंसे अधिकांश चिह्न स्पेनिश लोगोंने नष्ट भ्रष्ट कर दिये हैं, फिर भी बहुत कुछ अवशिष्ट हैं। मेक्सिकोमें गणेश, राहु और सूर्यकी भी मूर्तियाँ पाई गई है, जो भारतवर्षकी खास चीजें है। इन सब बातोंसे जान पड़ता है कि भारतवासियोंने अमेरिकाका पता बहुत पहले लगा लिया था और यूरोपियन सभ्यताके पहुँचनेके बहुत पहले वहाँ एक अनिश्चित समय तक भारतीय सभ्यता रह चुकी थी। इसके लिए हम भारतवासी जितना अभिमान करें उतना थोड़ा है।

पर इससे कोलम्बसके जीवनका महत्त्व जरा भी कम नहीं होता। क्योंकि उसके समय तक यूरोपनिवासियोंको अमेरिकाके अस्तित्वका कुछ भी पता नहीं था। उनके लिए इस बड़े भारी भूभागका मार्ग खोलनेवाला वही एक था और उसने केवल अपनी ही विद्या, बुद्धि और सतत उद्योगके बलसे यह महान् कार्य किया था।

कोलम्बस एक कर्मवीर पुरुष था। उसके अदम्य उत्साह, न थकनेवाला उद्योग, सीमारहित साहस, 'कार्यं वा साधयामि शरीरं वा बातयामि' कहनेवाली दृढता, और बड़े बड़े विघ्नोंको तुच्छ समझनेवाली मानसिक शक्ति, आदि गुण प्रत्येक देश और प्रत्येक जातिके लोगोंके लिए अनुकरणीय है। उद्योगकी महिमाको भूले हुए साहसहीन भारतवासियोंके लिए तो कोलम्बसकी जीवनी बहुत ही उपकारिणी सिद्ध होगी, इसमें जरा भी सन्देह नहीं है।

स्कूलोंकी पाठ्य पुस्तकों और मासिक पत्रोंके सिवाय कोलम्बसके विषयमें कोई स्वतंत्र पुस्तक हमारे देखनेमें नहीं आई, इसलिए यह न बहुत बड़ा और न बहुत छोटा जीवनचरित प्रकाशित किया जाता है। आशा है कि इससे हिन्दीसंसारका कुछ न कुछ उपकार अवश्य होगा।

—नाथूराम प्रेमी।

विषय-सूची ।

पृष्ठसंख्या.

१. पहला अध्याय—**विचारके मार्ग पर ।** ... १

२. दूसरा अध्याय—**साधनाके मार्ग पर कोलम्बस ।** १६

३. तीसरा अध्याय—**कोलम्बसका कर्ममय मार्ग ।** ३७

४. चौथा अध्याय—**विभूति-दर्शन ।** ७५

५. पांचवाँ अध्याय—**पश्चिमी क्षितिज पर ।** ... १११

६. छठा अध्याय—**सिंहावलोकन ।** १६२

हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर-सीरीज ।

हमारे यहाँसे इस नामकी एक ग्रन्थमाला प्रकाशित होती है। हिंदी-संसारमें यह अपने ढँगकी अद्वितीय है । अभी तक इसमें जितने ग्रंथ निकले है, वे भाव, भाषा, छपाई, सौन्दर्य आदि सभी दृष्टियोंसे बेजोड़ हैं । प्रायः सभी साहित्यसेवियोंने उनकी मुक्तकण्ठसे प्रशंसा की है । स्थायीग्राहकोंको सब ग्रन्थ पौनी कीमतमें दिये जाते हैं । स्थायीग्राहक होनेकी ' प्रवेश-फी ' आठ आने है । नीचे लिखे ग्रंथ प्रकाशित हो चुके हैः—

१--२ **स्वाधीनता**—जान स्टुअर्ट मिलके 'लिबर्टी' नामक ग्रंथका अनुवाद । अनुवादक पं० महावीरप्रसादजी द्विवेदी । इसके प्रारंभमें मूल लेखकका लगभग ६० पृष्ठका जीवनचरित भी लगा दिया गया है । मूल्य दो रुपया ।

३ **प्रतिभा**--प्रसिद्ध लेखक श्रीयुत अविनाशचंद्रदास एम, ए., बी. एल. के 'कुमारी' नामक उपन्यासका अनुवाद । बहुत ही शिक्षाप्रद और भावपूर्ण उपन्यास है । मूल्य एक रुपया ।

४ **फूलोंका गुच्छा**--उच्चश्रेणीकी चुनी हुई ११ गल्पोंका संग्रह । मूल्य नौ आने ।

५ **आँखकी किरकिरी**--डाक्टर सर रवींद्रनाथ टागोरके प्रसिद्ध उपन्यासका अनुवाद । मूल्य डेड़ रुपया ।

६ **चौबेका चिट्ठा**—बंगसाहित्यसम्राट् स्वर्गीय बंकिमबाबूके ज्ञान-विज्ञान-देशभक्तिपूर्ण हास्य ग्रंथका अनुवाद । मूल्य बारह आने ।

७ **मितव्ययता**—सेमुएल स्माइल्स सा० के 'थिरिफ्ट' नामक ग्रन्थके आधारसे लिखित । मूल्य चौदह आने ।

८ **स्वदेश**—डा० सर रवीन्द्रनाथ टागोरके चुने हुई निबंधोंका अनुवाद । मूल्य दश आने ।

९ **चरित्रगठन और मनोबल**—राल्फ वाल्डो ट्राइनके 'कैरक्टर बिल्डिंग थाट पावर'का अनुवाद । मू० ढाई आने ।

१० **आत्मोद्धार**—प्रसिद्ध हबशी विद्वान् बुकर टी. वाशिंगटनका आत्मचरित । मू० सवा रुपया ।

११ **शांतिकुटीर**—श्रीयुत अविनाश बाबूके 'पलाशवन' नामक उपन्यासका अनुवाद । मूल्य बारह आने ।

१२ **सफलता और उसकी साधनाके उपाय**—कई अँगरेजी पुस्तकोंके आधारसे लिखित । मूल्य दश आने ।

१३ **अन्नपूर्णाका मन्दिर**—अतिशय हृदयभेदी, करुणारसपूर्ण और शिक्षाप्रद उपन्यास । मू० बारह आने ।

१४ **स्वावलम्बन**—सेमुएल स्माइल्सके ' सेल्फ हेल्प ' नामक ग्रन्थके आधारसे लिखित । मूल्य सवा रुपया ।

१५ **उपवासचिकित्सा**—उपवास या लंघनसे तमाम रोगोंको नष्ट करनेके उपाय । मूल्य चौदह आने ।

१६ **सूमके घर धूम**—सभ्य हास्यरसपूर्ण प्रहसन । मू० तीन आने ।

१७ **दुर्गादास**—प्रसिद्ध स्वामिभक्त वीर दुर्गादासके ऐतिहासिक चरित्रको लेकर इस नाटककी रचना की गई है । मूल्य सवा रुपया ।

१८ **बंकिम-निबन्धावली**—स्वर्गीय बंकिम बाबूके चुने हुए निबन्धोंका अनुवाद । मूल्य एक रुपया ।

१९ **छत्रसाल**—बुन्देलखण्डकेसरी महाराज छत्रसालके ऐतिहासिक चरित्रके आधार पर लिखा हुआ देशभक्तिपूर्ण उपन्यास । मूल्य पौने दो रु० ।

२० प्रायश्चित्त—बेल्जियमके सर्वश्रेष्ठ कविके एक भावपूर्ण नाटकका हिन्दी अनुवाद। मूल्य चार आने।

२१ अब्राहम लिंकन—अमेरिकाके प्रसिद्ध सभापतिका जीवनचरित। मूल्य दश आने।

२२ मेवाड़-पतन और **२३ शाहजहाँ**—ये दोनों नाटक प्रसिद्ध बंग-लेखक द्विजेन्द्रलालरायके अपूर्व नाटकोंके अनुवाद हैं। मूल्य प्रत्येकका सवा रुपया।

२४ मानवजीवन—अँगरेजी, गुजराती, मराठीकी कई सदाचारसम्बन्धी पुस्तकोंके आधारसे लिखा हुआ उत्कृष्ट ग्रन्थ। मूल्य पौने दो रुपया।

२५ उस पार—द्विजेन्द्र बाबूके एक अतिशय हृदयद्रावक और शिक्षाप्रद सामाजिक नाटकका अनुवाद। मूल्य सवा रुपया।

२६ ताराबाई—यह भी द्विजेन्द्र बाबूके एक नाटकका अनुवाद है। यह पद्यमय है। हिन्दीमें यही सबसे पहला खड़ी बोलीका पद्यनाटक है। मूल्य सवा रुपया।

हमारी अन्यान्य पुस्तकें।

१ व्यापारशिक्षा—मूल्य आठ आने।

२ युवाओंको उपदेश—विलियम कावेटके 'एडवाईस टु यंगमेन'के आधारसे लिखित। मू० दश आने।

३ कनकरेखा—प्रसिद्ध गल्पलेखक केशवबाबूकी गल्पोंका अनुवाद। मू० बारह आने।

४ शान्तिवैभव—'मैजेस्टी आफ कामनेस'का अनुवाद। मूल्य चार आने।

५ लन्दनके पत्र—विलायतसे एक देशभक्त भारतवासीकी भेजी हुई देशभक्तिपूर्ण चिट्ठियोंका संग्रह। मूल्य तीन आने।

६ अच्छी आदतें डालनेकी शिक्षा—मू० ढाई आने।

७ ब्याही बहू—जो लड़कियाँ ससुराल जानेवाली हैं, या जा चुकी हैं, उनके लिए बहुत ही उपयोगी। मू० तीन आने।

८ पिताके उपदेश—एक सुशिक्षित पिताके अपने विद्यार्थी पुत्रके नाम भेजे हुए पत्रोंका संग्रह। मू० दो आने।

९ सन्तान-कल्पद्रुम—इसमें वीर, विद्वान् और सद्गुणी सन्तान उत्पन्न करनेके विषयमें वैज्ञानिक पद्धतिसे विचार किया गया है। मूल्य बारह आने।

१० मणिभद्र—एक जैन कथानकके आधारपर लिखा हुआ सुन्दर भावपूर्ण उपन्यास। मू० दश आने।

११ ठोक पीटकर वैद्यराज—सभ्य हास्यरसपूर्ण प्रहसन। मू० पाँच आने।

१२ बूढ़ेका ब्याह—खड़ी बोलीका सचित्र काव्य। मू० ।≈)

१३ दियातले अँधेरा---(गल्प) मू० ~)॥

१४ भाग्यचक्र---(गल्प) मू० ~)

१५ विद्यार्थीके जीवनका उद्देश्य---मू० ~)

१६ कठिनाईमें विद्याभ्यास---मू० ॥≈)

१७ वीरोंकी कहानियाँ—मू० ।≈)

हमारा पता:—

मैनेजर, **हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,**

हिराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई।

कोलम्बस

पहला अध्याय ।

विचारके मार्ग पर ।

"विचारोंके द्वारा ही हम भाग्यको
अपना दास बना सकते हैं ।"

—राल्फ वाल्डो ट्राइन ।

कोलम्बस अपने समयका असाधारण पुरुष था । उसकी जीवनी दूसरोंको शिक्षा देने योग्य है और उसका कार्य उस पर श्रद्धा उत्पन्न किये बिना नहीं रहता ।

जिस समय वह उत्पन्न हुआ उस समय योरपकी वही दशा थी जो घरमें चार पाँच बरसके बच्चेकी होती है । वह अपने घरको अच्छी तरह पहचान लेता है, आसपासके रास्तों और मुहल्लोंसे परिचित हो जाता है, पर और दूसरे गाँव, वहाँके हाट-बाजार और खिलौने देखनेकी इच्छा उसमें सदैव बनी रहती है । बहुत बार तो उसी इच्छाकी अदृश्य डोरको पकड़े हुए वह उस ही ओर चल भी पड़ता है । ठीक यही दशा उस समयके योरपकी भी थी । योरपके सब देशोंमें युद्ध, व्यापार आदिका पारस्परिक सम्बन्ध था, पर

इसके साथ ही वहाँवालोंकी इस पृथ्वी पर और भी देश हैं यह धारणा हो गई थी। मध्यएशियामें निवास करनेवाली तुर्क जाति सबसे पहले पश्चिमकी ओर अपनी विजयिनी पताका और तलवार लिये हुए अग्रसर हुई थी। ग्रीस, इजिप्त आदि देशोंको हस्तगत करके इटली आस्ट्रिया और स्पेनकी ओर भी ये बढ़ गये थे। कहीं विग्रह और कहीं मित्रता हुई। इन्हीं तुर्कोंके द्वारा हिन्दुस्थान, चीन और जापान-का माल योरप तक बिकने लगा। हिन्दुस्थानके कपड़े और सोनेचाँदीके बरतनों तसबीरों आदिसे योरपके बाजारोंकी चमक दमक सौगुनी अधिक होगई। समस्त योरपके मुँहमें देवदुर्लभ हिन्दुस्थानके देखनेकी इच्छा प्रबल हो उठी। तुर्कोंने जितनी अतिशयोक्तियोंसे मिली हुई बातें कही थीं उसकी अपेक्षा अधिक मनोहर वर्णनसे वहाँ हिन्दुस्थानके विषयमें बातें होने लगीं। लोग कहने लगे कि हिन्दुस्थान सोनेकी खान है, हीरे और मोतियोंका घर है और इन सब पर विशेषता यह है कि वहाँके आदमी बड़े ही भोले होते हैं। वे मामूली चीजोंके दामोंमें मूठी भर सोना दे डालते हैं। इन बातोंसे सबको सोते जागते हिन्दुस्थान दीखने लगा। प्रत्येक देशका राजा चाहने लगा कि वह किसी प्रकार हिन्दुस्थान पहुँचे, पर हिन्दुस्थान पहुँचन सहज बात नहीं थी। हिन्दुस्थान कितनी दूर है यह कोई

नहीं जानता था, रास्तेका समुद्र कैसा है यह भी अज्ञात था और इन सब पर जहाज ऐसे मजबूत नहीं थे जिन पर भरोसा करके वे भयानक समुद्रमें छोड़ दिये जायँ । इन सबके अलावा सबसे बड़ी कमी यह थी कि अपनी जानको जान न समझनेवाले किसी वीरने इस ओर ध्यान नहीं दिया था। समय आया और जेनोवा राज्यमें १४४८ ई० के लगभग कोलम्बसका जन्म हुआ। कोई नहीं जानता था कि वह दुनियाँ-की आखोंसे अनजान बालक भविष्यके संसारका भला करने वाला होगा । आज उसकी जन्मभूमिका पता नहीं, उसके बचपनके हालोंका पता नहीं ।

कोलम्बसके बाल्यजीवनकी घटनाओंका कुछ पता नहीं, पर इतना निश्चित है कि उसकी वंशमर्यादा प्राचीन और मान्य थी। श्रेष्ठ होने पर भी उसके घराने पर लक्ष्मीदेवीकी विशेष कृपा न थी। किन्तु इससे उसकी शिक्षामें उस समयकी प्रथाके अनुसार कोई कमी नहीं पड़ी। जैसे पूर्वकालमें यहाँके सब शास्त्र संस्कृतभाषामें पढ़ने पडते थे और इस समय अँगरेजीमें पढ़ने पड़ते हैं; उसी प्रकार उस समय योरपमें सब शास्त्र वहाँकी प्राचीन भाषा लैटिनमें सीखने पड़ते थे। कोलम्बसने लैटिनका अभ्यास करके भूमिति, भूसृष्टि, ज्योतिष और चित्रकारीका विशेष अभ्यास किया था । उसके सबसे प्यारे नौकानयन-

शास्त्रके साथ इन सब विद्याओंका बड़ा ही गहरा सम्बन्ध है। सब शास्त्रीय अभ्यास समाप्त करके कोलम्बसने जिस समुद्री विद्यामें सबसे अधिक सम्मान प्राप्त किया उसमें उसने चौदह वर्षकी आयुसे ही हाथ लगा दिया था। भूमध्यसागरके जिन बंदरों पर उसके देशवासी सदा आते जाते रहते थे उनमें उसने अनेक यात्रायें कीं। थोड़े ही दिनों बाद, १४६७ ई० के लगभग उसकी समुद्रमें और आगे जानेकी इच्छा हुई और वह 'आइसलैण्ड' के किनारेके उन स्थानोंतक गया जहाँ अँगरेज और दूसरे लोग मछलियोंका शिकार करने जाते थे। कई बार यात्रा करनेके बाद समुद्रयात्राका डर उसके मनसे निकल गया। अब उसकी इच्छा कुछ और आगे जानेकी हुई। इसी उद्देशसे कोलम्बसने 'थुलिस' नामक टापूसे ध्रुववृत्तके कुछ अंशोंतक यात्रा की। इस यात्रासे उसे समुद्री अनुभव और जहाजी विद्या विशेष प्राप्त हुई, किन्तु धन कुछ भी न मिला। कोलम्बसके घरानेका एक पुरुष जहाजका कप्तान था। इस यात्रासे लौटनेके बाद कोलम्बसने उसीके जहाजमें नौकरी करली। इस कप्तानने कुछ अपने घरू जहाज भी बना रक्खे थे और वे व्यापारिक माल इधरसे उधर पहुँचाते थे। उस समय विनिसिअन और मुसलमान लोग देश और व्यापारके प्रतिस्पर्धी थे, इस लिए बहुत बार समुद्रमें इनसे

लड़ाई-झगड़ा हो जाया करता था। उक्त कप्तानने ऐसे कई झगड़ोंमें धन और यश प्राप्त किया था। इसीके पास जहाजमें कोलम्बस नौकर रहा। बहुतसी समुद्री बातोंमें कोलम्बसका अनुभव वृद्ध नाविकोंसे भी अधिक था और साहस तथा धीरजकी तो वह मानो मूर्ति ही था। इन्हीं गुणोंके कारण थोड़े ही समयमें उसने सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया। एक बार विनिसिअन लोगोंके कुछ जहाज नेदर्लैण्डसे व्यापारिक माल लिये हुए आ रहे थे, पुर्तगालके किनारे पर उनसे और कोलम्बसके स्वामीके जहाजोंसे लड़ाई होगई। दोनों दलोंमें लड़ाई विकटरूपसे हुई तथा अन्तमें दोनों दलोंके जहाजोंमें आग लग गई और वह आग किसी प्रकार न बुझी। ऐसी आपत्तिके समयमें भी कोलम्बसका धैर्य और साहस उसके साथ था। वह झट समुद्रमें कूद पड़ा और एक तैरती हुई लकड़ीका सहारा लेता हुआ किनारेकी ओर बढ़ने लगा। उस जगहसे किनारा छः मीलसे भी अधिक दूर था, पर केवल हिम्मतके सहारे कोलम्बस समुद्र तैरकर किनारे पर जा पहुँचा। जिस व्यक्तिके द्वारा आगे चल कर बड़े बड़े काम होने सम्भव थे, उसके प्राणोंकी रक्षा इस प्रकार हुई।

जब इसमें चलने फिरनेकी शक्ति लौट आई तब यह लिस्बन नामक नगरमें गया। उस समय तक जेनोवावासियों-

की बहुत बड़ी बस्ती लिस्बनमें बस चुकी थी। उन सबने आदर और सम्मानके साथ कोलम्बसको अपने यहाँ रक्खा और इससे जहाजी विद्याको और अधिक उन्नत करनेकी प्रार्थना की। कोलम्बसकी निजी इच्छाके विषयमें अभी हमने कुछ नहीं लिखा है। किन्तु कोलम्बसके विषयमें इसे अधिक स्पष्ट करनेकी उतनी आवश्यकता भी नहीं है। एक ऊँची मनोवृत्तियोंवाले पुरुषमें जैसी इच्छाओंका होना प्रकृत माना जाता हैं, वैसी ऊँची अभिलाषाओंकी नदी कोलम्बसके हृदयप्रदेशमें भी बहती थी। ऊँची अभिलाषाओंवाले पुरुष जैसे अपनी सफलताके साधनोंके निकट पहुँचते जाते हैं, कोलम्बसका लिस्बन जाना भी ऐसा ही था। उस समय पोर्च्युगीज लोग ही समुद्री विद्याके विशेषज्ञ और वीर नाविक माने जाते थे। नये टापुओं और द्वीपोंका पता लगानेके लिए ये लोग ही अपनी जान हथेली पर लेकर उन समुद्रोंमें घुस जाते थे जहाँ कभी मनुष्यके चरण नहीं पड़े थे। कोलम्बस जसी ऊँची वृत्तिवाले पुरुषका इन पर प्रेम होना प्राकृतिक था। इस लिए अपने देशवासियोंके कहनेसे वह लिस्बनमें ही रहने लगा। थोड़े समयके बाद उसी देशकी एक सुशिक्षिता और गुणवती कुमारीके साथ कोलम्बसन विवाह कर लिया। विवाहके अनन्तर बहुतसे नाविकोंका मन भी समुद्री जीवनसे दूर भागने

लगता है, पर कोलम्बस तो पृथ्वीके बड़े भारी आविष्कारके लिए पैदा हुआ था। उसे जैसे जैसे समय और सुविधा मिली वैसे ही वैसे समुद्री जीवन उसे अधिकसे अधिक प्रिय जान पड़ने लगा। उसने बड़ी बारीकी और सावधानीसे समुद्री विद्याका साद्यन्त अध्ययन किया। उसी देशके राजा हेनरीने कोलम्बसके एक सम्बन्धीको कप्तान बनाकर नये टापू तलाश करनेकी आज्ञा दी थी। थोड़े ही दिनोंमें उसने दो टापू तलाश किये, उनके नाम 'सेन्टो' और 'मडेरा' रक्खे गये और उनमें आदमी बसाये गये। उस कप्तानके लिखे हुए विवरण और नकशोंको कोलम्बसने खूब ध्यानपूर्वक पढ़ा। उसने उनसे सिद्धान्त निकाला कि वे लोग किन बातोंके आधार पर पृथ्वीकी खोज करने निकलते हैं, रास्तेमें कैसी कैसी तकलीफें होती हैं और दूरसे जमीनके निशान कैसे दीखते हैं। इन नये टापुओंका वर्णन पढ़कर और उनके नकशे देखकर कोलम्बसके मनको बहुत साहस मिला, उसकी इच्छा हुई कि एक बार वह उन टापुओंको जाकर खुद देखे। इस इच्छाको पूरी करनेके लिए उसने मडेरा टापूकी यात्रा की, और वहाँसे नये पाये हुए कनेरी आदि टापुओंको देखता हुआ वह गिनी राज्यके संस्थानों और आफ्रिका महाप्रदेशके जिन स्थानोंको पोर्च्युगीज़ोंने तलाश किया था उन्हें देखता हुआ घूमा। कई बरस तक उसने इन सबका विशेष ज्ञान प्राप्त किया।

उस समयके योरपनिवासी समुद्री विद्याका जितना ज्ञान रखते थे, उनसे अधिक कोलम्बसको था। उस समय जहाँ तक जहाज जाते थे, उन सब स्थानोंको कोलम्बस देख चुका था। इस विशेष ज्ञानके कारण लोग कोलम्बसका सम्मान करते थे; पर कोरी बड़ाईके सिवाय उसे एक पैसेकी भी प्राप्ति इससे नहीं हो सकती थी। फिर कोलम्बसका मन साधारण सम्मानका भिखारी भी न था—उसके मनमें बड़ी ऊँची इच्छाओंकी तरंगें लहराती थीं और वह रातदिन आगे बढ़नेकी कोशिशमें था। उस समय पोर्च्युगीज लोग ही ऐसे दिलेर थे जो अज्ञात समुद्रमें पता लगाते लगाते नई जमीनें और टापू खोज निकालते थे। इससे उनके राज्यका विस्तार बढ़ता था, धन प्राप्त होता था और उनकी जाति गर्वसे सिर उठाकर अपने आपको वीर पोर्च्युगीज कहती थी। अन्य देशोंके विद्वान् चुपचाप उनके नये आविष्कारोंकी कहानी पढ़ते थे और मन ही मन ईर्षा करते थे, पर वह ईर्षा कामके रूपमें नहीं बदलती थी। उस समय अपने घरमें बैठा हुआ कोलम्बस उन सब शोधों पर विचार करता, सोचता, और अपने सिद्धान्त बनाता था। वह रातदिन सोचा करता था कि किन उपायों, रीतियों और सिद्धान्तों पर चलकर पोर्च्युगीज लोगोंने नये टापुओंका पता लगाया है। फिर वह यह भी सोचता था कि पोर्च्युगीजोंकी

मेहनत जिन कामोंमें व्यर्थ गई है, उनमें सफलता किस प्रकार प्राप्त हो सकती है।

हम ऊपर लिख आये हैं कि उस समय सारे योरपमें हिन्दुस्थानके सोनेकी चर्चा हो रही थी। सबकी यही इच्छा थी कि हम किसी प्रकार हिन्दुस्थान पहुँच कर वहाँके सोनेसे अपने जहाज भर लावें। पर हिन्दुस्थान कितनी दूर है और कौनसा रास्ता है इसका कुछ ठिकाना न था। बड़े बड़े विद्वान् और खोजी लोग इस धुनमें लगे थे। जिस दिन खोजी पोर्चुगीज़ोंने 'केप डे वेर्ड'की प्रदक्षिणा की उस दिन वहाँकी उपजाऊ जमीन और आबोहवा देख कर वे आफ्रिकाखंडके नये शोधोंको भी भूल गये। सबका विश्वास होगया कि हिन्दुस्थानकी जमीन यहाँकी जमीनसे भी अधिक उपजाऊ और सरस होगी। मुसलमान व्यापारियोंके द्वारा लाई हुई हिन्दुस्थानकी चीजोंको वे देखते थे और उन्हीं लोगोंके द्वारा हिन्दुस्थानकी आश्चर्यमें डालनेवाली दौलतका हाल सुनते थे। मुसलमान और विनिसिअन लोग हिन्दुस्थानका माल भर कर योरपमें बेचते थे। थोड़े ही दिनोंमें ये दोनों जातियाँ इस व्यापारके कारण बड़ी मालदार हो गईं—यह सब कुछ देख और सुन कर सब योरपनिवासियोंके मनमें डाह पैदा हुई। पोर्चुगीज लोग नये नये टापुओं और जमीनोंकी खोज करते थे, ये भी हिन्दुस्थान खोज निकालनेके

लिए बड़े आतुर थे; पर इनके जितने जहाज हिन्दुस्थान तलाश करनेके लिए निकले वे सब 'गुडहोप' नामक बंदर तक दक्षिण दिशाको चले और आगे पूर्वकी ओर गये, इसलिए किसीको भी कामयाबी न हुई। हिन्दुस्थानका यह रास्ता उस समय किसीको भी मालूम न था, और यदि मालूम भी होता तब भी यह बड़ा मुश्किल और अनिश्चित काम समझा जाता। क्योंकि उस समय केप नोनसे विषुववृत्त तक पहुँचनेमें ही बहुत वर्ष लगते थे फिर हिन्दुस्थान पहुँचनेमें तो इससे भी कहीं अधिक वर्ष लगते। जिस रास्तेका अंदाजा लगाकर पोर्च्युगीज लोग उसे हिन्दुस्थान-का रास्ता समझते थे वह बड़ा लंबा रास्ता था और साथ ही बड़ा भयानक भी था। फिर यह भी निश्चय नहीं था कि उस रास्तेसे हिन्दुस्थान मिलेगा या नहीं। कोलम्बस भी रातदिन इसी सोच विचारमें पड़ा रहता था। वह सोचता था कि हिन्दुस्थानका कोई सीधा रास्ता भी हो सकता है या नहीं। कोलम्बसके मनमें जो नये विचार पैदा होते थे उन्हें वह अपनी सम्पूर्ण विद्या, बुद्धि और अनुभवसे बड़ी सावधानीसे सोचा करता था। जब वह किसी बात पर खूब सोच विचार कर चुकता था, तब फिर उसे पुराने विद्वानोंके ग्रन्थों, अनुभवों, कल्पनाओं और उनकी सूचनाओंसे मिलाता तथा नवीन नाविकोंके अनुभवमें जो बातें आतीं उनसे भी उसका मीलान करता था। ऐसे कई

वर्षोंके विचारके अनन्तर उसने निश्चय किया कि यदि एटलाण्टिक महासागरमें ठीक पश्चिम दिशाको जाया जाय तो अवश्य कुछ देशोंका पता लगेगा और अधिक सम्भव है कि ये देश हिन्दुस्थानके ही हिस्से या टापू हों ।

कोलम्बसने हिन्दुस्थानके जिस रास्तेका अनुमान किया वह उस समयके विद्वानों और विचारकोंके निकट एक हँसीका विषय था । पर कोलम्ब्रसने अपना निश्चय बड़े गहरे तत्त्वों पर किया था । उस समय जमीनके गोल होनेका सिद्धांत प्रायः सच्चा साबित हो रहा था । लोगोंका इस पर विश्वास जम रहा था । उस समय यह भी मालूम था कि योरप, एशिया और आफ्रिका महा प्रदेशोंके जितने देश हैं वे सब तमाम जमीनके एक छोटेसे टुकड़े हैं । लोगोंका विश्वास था कि मनुष्योंके रहने योग्य पृथ्वीका बड़ा भारी भाग अभी सूना पड़ा है और उसे खोज निकालना आवश्यक है । यह अनुमान भी था कि पूर्वीय गोलार्धमें जितनी जमीन है उतनी ही पश्चिम गोलार्धमें भी होनी चाहिए । पृथ्वीके आकार और महत्त्वसे यह बात पहले-हीसे मानी जाती थी कि पृथ्वीका एक बड़ा भाग और भी है । फिर नये नाविकोंकी खोजसे इस सिद्धान्तको और भी अधिक पुष्टि मिली । उस समय पश्चिम दिशामें पोर्च्युगीज लोग जहाँ तक जहाज ले जाते थे उससे भी आगे एक पोर्च्युगीज नाविक

अपना जहाज ले गया। वहाँ समुद्रमें उसे अदमीका खोदा हुआ नावकी शकलका एक बड़े दरख्तका तना मिला। यह लकड़ीका टुकड़ा पश्चिमी हवाके जोरसे बह कर इधर आगया था, इससे उसने अंदाज़ा लगाया कि पश्चिमकी तरफ किसी बेमालूम देशसे वह बहकर आया है। कोलम्बसका साला जब मडेरा द्वीपकी ओर खोजके लिए निकला था तब उसे भी पश्चिमी हवासे बह कर आया हुआ ऐसा ही नावकी शकलका लक्कड़ मिला था। इसके साथ ही टालेमीने अपने ग्रन्थमें लिख रक्खा था, कि हिन्दुस्थानमें बड़ी मोटी लकड़ी पैदा होती है। कई बार पश्चिमी हवासे बड़े बड़े दरख्त बह कर आ जाते थे और एक बार तो एजोरसके किनारे पर उसी पश्चिमी हवासे दो मुर्दे बहकर आलगे थे। उनकी सूरतें योरप और आफ्रिका खंडके लोगोंसे बिल्कुल न्यारी थीं।

कोलम्बसने अपने अनुभव, बुद्धि और विचारसे जो सिद्धान्त निश्चित किये थे और पुराने तथा नये नाविकोंके अनुभवसे जो विचार पक्के किये थे उनका सार उसने यह निकाला कि पश्चिमकी ओर यात्रा करनेसे किसी बड़े देशका पता लगेगा और कुछ कारणोंसे उसने अनुमान किया कि वह देश हिन्दुस्थान होना चाहिए। पुराने यूनानी लोगोंने अपने ग्रन्थोंमें हिन्दुस्थानका वर्णन किया था, और उनमेंसे कुछने गंगाके उस पारवाले देशोंका हाल भी लिखा था। यही

यूनानियोंका लिखा हुआ हाल पढ़कर योरपवालोंने हिन्दुस्थान-के विषयमें कुछ ज्ञान प्राप्त किया। यूनानियोंको हिन्दुस्थानका हाल उड़द परकी सफ़ेदीके बराबर भी मालूम न था, पर उन्होंने सुनसुनाकर जो कुछ लिखा था वही योरपवालोंके लिए पथदर्शक था। क्टीशिआ नामक यूनानी लेखकने लिखा था कि हिन्दु-स्थान इतना बड़ा देश है कि बाकी एशिया खण्ड उसीके बराबर है। एक दूसरा यूनानी लेखक इस बातको दावेसे साबित करता था कि हिन्दुस्थान तमाम जमीनके एक तिहाईके बराबर है और प्लिनी नामक तत्त्ववेत्ता इसके मतका समर्थक था। एक लेखकने अपने ग्रन्थमें लिखा था कि हिन्दुस्थानकी एक सिरेसे दूसरे सिरेतक मुसाफिरी करनेमें चार महीने लगेंगे। कई योरपके ग्रन्थकारोंने हिन्दुस्थानके बारेमें ऐसी ही बेसिर-पैरकी सुनी हुई बातों पर किताबें लिखी थीं और उनमें अपने मतको बड़े जोरसे साबित किया था। और भी काथे और सिंपांगो आदि देशोंका उस समय बड़ा आलंकारिक वर्णन हुआ था। पर ये देश कहाँ हैं, कैसे हैं और रास्ता कौनसा है, इसका पता किसीको भी न था। इन्हीं सब बातों पर कोलम्बसने अंदाजा लगाया कि हिन्दुस्थान पूर्वकी ओर जितनी दूर पर होना चाहिए, आफ्रिका खण्डके पश्चिममें भी उतनी ही दूर होना चाहिए और आफ्रिकाके नजदीक जिन नये टापुओंका पता लगा है

शायद हिन्दुस्थान उनसे अधिक दूर न हो। फिर उस जमीनकी गोलाई परसे यह सिद्धान्त निकाला कि यदि सीधी रेखामें बराबर पश्चिमकी ओर जहाज चलाया जाय तो हिन्दुस्थान पहुँचनेका सीधा रास्ता मिलना अधिक सम्भव है। उस समयके प्राचीन पण्डितोंका यह सिद्धांत था कि पूर्वीय महाद्वीपके पश्चिमी देश हिन्दुस्थानके पास ही होने चाहिए। कोलम्बसका सिद्धान्त भी इससे मिल गया, इसलिए लोगोंको विश्वास करनेका एक सहारा मिल गया, क्योंकि बिना पुराने विद्वानोंकी राय मिले नई बातको कोई मानता ही न था। अरस्तू (अरिस्टाटल) का मत था कि जिब्राल्टर सागरके द्वीपोंसे हिन्दुस्थान अधिक दूर न होगा। पर सेनिकाने तो साफ लिख दिया था कि पश्चिमी हवासे थोड़े दिनमें हिन्दुस्थान पहुँचना मुमकिन है। अफ़ला-तून (प्लेटो) ने एटलाण्टिक सागरके जिस द्वीपका वर्णन किया है, उसके विषयमें सेनिकाने लिखा था कि वह स्पेन देशसे अधिक दूर नहीं है। यह भी अंदाजा लगाया था कि उस टापूसे आगे एक बड़ा भारी देश है। उस समयके इन सब पुराने विद्वानोंके मतोंको कोलम्बसने खूब अच्छी तरह समझ लिया था और फिर अपने अनुभव तथा विचारसे अपना मत बनाया था। बुद्धिमान् पुरुषका यही लक्षण है कि वह दूसरोंकी सुनकर अपने सिद्धान्त निश्चित करता है। फिर कोलम्बसका इरादा कोरा सिद्धान्त निश्चित करनेका ही न था,-

उसे अपने निश्चयके अनुसार काम करना था, इसलिए उसने बड़ी बारीकीसे इसकी खोज की। अन्तमें उसने उन लोगोंसे राय ली जो इस विषयके मर्मज्ञ—जानकार थे।

फ्लोरेंस नगरमें एक डाक्टर भूसृष्टिविद्याका विशेष जानकार था। उससे १४७४ ई० में कोलम्बसने अपने मत पर सम्मति माँगी। यह पुरुष बड़ा विद्वान् था, इसने कोलम्बसके विचारोंकी प्रशंसा की और कुछ ऐसी भी बातें बताईं जिनसे कोलम्बसके अनुमानको पुष्टि मिलती थी। ऐसे साहसी काममें हाथ डालनेके लिए डाक्टरने कोलम्बसको और भी अधिक उत्साहित किया।

यदि किसी साहसहीन व्यक्तिको इतने सिद्धान्तोंका पता लगता तो वह अधिकसे अधिक इन्हें एक पुस्तकमें लिख देता, या इन पर एक व्याख्यान दे डालता। पर कोलम्बस जैसा विचारज्ञ था वैसा ही अपने विचारको कार्यरूपमें परिणत करना भी अपना कर्तव्य समझता था। जब उसे विचार और मननके द्वारा यह मालूम होगया कि उसका विचार सच्चा है तब उसकी आजमाइशके लिए वह उत्सुक हो उठा। उस जमानेमें ऐसी खोजें राजाओंकी मददके बिना नहीं हो सकती थीं, इसलिए कोलम्बसने राजाओंकी ओर नजर उठाई। अब तक कोलम्बस विचारके मार्ग पर था, पर अब वह साधनाके मार्गका पथिक बना।

दूसरा अध्याय।

साधनाके मार्ग पर।

"मनस्वी कार्यार्थी गणयति न दुःखं न च सुखम्।"*

अब कोलम्बसको अपनी साधनाका मार्ग तय करनेके लिए राजशक्तिकी आवश्यकता हुई। उसने चारों ओर नजर उठाई। अपनी आयुका अधिक समय विदेशमें बिताने पर भी इस समय उसे स्वदेशकी याद आई। अपनी खोजसे अपने देश और अपनी जातिको गौरवान्वित करना उसने सबसे अच्छा समझा। इसी विचारसे उसने जेनोवा सरकारके सामने अपने सब विचार दलीलोंके साथ पेश किये और साथ ही प्रार्थना की कि मुझे जहाजोंकी, आदमियोंकी और धनकी सहायता मिलनी चाहिए, मैं अपने निश्चित सिद्धान्तोंके अनुसार नये देशकी खोज करने जाऊँगा। पर जेनोवाके प्रजासत्ताक राज्यके लोग आलसी और अभिमानी थे। वे वास्तविक प्रजासत्ताक राज्यके गुणको कुछ भी प्रकट न कर सके। उनका देश समुद्रके किनारे पर अवश्य था, पर वे समुद्र पर लम्बी यात्राके अभ्यासी न थे।

---

*जिन्हें सचमुच कामकी लगन होती है वे मनस्वी पुरुष सुख दुःखकी परवाह नहीं करते।

कोलम्बस अपनी खोजके विषयमें जो दलीलें पेश करता था वे सब उन्हें असम्भव मालूम होती थीं । वे लोग कोलम्बसकी योग्यता और कीमत कुछ भी न जान सके । जेनोवा सरकारने कोलम्बसकी सहायता करनेसे साफ 'नाहीं' कर दी ।

अपने देश और अपनी जातिसे कोलम्बसको जो आशा थी वह जाती रही; पर जेनोवाके दरबारसे निराश होने पर भी वह अपने उद्योगसे निराश नहीं हुआ । बल्कि अब अधिक योग्यता और श्रमसे वह अपनी साधनामें लगा । उसने सोचा कि मेरे जीवनका अधिक समय पोर्च्युगीजोंके राज्यमें बीता है, इसलिए स्वदेशके बाद दूसरा हक मुझसे सेवा करानेका उस राज्यको है । इसी विचारके अनुसार कोलम्बसने पुर्तगालके राजाके पास अपना प्रार्थनापत्र भेजा । उसने कहा कि मैं आपकी और आपके देशकी सेवा करनेके लिए तैयार हूँ । कुछ लक्षण अच्छे देखकर कोलम्बसको यहाँ आशा हुई कि शायद काम पूरा होजाय । वह राजा साहसी, उद्योगी और समुद्री-विद्याका अच्छा जानकार था । इसके अलावा जो नये देशोंकी खोज करनेको तैयार होते थे उनकी वह सहायता भी करता था । उस समय समग्र योरपमें पोर्च्युगीज नाविकोंके समान लम्बी यात्रा निर्भयतापूर्वक और किसी देशके नाविक नहीं कर सकते थे । वे महीनों समुद्र पर गुजार देने पर भी किसी

प्रकार नहीं डरते थे। वहाँके लोगोंसे कोलम्बसकी योग्यता भी छिपी न थी; सब लोग उसे समुद्री विद्याका चतुर जानकार समझते थे। इसीलिए कोलम्बसकी कल्पनाको उन्होंने हवाई-किला समझ कर हँसीमें नहीं उड़ाया। बल्कि उन्होंने कोलम्बसके सिद्धान्तको सच्चा ही माना। इन्हीं सब कारणोंसे पोर्त्युगीज राजाने कोलम्बसकी बात बड़े ध्यानसे सुनी। राजा ऐसी बातोंमें भूसृष्टिविद्याके मर्मज्ञ स्यूटाके बड़े पादरी और दो यहूदी राज-कर्मचारियोंसे सलाह लिया करता था, इसलिए कोलम्बसके सिद्धान्त पर विचार करके अपनी सम्मति देनेका भार भी उन्हीं-को मिला। कोलम्बसकी साधनामें अभी कमी थी, उसका अदृष्ट अभी उसका विरोधी था। जेनोवामें उसे वहाँके लोगोंकी मूर्खतासे निराश होना पड़ा था, पर लिस्बनमें उसे ईर्षा और आग्रहरूपी शत्रुके मारे पीछे हटना पड़ा। जिन तीन विद्वानों पर राजाने कोलम्बसके सिद्धान्तकी जाँचका भार दिया था, वे तीनों पोर्च्युगीजोंके जहाजी विभागके ऊँचे कर्मचारी थे। उन्होंने पहले हिन्दुस्थानके रास्तेके बारेमें राजाको जो सलाह दी थी वह कोलम्बसके निश्चय किये किये हुए मार्गसे बिल्कुल उलटी थी। इसलिए यदि वे कोलम्बसके सिद्धान्तको राजाके पास सच्चा स्वीकार करते तो उन्हें दो बातोंका दुःख होता। एक तो उन्हें यह मानना पड़ता कि हमने पहले जो सलाह दी थी वह ठीक

नहीं थी, दूसरे कोलम्बसको अपनेसे अधिक बुद्धिमान् मानना पड़ता। इसलिए उन तीनों विद्वानोंने पहले तो कोलम्बससे बड़े उल्टे सीधे प्रश्न किये और फिर बहुत दिनतक इसकी कोई चर्चा ही न की। फिर उन्होंने भीतर-ही-भीतर सलाह की कि यदि कोलम्बसका सिद्धान्त सच निकला तो इसकी इज्जत और मान-मर्यादा बढ़ जायगी, इसलिए भीतर-ही-भीतर राजाको सलाह दी कि, 'महाराज, कोलम्बसका निश्चय किया हुआ मार्ग बिल्कुल अनिश्चित है, फिर भी यह जो रास्ता बता रहा है उस रास्तेसे एक जहाज भेज कर हमें चुपचाप पता लगा लेना चाहिए।' राजाने भी नीच मनोवृत्तिसे एक परिश्रमी मनुष्यका यश लूटनेके लिए इस सलाहको माना और चुपचाप एक जहाज कोलम्बसक बताये हुए रास्तेसे भेज दिया। पर जिस नाविकको यह काम सोंपा गया वह न तो कोलम्बसके बराबर बुद्धिमान ही था और न साहसी। उसके जहाजको सामनकी हवा लगी और जमीनका कुछ भी सूराग़ न मिला, उसकी हिम्मत टूट गई और अपने जहाजको वह वापिस लिस्बन लौटा लाया। फिर कोलम्बसकी बुराई होने लगी और लोग कहन लगे कि कोलम्बसका सिद्धान्त तो हवाई किला है।

एक सच्चे मनुष्यके साथ धोखाबाजी करनेसे जैसे उसे बुरा मालूम होता है, वैसे ही इन लोगोंकी बेईमानी पर कोलम्बसको

क्रोध आया। उसने निश्चय कर लिया कि अब मैं इन लोगोंसे किसी प्रकारका सम्पर्क न रक्खूँगा। अपने निश्चयके अनुसार उसने वह देश छोड़ दिया और वह १४८४ ई० के अन्तमें स्पेन देशमें आगया। कोलम्बसमें धैर्य बहुत अधिक था। इस असफलताके कारण उसे निराशाने नहीं घेरा। अब वह और भी अधिक सावधानीसे अपनी साधनामें प्रवृत्त हुआ। उस समय राजा फर्डिनैण्ड और रानी इसाबिल्ला एकत्र राज्य चलाते थे। इन्हींसे अपनी सहायताके लिए प्रार्थना करनेका विचार कोलम्बसने किया। पर अब उसे राजाओं और दरबारोंका यथेष्ट अनुभव मिल चुका था, इसलिए उसे बहुत कम विश्वास था। फिर भी उसने सावधानीसे इस काममें हाथ डाला। अपने भाई बार्थोलोमेयोको उसने इंग्लैंडके राजासे प्रार्थना करने भेजा और आप स्पेनमें रहा। इससे उसने सोचा कि इंग्लैंड और स्पेनमें एक साथ इसकी चर्चा उठाई जाय तो शायद इससे कुछ काम निकले। उस समय इंग्लैंडका राजा सातवाँ हेनरी था। अपने समयके सब राजाओंसे यह बुद्धिमान् और साहसी माना जाता था।

राजा फर्डिनैण्डके विषयमें कोलम्बसको जो सन्देह था, वह बिल्कुल निर्मूल न था। क्योंकि एक तो उस समय ग्रेनाडाके एक राज्यके विषयमें स्पेनवासियों और मुसलमानोंमें

बड़ी लड़ाई चल रही थी, दूसरे राजा फार्डिनैण्ड खुद बहमी और अस्थिरचित्त मनुष्य था। वह अपने आप ही बड़े और जोखमवाले काम अपने सिर लेना पसंद न करता था। हाँ, रानी इसाबिल्लाका स्वभाव राजासे अधिक उदार और साहसी था; पर वह कोई काम अपने स्वामीकी मंशाके खिलाफ नहीं करती थी। इन कठिनाइयोंके अलावा कोलम्बसके रास्तेमें यह भी एक कठिनाई थी कि स्पेननिवासी आलसी और विषयी थे। उनका देश यद्यपि समुद्रके किनारे पर था, पर उन्हें समुद्रयात्राका अधिक अभ्यास न था, इस लिए समुद्री विद्याके वे बहुत ही कम जानकार थे। कोलम्बसके मार्गमें इन सब कठिनाइयोंने बारीबारीसे हमला किया।

कोलम्बसने इन सब कठिनाइयोंको सोच लिया, फिर उसने राजा फर्डिनैण्ड और रानी इसाबिल्लासे अपने सब सिद्धान्त सुनाकर सहायताकी प्रार्थना की। कोलम्बस मध्यम अवस्थाका मनुष्य था। वह गम्भीर प्रकृतिका किन्तु मिलनसार था। थोड़े ही दिनोंमें उसके बहुतसे मित्र बन गये। यद्यपि उस समय स्पेनवालोंसे मुसलमानोंका युद्ध हो रहा था और राजा तथा रानीका ध्यान युद्धके फलाफल पर लग रहा था, फिर भी फर्डिनैण्डने कोलम्बसकी बात ध्यानसे सुनी। और रानीके गुरुको, जो इस विद्याका एक विशेष जानकार

था, यह आज्ञा दी गई कि तुम इस बात पर विचार करके अपनी सम्मति दो। रानीके गुरुने उस समय समुद्री विद्याके जानकारोंसे सलाह ली, पर दुर्भाग्यसे स्पेनदेशवालोंमें इस विद्याकी कोई अच्छी जानकारी ही न रखता था। जिन पुराने और नये मूल सिद्धान्तों पर कोलम्बसने अपना विचार बनाया था, उन्हें समझना उन लोगोंके लिए महा कठिन काम था; फिर सब पर विशेषता यह थी कि बहुतोंकी समझ ही उल्टी थी। अन्तमें उन्होंने ऐसी ऐसी दलीलें पेश कीं कि जहाँ पहुँचनेके लिए कोलम्बस कह रहा है, वहाँ पहुँचनेमें तीन बरससे भी अधिक समय लगेगा। अन्तमें सबने मिलकर यह निश्चय किया कि प्राचीन विद्वानोंके मतानुसार महासमुद्र बहुत बड़ा है। यदि कोलम्बस अपने हठसे उस हदसे आगे जहाज ले जायगा तो फिर वह वापिस न लौट सकेगा। क्योंकि परमेश्वरने पृथ्वीको दो गोलार्द्धोंमें बाँट दिया है। यदि कोलम्बस हठ करके दोनोंको एक करनेका प्रयत्न करेगा तो कुदरती कानूनमें हाथ डालनेके कारण वह अपनी जानसे भी हाथ धो बैठेगा। यह सोचना कि मुझे पृथ्वीके सब मनुष्योंसे अधिक ज्ञान है, अभिमानका लक्षण है। कोलम्बसको चाहिए कि वह अपने मनसे अभिमानको निकालकर ऐसी बात न सोचे। विचार करनेवाली सभाने कोलम्बसके सिद्धान्त पर जो अपनी सम्मति

बनाई वह यही थी। अन्तमें सबने मिलकर कोलम्बसके खिलाफ यह दलील पेश की कि "कोलम्बस जिस एक नई दुनियाके होनेकी गप्प हाँक रहा है, यदि सचमुच वह दुनिया इस पृथ्वी पर होती तो क्या आज तक बेमालूम रहती? और इतने बड़े बड़े ज्ञानी, पण्डित और विद्वान् हुए हैं, क्या वे यह यश कोलम्बसके लिए छोड़ जाते?"

कोलम्बस जैसे विचारज्ञ और मर्मज्ञ मनुष्यको ऐसे "बाबा-वाक्यं प्रमाणम्"वाले मूर्खोंको समझानेमें बहुत सिर खपाना पड़ा, पर फिर भी कुछ न हुआ। कोलम्बसने इन्हें शास्त्रीय सिद्धान्तोंसे बहुत कुछ समझाया, पर मूर्खोंको समझाना पत्थर पर पौधा उगानेके समान था। कई सभायें हुईं जिनमें कोलम्बसने अपने सिद्धान्तको समझानेकी कोशिश की, पर वह उन आलसियों और निरुद्योगियोंको समझानेमें अशक्त रहा। इन मूर्खोंको समझाने और उनकी दिलजमई करनेमें कोल-म्बसको पाँच बरस लग गये, पर कोई फल न हुआ। अन्तमें रानीके गुरुने दरबारमें लिख भेजा कि कोलम्बसका सिद्धान्त पागलपनके सिवाय और कुछ नहीं है। राजाने भी कोलम्बसको एक चिट्ठी लिखी कि मैं मुसलमानोंसे जो लड़ाई हो रही है उसमें उलझा हूँ, इस कारण कोई नया काम अच्छी तरह नहीं देख सकता। प्रकारान्तरसे इसका मतलब इनकार करना ही था।

कोलम्बसका बहुत समय व्यर्थ गया । अपने कार्यका यह परिणाम देख कर वह क्षुब्ध हुआ और उसने राजाके दरबारमें जाना बंद कर दिया। पर अपने विचार पर वह पहले से भी अधिक दृढ था । ऐसी ऊँची कल्पनावाले मनुष्योंमें स्वाभाविक रीतिसे धैर्यकी नदी बहा करती है। कोलम्बसके हृदयमें भी उसका स्रोत निरन्तर भीमवेगसे बहता था। उसने सोचा कि राजाओंसे सहायता माँगनी व्यर्थ है, अब प्रजाके मान्य धनिकों और जागीरदारोंसे सहायता माँगनी चाहिए। इसी विचारके अनुसार उसने मेडिना, सिडोनिया और सिलीके सूबेदारों (डयूक) से सहायता माँगी। पर सबके समान कोलम्बसका सिद्धान्त इनकी भी समझमें नहीं आया, या राजा फार्डिनैण्डके भयसे इन्होंने उसे स्वीकार नहीं किया। और जगहोंके समान यहाँ भी कोलम्बसका प्रयास व्यर्थ गया।

अपने प्रयासमें बार बार असफल होनेसे कोलम्बसको जो दुःख हुआ था उन सब पर यह दुःख विशेष था कि अपने जिस भाईको उसने इंग्लैंडके दरबारमें भेजा था उसकी अब तक कुछ भी खबर न मिली थी। दुर्भाग्यसे कोलम्बसका भाई जब इंग्लैंड जा रहा था तब रास्तेमें लुटेरे डाकुओंसे उसकी भेंट हो गई थी और उन्होंने उसका सर्वस्व लूट कर उसे कैद कर रक्खा था। अन्तमें कई बरसोंके बाद एक दिन वह किसी प्रकार

डाकुओंकी कैदसे निकल भागा और लंडन चला गया। पर उसके पास साफ सुथरे कपड़े भी नहीं थे, जिन्हें पहनकर वह राजाके दरबारमें पहुँचता। अन्तमें कपड़े खरीदनेके लिए उसे नकशे बनाकर बाजारमें कई महीनों तक बेचने पड़े। जब कपड़े बन गये तब कोलम्बसका भाई इंग्लैंडके राजा सातवें हेनरीके दरबारमें गया, और भाईने राजासे जिस बातकी प्रार्थना करनेको कहा था वह सब कह सुनाई। यह राजा बुद्धिमान् और विचारज्ञ था, पर किसी नये कामको अपने सिर लेनेमें हिचक जाता था। फिर भी कोलम्बसकी बात-को इसने ध्यानसे सुना और दूसरे राजाओंकी तरह उसे हवाई मजलिस न समझा।

इधर कोलम्बसको अपने भाईका कुछ भी पता न चला और स्पेन देशसे उसे बिल्कुल निराशा होगई, इसलिए उसने अब स्वयं इंग्लैंड पहुँच कर राजासे अपना सिद्धान्त कह कर सहायताके लिए प्रार्थना करना सोचा। कोलम्बसने इंग्लैण्ड जानेकी सब तैयारी कर ली, अपनी स्त्री और बच्चोंकी देख-भालका इन्तजाम कर दिया। इस ही समय पिरोजो नामक पादरीने कोलम्बससे कहा कि तुम थोड़े दिन इँग्लैंड जानेका खयाल छोड़ दो। यह पादरी कोलम्बसका सहपाठी था। शास्त्रोंमें इसकी अच्छी गति थी और रानी इसाबिल्ला पर

इसका अच्छा प्रभाव था। कोलम्बसको यह साहसी और प्रामाणिक पुरुष समझता था। पिरोजोने कोलम्बसके सिद्धान्तका अपने एक विद्वान् डाक्टरकी सहायतासे खूब विश्लेषण किया। इन परीक्षकोंको मूल सिद्धान्तोंकी भलीभाँति जाँच करनेसे यह निश्चय हुआ कि कोलम्बसका सिद्धान्त सत्य हो सकता है। ऐसा मौका अपने देश और राजाके हाथसे निकल जानेसे वह फिर न मिलेगा और मनुष्यजातिके महान् उपकारके कारण इतिहासमें जो यश होगा वह भी दूसरोंके पल्ले पड़ेगा। इस कार्यमें सहायता देनेसे नाम होगा और साथ ही नये देशों-का पता लगनेसे राज्य भी बढ़ेगा। इन्हीं सब बातों पर विशेष जोर देकर पादरीने रानी इसाबिल्लाको एक मार्मिक पत्र लिखा।

रानी पर इस पत्रका विशेष असर हुआ और उसने पादरी पिरोजोको इस विषय पर बातचीत करनेके लिए बुला भेजा। उस समय स्पेनवालोंने ग्रेनाडा पर घेरा डाल रक्खा था, इस लिए राजकुटुम्ब सेन्टाफे नामक गाँवमें था। पादरी पिरोजोके मिलनेका पहला असर तो यह हुआ कि रानीने कोलम्बसको दरबारमें बुलानेके लिए एक पत्र लिखा और मार्गव्ययके लिए एक छोटी रकम भेजी। उस समय स्पेन-वालोंसे जो मुसलमानोंकी लड़ाई चल रही थी, उसका अन्त होनेहीवाला था और सबको पूरा विश्वास था कि स्पेनवाले

जीतेंगे। जीतके साथ ही यह भी भरोसा था कि स्पेन राज्यमें कुछ नये काम भी शुरू किये जा सकेंगे। एक इस बातसे और दूसरे रानीके पत्रसे कोलम्बसके मित्रोंने उसे भरोसा दिलाया कि इतनी बड़ी मेहनतके बाद अब सफलता होनेकी आशा है। कोलम्बसके दो तीन मित्र ऐसे थे जो हृदयसे उसकी सफलता चाहते थे और उन्होंने उसके लिए मेहनत भी उठाई थी। इतिहासमें उनके नाम भी अमर रहेंगे।

पर राजा फर्डिनैण्डके खयालको फेरना सहज काम न था, वह अब भी कोलम्बसके सिद्धान्तको हवाईकिला समझता था। उसने फिर कोलम्बसके सिद्धान्तकी जाँच करनेके लिए एक कमेटी बनाई और उस कमेटीमें अधिकांश पहलेवाले ही सभासद नियत किये। कोलम्बस फिर सबके सामने अपने सिद्धान्तको उतने ही जोर और दलीलोंसे साबित करने लगा, और जितना इनाम उसने पहले माँगा था उतना ही अब भी माँगने लगा। कोलम्बसके इतने धैर्य और विश्वासको देख कर बहुतोंको आश्चर्य होता था। कोलम्बसने कहा कि इस खोजके लिए कुछ लड़ाईके जहाज मेरे आधीन करने चाहिए जिनमें सामान और आदमी काफी हों, जिन द्वीपों या टापुओंकी मेरे हाथसे खोज हो उनके अधिकारीका ओहदा मुझे वंशपरंपराके लिए मिलना चाहिए और उन देशोंसे जो फायदा हो उसका दसवाँ

हिस्सा मुझे और मेरी औलादको इस सुविधाके साथ मिलता रहे कि जिसमें कभी कोई रुकावट न डाली जा सके। इस खोजमें जो लागत लगे उसका आठवाँ हिस्सा कोलम्बस इस शर्त पर लगानेके लिए तैयार था कि लाभका आठवाँ हिस्सा पीछे उसे मिले। यदि लाभ न हो तो अपनी मेहनतका बदला कोलम्बसने कुछ भी न माँगा। कोलम्बसने यह बात पहली बार भी इतने ही जोरसे कही थी और जब दूसरी बार विचार करनेके लिए सभा बैठी तब भी उसने इसमें एक पैसा भी कम न किया। यदि विचार करनेवाले सभासद बुद्धिमान् होते तो कोलम्बसकी इस बातसे उसके सिद्धान्तकी सचाई पर उनकी आस्था होती और उसके धैर्य और गाम्भीर्य पर आनन्दके साथ उन्हें आश्चर्य होता। पर वे निरे अविचारी और ईर्षालु प्रकृतिके थे। उन्होंने कोलम्बसके सफरका हिसाब लगाना शुरू किया। यद्यपि इस तैयारीमें कोई अधिक खर्च न था; पर सभाने अन्तमें निश्चय करके अपनी सम्मति दी कि इस समय लड़ाईके सबबसे खजाना खाली हो गया है, इस लिए सरकार इस खर्चको बरदाश्त नहीं कर सकती। सभाने दूसरी जो सम्मति दी वह यह थी कि एक तो कोलम्बस अपने कामका जो इनाम चाहता है, वह बहुत अधिक है। दूसरे यदि कोलम्बस अपने काममें सफलता न प्राप्त कर सका तो संसारके सामने स्पेन देशके

राजाको नीचा देखना पड़ेगा और अविचारका काम करनेके कारण उन पर मूर्खताकी तुहमत लगेगी। राजाने सभासदोंकी इस रायको पसंद किया और रानी इसाबिल्ला पर भी इस सम्मतिका बहुत असर हुआ। सबका नतीजा यह हुआ कि कोलम्बससे राजारानीने इस विषय पर बातें करना बिल्कुल ही छोड़ दिया।

अबतककी निराशाओंसे कोलम्बसको जो दुःख हुआ था, उससे भी अधिक दुःख उसे इस बार हुआ। प्रकाशकी एक अनजान किरण आकर जैसे आशाका संचार करती है वैसे ही रानीका पत्र पाकर कोलम्बसके हृदयमें आशा जाग उठी थी। उसे विश्वास हुआ था कि उसके परिश्रममें अब फल लगनेवाला है, पर जब उसे आगे फिर निराशाका काला परदा दीखा तब वह धैर्यशाली मनुष्य भी विचलित हो उठा। उसे यह दुःख सहना बहुत ही कठिन प्रतीत हुआ। दरबारमें आना जाना उसने छोड़ दिया। अन्तमें उसने निश्चय किया कि एक वार इंग्लैंड जाकर अपने भाग्यकी और एक परीक्षा करूँगा।

इस समय स्पेनवालोंके साथ जो मुसलमानोंका युद्ध चल रहा था वह समाप्त होगया और ग्रेनाडा प्रान्त स्पेनवालोंके हाथ आगया। राजा फर्डिनैण्ड और रानी इसाबिल्लाने बड़ी धूमधामसे नगरप्रवेश किया। विजयके आनन्दसे प्रजा और

राजारानी प्रफुल्लित होउठे। इस हर्षके अवसरको कोलम्बसके मित्र केवण्टानिल्ला और सेण्टाजेलने व्यर्थ न जाने दिया। इस खुशीके मौके पर उन्होंने रानीसे कोलम्बसके लिए प्रार्थना की कि रानी साहिबा, आप सदैवसे देश और राज्यके हितकारी कामोंको आश्रय देती आई हैं। आज तक नये देशोंका पता लगानेके लिए किसीने भी राज्यसे मदद नहीं माँगी—फिर आश्चर्यकी बात है कि आप नये देशोंका पता लगानेमें कोलम्बसको सहायता देनेके लिए आनाकानी कर रही हैं। कोलम्बस बड़े गम्भीर विचारोंवाला विद्वान् पुरुष है—वह समुद्री विद्याका जैसा जानकार है वैसा आज स्पेनदेशमें कोई भी नहीं है। वह भूमितिशास्त्र जानता है और पृथ्वीके महत्त्वका भी उसे विशेष ज्ञान है। वह अपने विचारकी आजमाइशके लिए, अपने धन और प्राणोंको आपत्तिमें डालनेके लिए तैयार है, इससे साफ मालूम होता है कि वह कितना साहसी और प्रामाणिक मनुष्य है। वह अपने साथ जितने जहाज माँगता है उनका खर्च भी कुछ अधिक नहीं है। यदि उसकी विद्या, बुद्धि और मेहनतसे नये देशोंका पता लग गया तो राज्य कितना बढ़ जायगा और धन कितना आवेगा! उस बड़े भारी फायदेके सामने वह जो दसवाँ हिस्सा माँगता है वह तो कुछ भी नहीं है। इसके अलावा वह अपनी मेहनतका बदला

कुछ भी नहीं चाहता । इससे आपका नाम इतिहासमें अमर हो जायगा, क्योंकि आपकी सहायतासे कोलम्बस ऐसे देशका पता लगावेगा जिसे आज तक कोई नहीं जानता है । साथ ही वहाँ ईसाई धर्मके प्रचार होनेसे आपकी धार्मिक आत्माको बहुत ही शान्ति होगी । यदि आप इस अवसरको जाने देंगी तो फिर ऐसा अच्छा मौका कभी न मिलेगा; क्योंकि अब कोलम्बस विदेश जा रहा है । यदि वहाँ कोई आपसे अधिक धनी और साहसी राजा कोलम्बसकी बात मान कर उसकी सहायता करेगा तो फिर न आपको यह यश मिलेगा और न फायदा ।

ऐसी अच्छी दलीलोंसे कोलम्बसके दोनों मान्य मित्रोंने रानी-को समझाया और उनका समझाना व्यर्थ भी न गया । रानीन कोलम्बसको पत्र लिखकर फिर वापिस बुलाया । रानीकी जो शंकायें थीं वे दूर हो गई थीं, इस लिए उसने कहा कि यद्यपि मुझे मेरी आमदनीके कम होनेका दुःख है, पर फिर भी मैं कोलम्बसकी सहायता करूगी । कोलम्बसकी तैयारीमें जितना धन लगेगा वह मैं अपने गहने और जवाहरात गिरवी रखकर पूरा करूँगी । रानीके मुँहसे ऐसी उदारताके शब्द सुनकर सेण्टाजेलने बड़ी ही कृतज्ञता प्रकट की, साथ ही कहा कि, गहने या जवाहर गिरवी रखनेकी जरूरत नहीं है, आपके लिए

धनकी कमी नहीं है, जितना धन लगेगा उसके एकत्र करनेका काम मैं खुद करूँगा।

कोलम्बसने स्पेन छोड़ कर इंग्लैंडकी यात्रा करनी शुरू कर दी थी। वह बहुत दूर चला गया था, रास्तेमें उसे रानी इसाबिल्लाका दूत पत्र लेकर मिला। कोलम्बसने रानीकी सहायताकी आशा बिल्कुल छोड़ दी थी, अब उसीका सहायता करनेका पत्र पढ़ कर फिर उसे चिन्ता हुई, उसके मनमें रानीकी सहायता करनेकी बात एकदम जमी नहीं। पर वापिस आने पर जितनी इज्जत और मानमर्यादाके साथ रानी उससे मिली उससे उसे भरोसा होगया कि जिस स्पेन देशमें वह आठ बरस तक निराशाके साथ भटकता रहा वहीं अन्तमें उसकी आशा सफल होगी। बार बार निराश होनेके बाद अन्तमें कोलम्बसकी आशा सफल हुई। अनेक असफलताओंके अनन्तर सफलता देवीकी मन्द मुसक्यान उसने देखी। सन् १४९२ ई० के एप्रिल मासकी १७ वीं तारीखको कोलम्बसके लिए राजा फार्डिनैण्ड और रानी इसाबिल्लाने नीचे लिखा इकरारनामा लिखा और उस पर अपनी मुहर और दस्तखत किये:—

(१) हम राजा फर्डिनैण्ड और रानी इसाबिल्ला महासागर पर अपने आधिपत्यसे कोलम्बसको उन टापुओं, खण्डों और प्रदेशोंका प्रतिनिधित्व प्रदान करते हैं जिनका वह

अपनी विद्याबुद्धिसे शोध करे । हमारे अन्य प्रतिनिधियों और नौसेनाधिपतियोंको जितने अधिकार हैं, उतने सब अधिकार हम कोलम्बस और उसके वंशानुयायियोंको सदा सर्वदाके लिए प्रदान करते हैं ।

(२) जिन टापुओं, खण्डों और देशोंका कोलम्बस पता लगावे उनका हम इस आज्ञापत्रके द्वारा उसे वंशपरम्पराके लिए प्रतिनिधि बनाते हैं और स्पेन देशमें हमारे प्रतिनिधिके समान उसकी इज्जत सदैव बनी रहेगी । पर यदि किसी देश-में अन्य प्रतिनिधियोंकी आवश्यकता हो तो कोलम्बसके पसंद किये हुए तीन पुरुषोंमेंसे एक प्रतिनिधि चुना जायगा ।

(३) जिन देशोंको कोलम्बस खोज निकालेगा उनके व्यापारिक और राज्यसम्बन्धी लाभोंमेंसे एक दशांश उसके वारिसोंको वंशपरंपरा तक हम देंगे ।

(४) कोलम्बसके पता लगाये हुए देशोंमें यदि कोई व्यापारिक झगड़ा उठ खड़ा हो तो उसका फैसला कोलम्बस या उसका निश्चित किया हुआ न्यायाधीश करेगा ।

(५) इस सफरमें जो कुछ खर्च होगा उसका आठवाँ हिस्सा कोलम्बस देनेको कहता है, इसे हम मंजूर करते हैं और साथ ही हमें यह भी स्वीकार है कि इस यात्रासे जो लाभ होगा उसका आठवाँ हिस्सा हम उसे देंगे ।

कोलम्बस अपने विचारकी साधनामें बहुत वर्ष लगा रहा। कई बार निराशाकी भीषणमूर्ति देखनेके बाद उसने सफलता देवीकी मधुर हँसी देखी। जब राजा रानीने स्वीकारपत्र पर अपने हस्ताक्षर कर दिये तब उसे विश्वास हुआ। अब वह अपने दुःख भूल गया। उधर रानीने यात्राकी तयारी पर बहुत ध्यान दिया, इसलिए झटपट सामान भी तैयार होगया। मई मासकी बारहवीं तारीख तक सब कुछ तैयारी शेष होगई। अब राजा रानीकी अन्तिम आज्ञा पानेके लिए कोलम्बस दरबारमें गया। एण्डोलुशिआ प्रान्तके पालेस नामक बंदर पर कोलम्बसके लिए जहाज़ तैयार कराये गये थे। जहाजोंके चलाने और उनकी गति निर्द्धार करनेकी पूरी आजादी कोलम्बसको दी गई थी। पर उसे यह आज्ञा भी दी गई थी कि वह उन स्थानों या टापुओंके नजदीक न जाय जिन्हें पोर्च्युगीज लोगोंने खोज निकाले हैं। जिस बदर पर कोलम्बसके जहाज तैयार हुए थे उसके पास ही पादरी पिरोजोका स्थान था—उसके कारण वहाँके लोग कोलम्बसको बड़ी श्रद्धाकी दृष्टिसे देखने लगे थे। यात्राके लिए कोलम्बसको जो आठवाँ हिस्सा देना था वह द्रव्य भी यहींके लोगोंने उसके पास जुटा दिया था। इसके अलावा वहाँके कई आदमी कोलम्बसके साथ यात्राके लिए भी तैयार हुए थे। जितने आदमी कोलम्बसके साथ केवल नये देश देखनेके लिए जानेको तैयार हुए थे उनमें तीन भाई पिनज़ोन

उल्लेख करने योग्य हैं। ये बहुत धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति थे तथा जहाजी विद्याके अच्छे जानकार थे।

रानी और कोलम्बसने इतनी अधिक मेहनत की, फिर भी यात्रियोंके साथ जानेवाली जो सेना तैयार हुई वह ऐसी मजबूत और गठी हुई न थी। तीन फौजी जहाज थे और उनमें सबसे बडा जहाज ऐसा था कि वह अधिक बोझा नहीं लाद सकता था। इस जहाजका कप्तान खुद कोलम्बस था और उसने इसका नाम कुमारी मरियमके नाम पर सेंट मेरिया रक्खा था। दूसरेका कप्तान पिनजोन बना और उसका नाम येंटा रक्खा गया। तीसरे जहाजका नाम नीन्या रहा और उसका कप्तान विसेंट यांजे पिनजोन बना। बाकी दोनों जहाज भी हलके ही थे और अधिक बोझ उठाने योग्य न थे। इन नगण्य तीन जहाजोंको नौसेना शब्द नहीं फबता, इस पर उनमें सिर्फ एक वर्षकी खुराक भरी थी। रानीने कुछ दरबारियोंको भी कोलम्बसके साथ कर दिया था। कुछ लोग यात्राकी सैर देखनेके लिए अपने आपही कोलम्बसके साथ हो लिये थे तथा बाकी खलासी और सिपाही थे। सब मिला कर नब्बेसे कुछ अधिक थे। जिस कामको बड़े खर्चका काम कह कर स्पेनके दरबारने अब तक टालमटोलकी थी उसमें केवल चालीस हजार रुपये लगे।

पन्द्रहवीं शताब्दीमें जहाज बनानेमें इतनी तरक्की न हुई थी। लोग बहुत ही थोड़ा सफर करते थे, इसलिए लंबी सफर-

के लायक जहाज न थे। समुद्रोंका विशेष ज्ञान न था, इस-लिए नकशे भी नहीं थे। अनजान समुद्रोंमें कैसी विपत्तियाँ आया करती हैं इसका किसीको अनुभव न था। इतना सब कुछ होते हुए भी अनजान सुदूर देशोंको खोजनेके लिए ऐसे हलके जहाज लेकर चल देना कोलम्बस जैसे विकट साहसी पुरुषका ही काम था। यदि कोलम्बसकी जगह और कोई जरा भी कम योग्यतावाला व्यक्ति होता तो वह ऐसे नगण्य सामान पर ऐसा सर्वथा अपरिचित और जोखमभरा काम अपने सिर कदापि न लेता;—किन्तु कोलम्बसने यात्राकी तैयारीमें मन लगा दिया और उधरसे रानीने भी यात्राकी तैयारीमें खूब ध्यान दिया, इसलिए यह बेड़ा झटपट तैयार होगया। कोलम्बस इतना साहसी था पर वह धर्मभीरु था। इस बड़ी यात्राको प्रारंभ करनेसे पहले उसने प्रकटमें जगन्नेताकी प्रार्थना करना इष्ट समझा। इसके लिए कोलम्बस अपने सब प्रवासी बन्धुओंके साथ रेसिडाके मठमें प्रार्थनाके लिए गया। वहाँ सबने मुक्त कंठसे अपने अपने पापोंकी आलोचना करके आत्माको पवित्र किया, फिर पादरी सहित सबने मिलकर इस अद्वितीय कामके पूरे होनेकी परमात्मासे प्रार्थना की। आत्मा परसे मानों एक घना बोझा खसपड़ा और सब अपनी यात्रामें तल्लीन होगये। कोल-म्बस अपने साधनामार्गको सफलताके साथ पार कर चुका। अब आगे उसने कर्ममय मार्गमें प्रवेश किया।

तीसरा अध्याय ।

कोलम्बसका कर्ममय मार्ग ।

"या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी"*

कठिन साधनामें उत्तीर्ण होकर कर्ममय मार्गमें प्रवेश करनेका महत्त्व वे ही व्यक्ति जान सकते हैं जिन्हें इसका थोड़ा-बहुत अनुभव हुआ हो। कोलम्बस आपत्तिमें दुखी और निराश होनेवाला व्यक्ति न था, इसी लिए इस समय सफलताकी हँसी भी उसके ओठों पर नहीं आई। जो हृदय दृढ होता है वह जैसे आपत्तिमें पिघलता नहीं वैसे ही बड़े सुखमें डूब भी नहीं सकता। दूसरे दिन ३ अगस्त, सन् १४९२ ई० शुक्रवारके दिन समुद्रके किनारे पर बहुत भीड़ इकट्ठी हुई। सूर्योदयके समय सबकी जयध्वनिके साथ कोलम्बसने जहाजोंको खोल देनेकी आज्ञा दे दी। लोग कोलम्बसको बिदा करनेमें बड़े प्रसन्न दिखाई देते थे और सबकी आन्तरिक इच्छा भी यही थी कि कोलम्बसके हाथसे किसी नये देशका शोध हो, पर उन्हें उम्मीद कम ही थी। सबने मिलकर इस यात्राकी मंगलकामनाके लिए ईश्वरसे प्रार्थना की।

---

* रात्रिमें जब सम्पूर्ण प्राणी आरामसे सोते हैं, तब संयमी पुरुष जागता रहता है—अर्थात् जिसे सब लोग व्यर्थ समझते हैं, उसे ही संयमी अपने लाभका साधन बना लेते हैं।

कोलम्बसने जहाजोंको सीधे कानेरी टापुओंकी ओर हँकवाया । वहाँ पहुचते ही एक छोटीसी घटना हो गई, जिससे उस बेड़के मनुष्योंकी बुद्धिका पता लगता है । पेंटा जहाजका मस्तूल हवासे टूट गया । इस बातसे मूर्ख मल्लाह या खलासी बहुत ही चिन्तित हुए और उन्हें विश्वास हो गया कि यह काम पूरा न होगा, तथा इसी बातकी यह ईश्वरकी ओरसे सूचना हुई है । कोलम्बसने उन्हें समझाबुझाकर काममें लगाया । इस छोटेसे रास्तेको पार करनेहीमें जहाजोंमें पानी आने लगा था । कानेरी टापुओंमें इसे ठीक करके सितम्बरकी ६ तारीखको वहाँसे यह बेड़ा चल पड़ा ।

वास्तवमें कोलम्बसकी बड़ी यात्राका प्रारम्भ यहींसे समझना चाहिए । क्योंकि उस समय तक पश्चिम दिशाकी ओर जितनी दूर जहाज ले जाये जाते थे, अब कोलम्बसका बेड़ा उस हदसे आगे बढ़ा । अब कोलम्बसने जिस अज्ञात समुद्र पर यात्रा करना शुरू की उस पर पहले कभी मनुष्यप्राणीके चरण नहीं पड़े थे । पहले दिन हवा कम थी इस लिए जहाज थोड़ी दूर जा सके, दूसरे दिन हवा तेज हुई और कानेरी टापुओंका दीखना बंद हो गया । केवल नीचे अनजान और अथाह समुद्र और ऊपर अनन्त नीला आकाश रह गया । खलासियोंको विश्वास था कि यह यात्रा बड़ी भयानक है, इस लिए वे सिर और छाती कूट

कूट कर रोने लगे—मानों वे इस बातको प्रत्यक्ष देख रहे थे कि अब जमीन देखनी उनके भाग्यमें नहीं है। कोलम्बस उन्हें धीरज देने लगा कि हमारा काम जरूर पूरा होगा और धन तथा यश दोनों ही हमें प्राप्त होंगे। अब तक कोलम्बस विचार और साधनाके मार्ग पर था, पर अब उसे कर्मके कठिन मार्ग पर चलना पड़ा। समय जैसी रुख बदलता था वह अपनी सुतीक्ष्ण बुद्धिसे उसे वैसे ही परखता था। उसने अपने हृदयमें इस बातको लिख लिया कि मेरे साथ असहिष्णु और भीरु मनुष्य अधिक हैं। मैंने जिस बड़ी जिम्मेदारीको अपने सिर लिया है उसे पूरी करनेके लिए मुझे निरन्तर सावधान रहनेकी आवश्यकता है। सम्भव है कि मेरे अज्ञानी साथी भयकी दशामें मुझे ही हानि पहुँचानेको तैयार हो जायँ। फिर उसने सोचा कि जिस बड़ी खोजके लिए मैं चला हूँ उसमें केवल उत्कृष्ट जहाजी विद्या और असीम धैर्यकी ही आवश्यकता नहीं है, उन विद्याओंके उत्कृष्ट ज्ञानके साथ ही साथ लोगोंके मनोंको अपनी ओर झुका लेनेके ज्ञानकी भी जरूरत है। आविष्कारक मस्तिष्कमें कल्पनाशक्तिका अभाव नहीं होता, इसीके कारण वह बहुतसी आपत्तियों-विपत्तियोंको पार कर जाता है। कोलम्बसमें भी यह गुण था। वह थोड़ी ही देरमें मनुष्यको देखकर और उसकी बातें सुनकर उसकी आदत समझ लेता

था। उसकी बातचीत दूसरोंके चित्तोंको प्रसन्न करनेवाली होती थी। अपने निश्चित काममें वह बाधाओं और विघ्नोंसे पीछे न हटता था। उसने अपने काम, क्रोध और लोभको अपने वशमें कर रक्खा था और दूसरेकी मनोवृत्तिको अपनी ओर झुकानेमें वह सदैव कृतकार्य होता था। इन्हीं गुणोंके कारण वह नेता पदके सर्वथा योग्य और आपत्तिके समय विश्वास करनेलायक था। कोलम्बसको जहाजी विद्याका तीस वर्षका अनुभव था और पोर्च्युगीज लोगोंने इस विद्यामें जो जो नये आविष्कार किये थे उन सबका ज्ञान उसे भलीभाँति था। स्पेनदेशीय नाविक जो केवल भूमध्यसागरके छोर तक आते जाते थे और जिन्हें समुद्री ज्ञान बहुत ही कम था, कोलम्बसके विशाल समुद्री ज्ञानको देखकर विस्मित और नत हुए। अब कोलम्बसका बेड़ा अनजान समुद्रमें चला जा रहा था। कोलम्बस रात दीन कम्पास और दूरबीन आदि यंत्र लिये जहाजके आगेवाले हिस्से पर खड़ा रहता था और दिशा, जहाजकी गति, समुद्र और ऋतु तथा समुद्री वायुकी जाँच किया करता था। रातदिनमें वह कुछ ही घंटे सोता था और बाकी सब समय उसे ईसी परीक्षामें लगाना पड़ता था। पोर्च्युगीज आविष्कारकोंके समान वह पानीकी धारा पर जियादा ध्यान देता था। पक्षी किस ओर उड़कर जाते हैं और मछलियाँ किस किस किस्मकी देखनेमें आती

हैं इसे वह बड़े ध्यानसे देखता था। पानीके ऊपर तैरती हुई लकड़ियों और टहनियोंको वह विशेष रूपसे देखता था और अपनी यात्रा-पुस्तकमें सब कुछ पूरे विवरणके साथ लिख लेता था। कोलम्बसने सोचा कि खलासियोंको लम्बी समुद्रयात्रा करनेका अभ्यास नहीं है और साथ ही उनमें धैर्य भी नहीं है, इसलिए यदि ये सुनेंगे कि हम बहुत दूर आगये तो घबरा उठेंगे। इसी आशयसे कोलम्बसने उनसे यात्राकी दूरी बहुत कुछ छिपाई। दूसरे दिन उनके जहाज चौवन मील गये, पर कोलम्बसने कहा कि आज पैंतीस मील आये हैं। उसने सम्पूर्ण यात्रामें इसही प्रकार खलासियोंको कम सफर बताई। सितम्बर मासकी १४वीं तारीख तक कोलम्बसका बेड़ा कानेरी टापुओंसे ६०० मील दूर चला गया। उस समय तक स्पेन देशका कोई नाविक इतनी दूर न गया था। यहाँ पहुँच कर एक बड़े ही आश्चर्य और चमत्कारकी बात हुई और स्वयं कोलम्बस भी उसे न समझ सका। दिशादर्शक यंत्र (कुतुबनुमा) का काँटा उत्तरके अक्षर पर मुँह किये था, पर वे इस स्थानसे जैसे ही आगे बढ़े वैसे ही वह पश्चिमके अक्षरकी ओर झुकने लगा और जैसे जैसे आगे बढ़े वैसे ही वैसे काँटा पश्चिमकी ओर झुकने लगा। दिशायंत्रमें यह लौट फेर किसी अज्ञात पृथ्वीकी शक्तिसे होता है, पर इसका ठीक निर्णय अब तक

नहीं हो सका। पर आजकल यह बात नई नहीं जान पड़ती। संसारमें सबसे पहले कोलम्बसको ही इस आश्चर्यका सामना करना पड़ा। उसके साथके आदमी यह चमत्कार देखकर बहुत ही डरे। वे ऐसे महासागरके बीचमें पहुँच चुके थे जहाँ पहले कोई आदमी गया ही न था; उन्हें मालूम होने लगा कि विश्वके कुदरती नियमोंमें भी लौटफेर हो गया और जिस दिशा-दर्शक पर सबसे अधिक भरोसा था वह भी अब धोखा देने लगा। कोलम्बस खुद इस बातको नहीं समझा था, पर साथि-योंको धीरज बँधाना जरूरी था, इसलिए उसने अपनी कल्पनासे झट एक सिद्धान्त गढ़ डाला और उससे उनका समाधान कर दिया।

कानेरी टापू जिस अक्षांशमें थे उससे ठीक पश्चिम अक्षां-शमें ही उसने अपने जहाज अब भी हँकवाये। अब जहाजोंको पूर्वी हवा लगने लगी। यह हवा उष्ण कटिबंध और इसके दक्षिणोत्तर अयनवृत्तसे कुछ अंश तक समानरूपसे बहती है। इस एकसार और अनुकूल वायुसे जहाज ऐसी समान गतिसे चले कि विशेष कुछ भी श्रम न जान पड़ा। जब वे कानेरी टापुओंसे १२०० मीलकी दूरी पर निकल गये, तब समुद्रमें बहुत अधिक वनस्पतियाँ दिखाई देने लगीं। यह देख यात्रियोंको भय और चिन्ता होने लगी। खलासियोंने समझा

कि जहाँ तक जहाज समुद्रमें आ सकते थे वहाँ तक हम आ गये, अब आगे जाना कुदरतके नियममें दखल देना है। पानी पर तैरती हुई वनस्पतियोंको देख कर उन्होंने समझा कि यहाँ कहीं जमीन बहुत ऊँची होगी और उसीपरकी ये वनस्पतियाँ हैं। कोलम्बस उन्हें समझाने लगा कि यह देख कर तुम्हें खुश होना चाहिए, क्योंकि अब किनारा बहुत दूर नहीं है। हवा भी अनुकूल हुई और जहाज सीधे पश्चिमकी ओर जाने लगे। यहीं उन्होंने देखा कि पक्षी उड़ कर पश्चिम की ओर जा रहे हैं। इन बातोंसे जिन खलासियोंने बिलकुल हिम्मत छोड़ दी थी, उनमें भी कुछ हिम्मत आगई।

पहली अक्टूबरको हिसाब लगाने पर कोलम्बसको मालूम हुआ कि जहाज कानेरी टापुओंसे २३१० मील दूर आ चुके। यदि खलासी इस संख्याको सुन पाते तो वे किसी प्रकार भी धीरज न धर सकते, इसलिए कोलम्बसने उनसे कहा कि अभी हम १७५२ मील आये हैं। कोलम्बसके सौभाग्यसे जहाजमें ऐसा कोई गणितका जानकर न था जो कोलम्बसकी गलती पकड़ लेता। इस बेड़ेको इस अज्ञात समुद्रमें चलते हुए तीन सप्ताह हो चुके थे। पहले जो पक्षियोंके उड़ने और पानी पर वनस्पतिके देखनेसे अंदाजा लगाया था कि किनारा नजदीक ही होगा—वह अंदाजा आगे बढ़ने पर बेजड़ जान पड़ा। अब

खलासियोंको मालूम होने लगा कि कोलम्बस हमें बातों और आशाओंमें भुलाकर मौतके पेटमें लिये जा रहा है। इस बड़े भारी समुद्रमें हम यदि एक वर्ष भी इसी तरह चलते रहेंगे तब भी किनारा नहीं मिलेगा। उन्होंने सोचा कि जिस कामको हम निकले हैं वह कभी पूरा नहीं होगा। वे अनन्त महासागर पर अनन्त आकाशके नीचे बैठे हुए रातदिन यही सोचा करते थे। उनका मन बार बार झुँझला उठता था। पहले तो मूर्खों और कम हिम्मतवालोंमें यह खयाल पैदा हुआ, पर जब दिन पर दिन बीतने लगे और किनारेकी कोई सूरत नजर न आई, तब ज्ञानियों और हिम्मतवालोंकी भी हिम्मत जाती रही। पहले तो सब लोग अपने आपसमें ही इस बात-की फुसफुस कर लेते थे, पर अब वे खुलकर कोलम्बसके सामने ही उसका विरोध करने लगे। सब लोग कहने लगे, रानीने इस दरिद्र परदेशीकी बात मानकर अपने इतने आदमियोंकी जान कालके गालमें व्यर्थ ही डाल दी। यह कह कर वे रानी इसाबिल्ला पर सब दोष थोपने लगे। आपसमें वे सब कहने लगे कि हम सब बिलकुल अनजान समुद्रमें इतनी दूर तक आगये हैं। जो कुछ करना चाहिए था वह हम कर चुके हैं। अब यदि इस अवि-चारी कोलम्बसकी इच्छाके अनुसार चलनेसे सबका नाश हो तो हमें इसका कहना न मानना चाहिए। सबने आपसमें कहा कि जहाज

बहुत ही कमजोर हैं। अब हमें वापिस स्पेन लौट चलना चाहिए। जो और भी जियादा डरपोक थे वे कहने लगे कि अब तक तो पीठकी हवा लगी, इसलिए जहाज जल्दीसे इस ओर चले आये; पर वापिस लौटनेमें हवाके सामने चलना पड़ेगा, इसलिए वापिस स्पेन देश पहुँचना भी महा कठिन काम है। सबने सलाह की कि जिससे सबकी जान बचे वह काम करना चाहिए और कोलम्बस यदि इस बातको राजीसे न माने तो उससे जबर्दस्ती मनवाना चाहिए। उनमेंसे कई अविचारी लोगोंका तो यहाँ तक विचार हुआ कि कोलम्बसको उठा कर समुद्रमें फेंक दिया जाय और सब वापिस स्पेन लौट चलें। स्पेनवालोंको जब तो यहाँ तक मालूम होगा कि कोलम्बसका सिद्धान्त हवाई किला था, तब उसके बारेमें वे अधिक पूछताछ न करेंगे।

कोलम्बसने सोचा कि अपने मूर्ख और डरपोक साथियोंके कारण मुझ पर बड़ी विपत्ति आनेवाली है। खलासियोंने अपनी मूर्खता और भयके कारण कोलम्बसका दबाव मानना छोड़ दिया, यह देखकर कोलम्बसको बहुत दुःख हुआ, पर वह पहलेहीके समान ऐसा बर्ताव करता रहा, मानों सब बातोंसे बिलकुल अनजान है। इन लोगोंकी मूर्खता सोचकर उसके मनमें दुःख और चिन्ता हुई, पर इस भावको दबाकर उसने अपनी सूरत ऐसी बनाई मानों इतनी दूर आजानेसे वह बहुत

ही प्रसन्न और हर्षित है और अपना काम पूरा होनेकी उसे पक्की उम्मीद है। इसके अलावा सबका जी बहलानेके लिए उसने कई तरहके खेल और मनोरंजनकी अन्य युक्तियाँ निकालीं। जब कभी बातें चलतीं तब वह इस बातको बड़े आनन्दसे कहता कि नये देशोंसे तुम्हें कितना सोना मिलेगा और वापिस लौटने पर लोग तुम्हारी कितनी इज्जत और तारीफ करेंगे। बहुत बार वह मालिकके नाते उन्हें धमका भी देता और कहता कि जिस बड़े भारी कामसे स्पेन देशका सिर संसारमें ऊँचा होगा और अनन्तशक्तिशाली परमात्माकी महिमा प्रकट होगी, उस काममें यदि तुम बाधक बनोगे तो स्पेन सरकारसे मैं तुम्हारे लिए कठोर दंड दिलवाऊँगा। जो लोग कोलम्बसके खिलाफ विप्लव करनेके नेता बने थे वे इस शाम-दाममयी नीतिसे झुक गये और सबने और आगे चलना स्वीकार किया।

अब वे जैसे जैसे आगे बढ़ने लगे वैसे ही वैसे निकट ही जमीन होनेके अधिकाधिक चिह्न मिलने लगे, इसके साथ ही उनकी आशा भी बढ़ चली। पक्षियोंके झुंडके झुंड नैर्ऋत्य कोणकी ओर जाते हुए दीखे। पोर्च्युगीज लोगोंने कई टापुओंका पता केवल पक्षियोंके उड़नेके ही कारण लगाया था, इसलिए कोलम्बसने भी अपने जहाजोंका रुख उस ही ओर कर दिया, जिधर पक्षी उड़ कर जाते थे। बहुत दिन तक जहाज इसी

नये रास्ते पर चले, पर कुछ फल न हुआ। एक महीना होगया, पर नीचे अनन्त समुद्र और ऊपर अनन्त आकाशके सिवाय कुछ भी न दिखाई दिया। लोगोंको जो थोड़ी बहुत आशा हुई थी वह भी जाती रही और सब पहलेसे अधिक अधीर हो उठे। सब मौतके डरसे मुरझाये हुए और क्रोधसे पागल बन गये। इस हालतमें उनमें नौकरपनका डर भी न रहा। जो जहाजोंके अधिकारी अब तक कोलम्बसकी आज्ञा मान कर चलते थे, वे ही कोलम्बसके खिलाफ लोगोंके मुखिया बन गये। सब जहाज पर इकट्ठे होकर तरह तरहकी बातें करने लगे और सबने कोलम्बससे कहा कि अब जहाजोंको योरपकी ओर फेरना चाहिए। कोलम्बसना सोचा कि जितनी तरकीबोंसे मैं इनका मन फेर सकता था वे सब मैंने पजोख लीं अब वे इन पर न चलेंगी; फिर मृत्युके भयके कारण जिन लोगोंका हिताहित ज्ञान लोप होजाता है उनमें शुभ कामको पूरा करनेका हौसला पैदा करना भी अशक्य है। ये सब लोग मिलकर जो मेरी विरुद्धता कर रहे हैं, वह वैसे डर दिखाने या धमकानेसे नहीं जा सकती। क्योंकि ये लोग क्रोधमें भर गये हैं। अब आज्ञाका असर इन पर न होगा। निदान कोलम्बसने उनसे कहा कि तुम केवल तीन दिन तक और मेरा कहना मान कर आगे बढ़े चलो; यदि इस अवसरमें

किनारा होनेका कोई पक्का सुबूत न मिले तो मैं तुम्हें वापिस लौट चलनेकी आज्ञा दूँगा। यद्यपि सबको वापिस लौटने-की बड़ी जल्दी थी, पर सबने तीन दिन तक कोलम्बसके कथनानुसार काम करना स्वीकार किया। कोलम्बसको बहुतसे निशान ऐसे देख पड़े थे जिनसे उसे पक्का भरोसा हो गया था कि किनारा नजदीक ही है, इसीलिए उसने इतनी थोड़ी अवधि स्वीकार कराई। पक्षियोंके झुंडके झुंड आसमानमें उड़ते हुए दीखने लगे। उनमें ऐसे भी बहुतसे पक्षी थे जो किनारेसे जियादा दूर उड़कर समुद्रमें नहीं जाते। पेंटा जहाजवालोंने आदमीके हाथकी खोदी हुई एक किश्तीनुमा लकड़ी देखी। नीन्या जहाज-वालोंने एक ताजी कटी हुई टहनी बहती देखी जिसे उन्होंने पानीसे उठा ली। उसमें लाल लाल ताजे फल लगे थे जिससे माल्हम होता था कि वह किसी पासके किनारेसे बह कर आई है। सूरजके चारों ओर नई तरहके बादल दीखने लगे, हवा पहलेसे अधिक स्थिर और गरम माल्हम होने लगी, रातके समय हवा बड़ी अस्थिरताके साथ बदलने लगी। इन्हीं सब कारणोंसे कोलम्बसको विश्वास होगया कि किनारा नज-दीक ही है। अन्तमें किनारेके सब लक्षण साफ ही दीखने लगे। तारीख ११ वीं अक्टूबरकी शामको अपने कामकी सिद्धि देखकर सबने एक स्वरसे परमेश्वरकी प्रार्थना की।

कोलम्बसने रात भर जहाजोंको बड़ी होशियारीके साथ आगे बढ़ाया जिससे वे किनारे पर चढ़नेसे बचे। इस रातको उत्साह, आनन्द और हर्षके मारे किसीने भी आँखें न मीचीं और सब लोग पश्चिमकी ओर मुँह किये देखते रहे। जिस जमीनकी खोजमें वे हजारों मील समुद्रमें महीनोंसे बाधा विघ्नोंको हटाते हुए आ रहे थे आज उन्हें उसी जमीनके दर्शन होने थे।

कोलम्बस दूरबीन लिये हुये जहाजके अगले भाग पर सावधानीसे सब कुछ देख रहा था। जब आधी रातसे कुछ अधिक समय बीता उस समय उसने एक चिरागकी रोशनी देखी। रानीको पोशाक पहरानेवाला नौकर भी इस यात्रामें आया था, कोलम्बसने वह चिराग उसे दिखाया। उस दीपकको इन लोगोंने ऐसी हालतमें देखा मानों उसे कोई एक जगहसे दूसरी जगह ले जा रहा हो। तीनों जहाजोंमें पेंटा जहाज हलका था, इसलिए किनारेको नजदीक समझकर कोलम्बसने उसे ही सबसे आगे कर दिया था। थोड़ी देरमें पेंटा जहाजके आदमी हर्षसे 'जमीन, जमीन' कहकर चिल्ला उठे। अबतक कई वार सबकी आशायें निराशाके रूपमें परिणत हो चुकी थीं; इसलिए बड़ी उत्सुकता और आश्चर्यसे सब लोग सूरज निकलनेकी बाट जोहने लगे। धीरे धीरे सवेरा हुआ और सबके मनोंसे दुःख और सन्देह जाता रहा। सबने देखा कि उत्तरकी ओर

करीब ६ मील दूर पर टापू है और उसकी सपाट जमीन पर हरे हरे खेत और पेड़ लहलहा रहे हैं। तीनों जहाजोंके लोग आनन्दसे परमेश्वरके भजन गाने लगे। सबकी आँखोंमें आँसू आ गये और सबने परस्पर एक दूसरेको बधाइयाँ दीं। ईश्वरकी प्रार्थना करनेके बाद सबने कोलम्बससे अपने पिछले बर्तावकी क्षमा माँगी। सबने स्वीकार किया कि कोलम्बस वास्तवमें विचक्षण बुद्धिवाला दृढ विचारज्ञ पुरुष है और हमने उसके मार्गमें बाधक बनकर व्यर्थ ही उसे दुखी किया। कोलम्बसने अपनी योजना सिद्ध करनेके लिए परमेश्वरको अनेकानेक धन्यवाद दिये। जो लोग कोलम्बसकी निन्दा कर रहे थे, वे ही अब उसकी प्रशंसा करने लगे।

वह दिन १२ वीं अक्टूबरका शुक्रवार था जब सूर्योदयके साथ ही जहाजों परसे नावें उतारी गईं और आविष्कारक यात्री युद्धवेशमें सज्जित होकर और उनपर आरूढ होकर युद्धके गीत गाते गाते किनारेकी ओर बढ़े। जब वे किनारेके नजदीक पहुँचे तब उन्होंने देखा कि उस टापूके आदमी उन्हें एक अजनबी तमाशा समझकर देखनेके लिए इकट्ठे हुए हैं। उनके हावभाव और आकृतिसे यह जान पड़ा कि वे अपनेसे भिन्न आदमियोंको देख कर हैरान हो रहे हैं। कोलम्बसने अपनी तलाश की हुई जमीन पर तमाम योरपके मनुष्योंसे पहले कदम रक्खा। उसकी

पोशाक भड़कीली थी और किनारे पर उतरते समय उसने अपनी तलवार नंगी कर ली थी। और सब आदमी कोलम्बसके पीछे उतरे और आगे बढकर सबने जमीनको चूमा। फिर सबने एक 'क्रास' खड़ा करके अपनी यात्राकी सफलताके उपलक्ष्यमें ईश्वरकी प्रार्थना की। लिआन और कास्टलके नाम पर इन्होंने यह देश स्पेनराज्यके अधिकारमें किया और ऐसे मौकों पर पोर्च्युगीज लोग जैसी क्रिया किया करते थे—इन्होंने भी वैसी ही की।

जिस समय स्पेननिवासी यह क्रिया कर रहे थे, उस समय उस टापूके बहुतसे निवासी इनके चारों ओर इकट्ठे होकर बड़े अचम्भेसे सब कुछ देख रहे थे। वे बिलकुल ही नहीं जानते थे कि ये लोग क्या कर रहे हैं और भविष्यमें इससे कैसे फल फलेंगे। वहाँके निवासियोंके शरीर काले और बेडौल थे। उनकी नाक चिपटी और बाल घने काले थे। श्वेतकाय स्पेननिवासियोंको और उनके चमकते हुए हथियारोंको उन्होंने बड़े आश्चर्यकी चीज समझा। जिन जहाजों और नावों पर ये लोग आये थे वे वहाँके निवासियोंके नजदीक बड़े ही अचम्भेके सामान थे और उनमेंसे धुआँ और गड़गड़ाहटका शब्द सुन कर तो वे भौंचक रह गये। इन चीजोंको देखकर जितना ही उन्हें आश्चर्य हुआ उतना ही इनसे भय भी हुआ। ऐसे भव्य

चमत्कारोंवाले और गोरे शरीरवाले मनुष्योंको उन्होंने सूरजके पुत्र समझा और यह धारणा उनकी हुई कि ये लोग स्वर्गलोकसे पृथ्वी देखनेके लिए आये हैं।

दूसरी ओर स्पेनी यात्री भी इन टापूनिवासियोंको देखकर बड़े विस्मित हुए। यहाँके पौधे, दरख्त और बेलें योरपसे बिलकुल जुदी जातकी थीं। जमीन देखनेसे मालूम होता था कि उसमें पैदावार बहुत हो सकती है, पर खेती करनेके निशान बहुत कम दिखाई दिये। वहाँकी हवा गरम थी, पर स्पेनिश लोगोंको वह भली मालूम हुई। वहाँके आदमी बड़े ही भोले निष्कपट और अधिकांश नंगे थे। वे अपने लंबे लंबे बालोंको कभी कंधे पर खुले छोड़ देते थे और कभी चोटीकी तरह बाँध लेते थे। उन लोगोंके डाढ़ी न ऊगती थी और रंग कालापन लिए हुए तांबेके समान लाल था। उनके चेहरोंकी गठन अजीब थी, पर बदशकल न थी। उनका कद ठिंगना और बदन छरहरा था। जब उनके मनमें आता था तब वे अपने शरीरको तरह तरहके गहरे रंगोंसे चित्रविचित्र बना लिया करते थे। पहले पहल तो वे लोग स्पेनिश लोगोंसे डरते रहे पर थोड़े ही समयमें उनसे हिलमिल गये और उनसे काचके रंगबिरंगे टुकड़े, मालायें, नकली मोती, चमकदार टीनके खिलौने, बजनेवाले घुँघरू पाकर भोले बच्चोंकी तरह बड़े ही प्रसन्न

हुए। इस उपकारका बदला जतानेके लिए उन भोले और सच्चे टापूनिवासियोंने स्पेनिश लोगोंको रुई और खानेके पदार्थ दिये। उन लोगोंके पास सबसे अधिक कीमती चीज रुई थी। जब शाम हुई तब कोलम्बस अपने साथियोंके साथ जहाज पर गया—इनके साथ कुछ टापूनिवासी भी अपनी लकड़ीकी खोदी हुई नावों पर चढ़ कर जहाज पर गये। ये लोग अपनी नावोंको 'क्यानोज' कहते थे और वे साबुत मोटे लकड़ेको खोदकर बनाई जाती थीं। उनके बनानेमें कारीगरी न थी, पर मेहनत बहुत अधिक थी। वे लोग उन्हें अच्छी तरह खेकर ले जाते थे। यह पूर्व और पश्चिमके लोगोंका सबसे पहला मिलन था। काले और गोरे मनुष्योंकी यह सबसे पहली भेट थी। गोरे लोग लोभी और स्वार्थी थे, इसलिए वे यही सोच रहे थे कि इस टापूसे हम कैसे लाभ उठावें; पर बेचारे भोले द्वीपनिवासी इस बातसे अनजान थे कि हम पर इन लोगोंके द्वारा आगे चलकर कैसी कैसी आफतें आवेंगी।

कोलम्बसने नौ-सेनाधिप और प्रतिनिधिका पद ग्रहण किया और इस टापूका नाम उसने 'सन साल्वाडोर' रक्खा। पर वहाँके लोग उस टापूको 'गुआनाहानी' के नामसे पुकारते थे और अब भी वह इसी नामसे विख्यात है। टापुओंके जिस समुदायको लुकाया या बहमा कहते हैं उन्हींमेंसे यह एक टापू

था। कोलम्बस गोमेरासे पश्चिमकी ओर निकला था। वहाँसे तीन हजार मीलसे अधिक दूरपर यह टापू था। इससे मालूम होता है कि कोलम्बसने जिस सीधे पश्चिमी रास्तेका मानचित्र बनाया था वह उससे अधिक टेढ़ा तिरछा न गया था।

दूसरे दिन कोलम्बस उस टापूको अच्छी तरहसे देखने निकला। उन लोगोंकी दरिद्रता देखकर उसने अनुमान किया कि मैं जिस धन वैभववाले देशकी खोजमें हूँ वह यह नहीं है। पर भूगोलशास्त्रके जानकारोंने लिखा था कि एशियाखंडमें जिस जगह हिन्दुस्थान है उसके पास समुद्रमें टापू भी बहुत हैं। कोलम्बसने अनुमान किया कि शायद यह टापू भी हिन्दुस्थानके पासवाले टापुओंमेंसे एक है। उन लोगोंने गहनेके रूपमें नाकोंमें एक मामूली सोनेका पत्तर पहन रक्खा था। कोलम्बसने जल्दीसे उनसे पूछा कि तुम यह पदार्थ कहाँसे लाते हो, तब उन्होंने दक्षिणकी तरफ उँगलीका इशारा किया—उनके इशारोंसे समझ पड़ा कि दक्षिणकी तरफ बहुत सोना मिलता है। कोलम्बस वहाँ जानेके लिए झटपट तैयार हो गया; क्योंकि उसे विश्वास हो गया कि वहाँ पहुँचने पर सोना मिलेगा। उसने साल्वाडोर टापूके सात निवासियोंको अपने साथ रक्खा जिससे वे स्पेनिश भाषा सीख सकें और दूसरे टापुओंके लोगोंको उनका मतलब समझा सकें। कोलम्बसने उन्हें

अपने साथ ले जाना चाहा—इस बातसे उन भोले और निष्कपट मनुष्योंने अपना विशेष गौरव समझा।

रास्तेमें और बहुतसे टापू मिले जिनमेंसे तीन टापुओंमें कोलम्बस उतर कर देखनेके लिए गया। ये तीनों औरोंसे बड़े थे। कोलम्बसने इन तीनोंके नाम 'सेंट मेरी आफ दी कान्सेप्शन,' 'फर्नान्डिना' और 'इसाबिल्ला' रक्खा; पर इनकी जमीन और आदमी सन साल्वाडोरके समान ही थे, इसलिए वह इनमेंसे किसीमें भी न ठहरा। इन टापुओंके निवासियोंसे भी उसने इशारोंसे सोनेके विषयमें पूछा कि वह कहाँ मिलेगा? सबने दक्षिण दिशाकी ओर इशारा करके उसे बताया कि वह धातु हम उधरसे लाते हैं। कोलम्बसने अपने जहाज उसी दिशामें छोड़ दिये और थोड़े ही समय बाद एक देश उसके देखनेमें आया। इस देशकी जमीन बहुत ऊँची और प्रशस्त थी और इसमें पहाड़, नदियाँ, जंगल तथा मैदान थे; इसलिए कोलम्बस निश्चय न कर सका कि यह देश है या टापू। सन साल्वाडोरके जो निवासी कोलम्बसके साथ थे उन्होंने कहा कि हम इस जगहको 'कूबा' कहते हैं। कोलम्बसने इसका नाम 'जुआना' रक्खा। समुद्रसे अपने जहाजोंको उसने एक बड़ी नदीमें डालकर इस देशके भीतर प्रवेश किया और जब वह इसके किनारे पर ठहरा तब वहाँके सब रहनेवाले पहाड़ों पर

भाग गये । कोलम्बसने उस देशको देखनेके लिए कुछ स्पेनिश लोगोंको उन सन साल्वाडोरवालोंके साथ भेजा। वे उसमें करीब साठ मील तक जाकर आये और उन्होंने कहा कि यह जमीन बहुत बड़ी है और जगह जगह बस्तियाँ भी हैं। एक गाँव भी है जिसमें करीब एक हजार आदमी रहते हैं। यहाँके लोग नंगे जरूर हैं, पर सन साल्वाडोरके निवासियोंसे कुछ अधिक सभ्य जान पड़ते हैं। हमें स्वर्गलोकके देवता समझ कर उन लोगोंने हमारे पैर चूमें और बड़ा सत्कार किया। उन्होंने हमें कुछ कंदमूल और नई तरहका अनाज खानेके लिए दिया। कंदमूल बहुत स्वादिष्ट हैं और उस अनाजकी रोटियाँ बहुत सोंधी जान पड़ती हैं। वास्तवमें वह मक्का थी। कई कुत्तेके समान जानवर थे, पर भूँकते नहीं थे। और भी कई प्रकारके नये नये पशु देखे। इन लोगोंके पास छोटे छोटे सोनेके गहने भी देखनेमें आये।

यहाँके कुछ निवासियोंको कोलम्बसने समझाबुझाकर अपने साथ रक्खा। जब इन लोगोंसे सोनेके विषयमें पूछा तब इन्होंने कहा कि हम सोना कूबाकी खानसे लाते हैं। इसका मतलब यह था कि कूबाके मध्यभागसे सोना निकलता है, पर उन लोगोंकी भाषा कोलम्बसकी समझमें न आई। दूसरे कोलम्बस समझ रहा था कि मैं एशियाखण्डके समीप ही आ चुका हूँ, इस

लिए उसे हिन्दुस्थानके पास ही होनेका भी भ्रम था। जब उसने उन लोगोंके मुँहसे सोना निकलनेकी जगह 'कान' या 'खाना' सुना, तब इसका मतलब वह यह समझा कि पास ही कोई इसी नामवाला और बड़ा देश है। फिर उसने अनुमान किया कि मार्कोपोलने एक 'काथेना' नामक विपुल सम्पत्तिशाली देशका वर्णन किया है—अधिक सम्भव है कि वही देश यहाँसे पास हो। इसी अनुमान और आशा पर कोलम्बसने अपने जहाज पूर्वकी ओर हँकवाये। आगे चल कर उसके देखनेमें एक और द्वीप आया जिसके सौन्दर्यसे सबका चित्त प्रसन्न होगया। यहाँकी उपजाऊ जमीन देख कर विशेष आश्चर्य हुआ; पर अपने साथियोंका लोभ पूरा करने लायक और स्पेनदेशके राजारानीकी इच्छा पूरी करने लायक सोना यहाँ भी देखनेमें न आया। वहाँके लोगोंको कोलम्बसका सोनेके लिए इतना छटपटाना बहुत ही आश्चर्यकी बात जान पड़ी और उन लोगोंके भोले और निष्कपटपनको देख कर स्पेनिश लोगोंको भी अचम्भा हुआ। उन लोगोंने पूर्वकी ओर इशारा करके कहा कि इधर 'हयिती' नामक द्वीप है। वहाँ बहुत सोना मिलता है। कोलम्बसने अपने जहाजोंको उधर ही चलानेकी आज्ञा दी। स्पेनिश लोगोंको विश्वास हुआ कि अब अगले द्वीपमें सोना अवश्य मिलेगा। पिनजोन जो एक जहाजका कप्तान

था, अपने लोभको न सँभाल सका और कोलम्बसकी नजर बचा कर उसने अपने जहाजको सबसे आगे निकाल लिया। पीछेसे कोलम्बसने उसे धीरे धीरे चलनेका इशारा किया, पर उसे देखा अनदेखा करके वह अपने जहाजको आगे ही ले गया।

कोलम्बसके जहाजोंको सामनेकी हवा लगी, इस लिए ये दिसम्बरकी ६ ठी तारीख तक हयिती द्वीप न पहुँच सके। जिस बंदर पर उसने पहले पैर रक्खा उसका नाम 'सेंट निखलस' रक्खा और अपनी राजकीय मर्यादासे उसने उस द्वीपका नाम 'हिस्पान्योला' रक्खा। यह टापू आज भी कोलम्बसके रक्खे हुए नामसे ही पुकारा जाता है। यहीं उसे आगे आनेवाला पेंटा जहाज भी मिल गया। यहाँके लोग इन सबको देख कर जंगलों और पहाड़ोंमें भाग गये। कोलम्बसने फिर अपने जहाज इस द्वीपकी उत्तर बाजू पर लगवाये और इस जगहका नाम उसने 'कान्सेप्शन' रक्खा। एक औरत इन लोगोंको देख कर डरके मारे भाग रही थी– उसे स्पेनिश लोग पकड़ लाये। कोलम्बसने उसे चमकदार शीशेके गहने और ऐसी चीजें दीं जो इन लोगोंको जियादा पसंद आया करती हैं और उसके साथ बड़ी भलमनसाईसे पेश आकर उसे छोड़ दिया। उस औरतने वे सब चीजें अपने उसे

और लोगोंको दिखा कर स्पेनिश लोगोंकी बड़ी तारीफ की। इस बातसे उन लोगोंका डर जाता रहा और वैसी ही चीजें पानेके लिए और और आदमी आने लगे। उन सबने नई नई चीजें देखीं और कोलम्बसने उन्हें चमकदार भड़कीली चीजें देकर प्रसन्न किया। यहाँके लोग विशेष करके कूबा और ग्वानाहानी द्वीपोंके मनुष्योंसे मिलते जुलते थे। ये लोग शरीरसे नंगे, भोले और निष्कपट थे—मानों छल, जाल और मायाकी हवा इन्हें लगी ही न थी। हिस्पान्योला द्वीपवालोंने भी स्पेनिश लोगोंको उनके अस्त्र शस्त्र और कपड़ेलत्तोंके कारण स्वर्गके देवता समझा। वे लोग बड़े ही भोले और सीधे थे, इस लिए सहजहीमें स्पेनिश लोगोंके अधीन होगये। और द्वीपवालोंकी अपेक्षा इन लोगोंके पास बहुत सोना देखनेमें आता था। टीनकी चमकदार घंटिया, घुँघरू और शीशेके रंगीन टुकड़े पाकर इन लोगोंने बदलेमें एक एक मूठी सोना दे दिया। इस पर भी वे भोले लोग समझ रहे थे कि इस व्यापारमें हमें ही लाभ रहा है। इस द्वीपमें एक राजा था, वह भी आकर कोलम्बससे मिला। मूर्ख मनुष्योंके राजा जैसे रोब-दाबसे रहा करते हैं,यह राजा भी वैसा ही था। यह एक लकड़ीकी अपरिष्कृत पालकीनुमा चीज पर चार आदमियोंके कंधे पर बैठ कर आया। इसके साथ बहुतसे आदमी थे और वे

सब इसकी बड़ी इज्जत करते थे। इस राजाकी चालचलनमें विशेष गम्भीरता और रोआब था, पर कोलम्बससे वह बड़ी नम्रता और अधीनताके साथ मिला। इस राजाने कोलम्बसको हलके हलके सोनेके पत्तर भेटमें दिये और बदलेमें चमकदार काचके दानोंकी माला पाकर वह बहुत ही प्रसन्न हुआ।

कोलम्बसको अभी सोनेकी खानोंका पता नहीं लगा था, इस लिए वह बहुत अधीर था। वह बराबर उन लोगोंसे सोनेकी खानोंके विषयमें पूछताछ करने लगा। उन लोगोंकी अज्ञात भाषासे जो कुछ पता लगा वह यही था कि सोनेकी खान पूर्वकी ओर समुद्रसे कुछ दूर 'सिबाओ' नामक पहाड़ी देशमें है। मार्कोपोलो और दूसरे यात्री जिन्होंने उस जमानेमें पूर्वकी दूर तक यात्रा की थी जापान देशका वर्णन कर गये थे और उसे वे 'सिंपाँगो' कहते थे। जब कोलम्बसने उन लोगोंके मुँहसे 'सिबाओ' शब्द सुना तब उसे साश्चर्य आनन्द हुआ। उसने समझा कि ये लोग 'सिंपाँगो' को 'सिबाओ' कहते हैं—जिसका अर्थ जापान देश है। इस भ्रान्त अनुमानसे उसने समझा कि एशिया खंडके पूर्वी देश यहाँसे निकट ही हैं और जिन देशोंको खोजनेके लिए वह निकला था वे शीघ्र ही दीखेंगे। इसी आशा पर उसने अपने जहाज पूर्वकी ओर हँकवा दिये।

अब कोलम्बस एक बड़े देशकी समुद्री उपत्यकामें पहुँचा। वह प्रान्त एक ग्वाकानाहारी नामक राजाके अधीन था और समग्र देश पर पाँच राजाओंका शासन था। इस राजाने कोलम्बसके पास दूतके द्वारा एक सोनेका चेहरा भेटमें भेजा और दूतने इशारोंसे जताया कि आप हमारे राज्यमें चलें। इस राजाका निवास पूर्वकी ओर कुछ मील पर था जिसे आजकाल ' केप फ्रांसिस बंदर ' कहते हैं। यह राजा औरोंसे बड़ा था, इस लिए कोलम्बसने सोचा कि इससे जरा विशेषताके साथ मिलना चाहिए। पहले उसने अपने कई आदमियोंको सब कुछ देखनेके लिए भेजा। उन्होंने वापिस आकर राजा और लोगोंकी तारीफ की। ये लोग और सब लोगोंसे सभ्य थे।

इस कामके लिए कोलम्बसने दिसम्बरकी २४ वीं तारीख-को सेंट थामससे अपने जहाज छोड़े। उस समय पीठकी हवा बह रह थी और समुद्र शान्त था। कामकी अधिकताके कारण कोलम्बस दो दिन तक जरा भी न सो सका था, इसलिए उसने दूसरे अधिकारीको पतवार पर खड़े रहनेकी आज्ञा दी और कहा कि समुद्रकी जो हालत है उससे एक मिनिट भी पतवार परसे हटनेकी आवश्यकता नहीं है। यह कहकर कोलम्बस आधीरातके समय सोने गया। इस अधिकारीने वहाँ खड़े रहनेकी उतनी जरूरत न समझी और एक खलासीके लड़केको वहाँ खड़ा

करके आप दूसरी ओर चला गया। थोड़ी ही देरमें जहाज एक चट्टानसे टकरा कर हिल उठा। कोलम्बसकी नींद टूट गई और वह भागता हुआ ऊपर गया। जहाजका पेंदा फट गया था। यह देखकर सब लोगोंने हिम्मत छोड़ दी, पर कोलम्बस बड़ा धीर और समयसूचक पुरुष था। उसने आज्ञा दी कि कुछ खलासी उतर कर नावोंके सहारे जहाजका लंगर पीछेकी ओर ले जायँ; पर उन खलासियोंने अपनी नावें नीन्या जहाजकी ओर चलाईं जो उस जगहसे करीब डेढ़ मीलके अन्तर पर था। फिर उसका बोझ कम करनेके लिए कोलम्बसने उसके डोल आदि कटवा दिये, पर उन घबराये हुए खलासियोंसे कोई काम ठीक समय पर न होसका। जहाजमें इतना पानी भर आया था कि किसीको उसके बचने-की आशा न रही; पर समुद्र शान्त था और नीन्या जहाज ठीक समय पर मिल गया, इसलिए सबकी जानें बच गईं। यह बात उस किनारेवाले लोगोंको मालूम हुई और राजा ग्वाकाना-हारीके साथ वे लोग किनारे पर आगये। इस समय यदि वे लोग चाहते तो स्पेनिश लोगोंको तकलीफ पहुँचा सकते थे और नष्ट भी कर सकते थे, पर सचमुच वे लोग भोले, पर-दुःखकातर और फरेबोंसे दूर थे। स्पेनिश लोगोंकी विपत्ति देखकर वे लोग किनारे पर खड़े होकर रोने लगे—मानों दुखसे

उनकी छाती फटी जा रही थी। बहुतोंने उनमेंसे काठकी खोदी हुई नावोंके द्वारा स्पेनिश लोगोंकी सहायता भी की, जहाजमेंसे जो चीजें निकाली जा सकती थीं वे उन्होंने प्राणपणसे निकालीं और स्पेनिश लोगोंके जहाजमें ही उन्हें रख दिया। बहुतसा सामान जो जहाज पर उस समय अच्छी तरह नहीं रक्खा जा सकता था उसे वे लोग किनारे पर ले आये। सब सामान इकट्ठा करवा कर राजा ग्वाकानाहारीने अपने हथियारबंद आदमी उसकी रक्षाके लिए नियत किये। दूसरे दिन राजा ग्वाकानाहारी एक नाव पर बैठकर नीन्या जहाज पर कोलम्बससे मिलने गया। उसने इस विपत्ति पर बहुत शोक प्रकाश किया और अपने भावोंसे जताया कि इस नुकसानके बदलेमें मेरे पास जो कुछ है वह मैं देनेके लिए तैयार हूँ।

उन लोगोंमें इतना भोलापन, परदुःखकातरता, निष्कपटता और सिधाई थी, शायद इसीलिए योरपके अभिमानी निवासी उन्हें ‘ असभ्य जंगली ’ कहते थे और स्वार्थ, ईर्षा, डाह और मायाजालके कारण अपने आपको ‘सभ्यशिरोमणि’ मानते थे। वास्तवमें यह चटकीली भड़कीली सभ्यता बाहरसे जितनी अच्छी मालूम होती है, भीतर वैसी नहीं है। वह स्वार्थ-साधुता, छल और निर्दयतासे भरी हुई है। योरपके साथ इन देशोंका मिलना ही कोलम्बसके चरितका मुख्य

अंश है। यह चित्र उस समयका है जब दोनों धारायें एक दूसरीसे मिली न थीं, सर्वथा भिन्न थीं—इसीलिए इसका मूल्य विशेष है। आगे इन दोनों धाराओंके संगमका चित्र पाठक देख सकेंगे और उससे सभ्यता–असभ्यताके सिद्धान्त स्वयं बना लेंगे।

राजा ग्वाकानाहारीसे ऐसी शिष्टोचित बातें सुन कर कोलम्बसकी आत्मा शान्त हो गई। वह बहुत दुखमें पड़ा था, धैर्यकी आवश्यकता थी। असभ्योंके राजा ग्वाकानाहारीने जिस सहृदयतासे उसको सान्त्वना दी उससे कोलम्बस बहुत कुछ शान्त हुआ। अब तक अपने पेटको सोनेसे भर लेनेके लिए गया हुआ पेंटा जहाज न लौटा था और उसका कुछ पता भी न था। कोलम्बसको शक हुआ कि धोखेबाज पिनजोन मेरे आविष्कारका यश लूटनेके लिए योरपकी तरफ चला गया—वहाँ जाकर वह अपनी खोजके नामसे डौंड़ी पीटेगा और मेरे अधिकारको हटानेकी कोशिश करेगा। अब कोलम्बसके पास योरप वापिस जानेके लिए सबसे छोटा और हलका जहाज था, तथा उसमें आदमी और सामान बहुत हो गया था। इन्हीं बातोंसे कोलम्बसको विशेष चिन्ता हुई। अब उसे यह जरूरी जान पड़ा कि मैं अपने कृतघ्न साथी पिनजोनको पकड़ूँ और स्पेनमें जल्दी हाजिर होऊँ। वहाँ-की उपजाऊ जमीन और भोले तथा नम्र मनुष्योंको देख

कर कोलम्बसने सोचा कि यदि कुछ मनुष्योंको मैं यहाँ छोड़ जाऊँ तो ये लोग यहाँकी भाषा सीखेंगे, यहाँके और देशोंसे वाकिफ होंगे, सोनेकी खानें मालूम कर लेंगे और तब स्पेन देशसे बहुतसी बस्ती लाकर यहाँ बसानेमें सुविधा होगी। कोलम्बसने सोचा कि ऐसा करनेसे नये देशोंसे जो लाभ होता है वह और भी जल्दी होसकेगा। इसके सिवाय नीन्या जहाजमें इतने लोगोंका जाना भी कठिन था। जब कोलम्बसने अपना यह खयाल सबको जताया तब वहाँ सोनेकी खानोंका नाम सुन कर सब लोग राजी होगये। एक तो बहुत दिन तक समुद्र पर यात्रा करनेसे खलासियोंके जी ऊब गये थे और फिर उन्हें यह भी आशा थी कि यहाँ रहनेसे बहुतसा सोना भी इकट्ठा कर सकेंगे— इस लिए उन सबने उस देशमें रहना आनन्दसे स्वीकार कर लिया।

अब केवल राजा ग्वाकानाहारीकी सम्मति लेनी बाकी थी। यह राजा भोला और निष्कपट था। कोलम्बसने ठीक समय देख कर इससे भी पूछ लिया। कोलम्बसने अपनी भाषा और इशारोंसे पूछा कि हमारे जहाजोंको देख कर यहाँके निवासी भाग गये थे, इसका कारण क्या है? राजाने इशारेसे समझाया कि अग्निकोणकी ओरसे कारबिअन लोग यहाँ आकर बड़ा उत्पात करते हैं, उन्हींकी आशंकासे वे भाग गये थे। राजाने कहा कि कारबिअन लोग बड़े ही निर्दयी होते हैं और वे

इन लोगोंको जैसे चाहते हैं वैसे मार काट डालते हैं। यहाँके लोग चाहे जितने इकट्ठे होजायँ पर उनके सामने लड़नेकी हिम्मत इनकी नहीं होती, इसी लिए जब वे आते हैं तब ये भाग जाते हैं। बात करते समय कोलम्बसने देखा कि राजा कारबिअन लोगोंसे बहुत डरता है और उनके सामने इसका कुछ भी वश नहीं चलता। इससे कोलम्बसने अनुमान किया कि जिस बातसे कारबिअन लोगोंसे इनकी रक्षा हो, उसे ये सहजमें ही मान लेंगे। कोलम्बसने कहा कि मैं कारबिअन लोगोंसे तुम्हारी रक्षा करनेके लिए अपने बहुतसे आदमी यहीं छोड़ जाऊँगा। वे कारबिअन लोगोंको हरा देंगे और तुम्हारे वैरका बदला भी ले लेंगे। जिस बड़े बादशाहकी सेवामें हम लोग हैं, मैं उसीकी छत्रछायामें तुम्हें भी रखनेकी प्रतिज्ञा करता हूँ।

इस भोले राजाने कोलम्बसकी बात बड़ी खुशीसे मान ली। उसका विश्वास था कि स्पेनिश लोग स्वर्गमें पैदा हुए हैं और इनकी शक्ति मनुष्यसे विशेष है, इस लिए इनकी रक्षामें रहनेसे मेरी और मेरी प्रजाकी रक्षा होगी। कोलम्बसने वहाँ एक अच्छी जगह देख कर किला बनवाया और उसका नाम नेविडाड रक्खा। इस किलेके चारों ओर एक गहरी खाई खुदवाई गई और कोटको मजबूत बनानेके लिए उसके चारों ओर पुश्तें बाँधी गईं। जहाजमें जो बड़ी बड़ी तोपें थीं वे भी वहाँ लाकर

रक्खी गई। उस द्वीपवालोंने मिल कर कोलम्बसके कहनेके अनुसार दस दिनमें यह इमारत तैयार कर दी। उन भोले और निष्कपट मनुष्योंको सपनेमें भी यह खयाल न आया कि उन्होंने अपनी गुलामीका सबसे पहला निशान यह किला अपने हाथसे ही बनाया है। उन लोगोंको अपने अधीन करनेके लिए कोलम्बसने उनके साथ बड़ा उदार व्यवहार किया, इसी लिए उनका स्पेनिश लोगों पर पूरा भरोसा होगया। जब कोलम्बसने अपने अच्छे व्यवहारसे यह जता दिया कि स्पेनिश लोग उनका भला चाहते हैं, तब उसने सोचा कि अब कुछ ऐसा भी करना चाहिए जिससे हमारी शक्ति देख कर ये लोग दबते भी रहें। इसी लिए सब लोगोंके सामने उसने अपने सब आदमियोंको कवायद करनेकी आज्ञा दी। कोलम्बसने अच्छी तरह दिखा दिया कि हम लोग तलवारों, भालों और तीरकमानोंसे बड़े कौशलसे युद्ध कर सकते हैं। द्वीपनिवासियोंके पास जो हथियार थे वे जंगली मनुष्योंके समान ही थे। वे बाँसके किनारे पर मछलीकी पतली हड्डी जोड़ कर भाले और लकड़ीकी तलवारें बनाते थे। इन हथियारोंके सिवाय उनके पास कुछ भी न था। इस लिए स्पेनिश लोगोंकी चमकती तलवारोंकी कवायदसे वे लोग काँपने लगे। यह डर उनका दूर भी न हुआ था कि कोलम्बसने तोपोंके फैर

करनेकी आज्ञा दी। तोपोंकी भयंकर आवाज सुनकर वे लोग जमीन पर गिर पड़े और अपने अपने मुँह छिपाने लगे। जिन पेड़ोंका निशाना बना कर तोपें छोड़ी गई थीं वे पेड़ जमीन पर औंधे होकर गिर पड़े। यह शक्ति देख कर द्वीपनिवासी स्पेनिश लोगोंकी अद्भुत शक्तिसे त्रस्त और भीत हो गये।

इस प्रकार कोलम्बसने अपनी शक्ति और परोपकारवृत्ति दिखा कर उस द्वीपमें रहनेके लिए अड़तीस अदमी चुने। इन आदमियों पर 'डिआगोदि अराडो' नामक एक भद्र पुरुष अधिकारी बनाया गया और स्पेनके राजारानीसे उसे जो अधिकार मिले थे वे उसने उस व्यक्तिको प्रदान किये। अन्तमें कोलम्बसने सबको उपदेश दिया कि "तुम्हें सदैव स्मरण रखना चाहिए कि तुम एक दूसरी जातिके बीचमें नगण्य शक्तिके समान हो, इस लिए आपसमें झगड़े या कलह करके अपनी शक्तिको खण्ड खण्ड मत करना। अपने अधिकारीकी आज्ञा मान कर सदा चलना और यहाँके भोले निवासियोंके चित्तमें किसी प्रकारका खटका मत पैदा करना। राजा ग्वाकानाहारीसे मित्रता और शिष्टताका व्यवहार रखना। अपने किलेको छोड़ कर इतने अन्तर पर मत जाना जिससे तुम अपनी रक्षा न कर सको। यहाँके किसी निवासीके साथ जोरजुल्मसे पेश मत आना। मैं बहुत जल्दी वापिस आऊँगा और

अपने साथ इतने आदमी लेता आऊँगा कि सहजमें ही यह तमाम देश अपने हाथ आ जायगा। तुम्हें यश और धन दोनों प्राप्त होंगे। मैं राजारानीसे तुम्हारे लिए सिफारिश करूँगा और जहाँ तक हो सकेगा तुम्हारी भलाईका उपाय करूँगा।"

इस प्रकार इस नई बस्तीका सब कुछ बंदोबस्त करके १४९३ ई० की ४ थी जनवरीको कोलम्बसने अपना जहाज पूर्वकी ओर हँकवाया। उत्तरी किनारेके बहुतसे नय बंदरोंको खोज कर कोलम्बसने उनके नाम रक्खे। इसी महीनेकी ६ठी तारीखको पेंटा जहाज भी मिल गया। यह जहाज डेढ़ महीनेसे भी अधिक समय तक दूसरी ओर घूमता रहा था। पिनजोनने अपना अपराध छिपानेके लिए कहा कि मेरा जहाज तूफानमें पड़ कर उलटे रास्ते चढ़ गया था और प्रतिकूल वायुके कारण मैं फिर न सका था। कोलम्बस पिनजोनकी चालाकी अच्छी तरह समझ रहा था, पर वह यह भी जानता था कि यह मौका अपनी ताकत दिखानेका नहीं है। कोलम्बसके चित्तमें जो चिन्ता घुस गई थी वह जाती रही और यद्यपि पिनजोनकी बात असत्य और निर्मूल थी, पर कोलम्बसने ऐसा भाव बनाया मानों उसने सब कुछ सच मान लिया। पिनजोन जितने दिन कोलम्बससे न्यारा रहा था उतने दिनोंमें उसने द्वीपवालोंको शीशेके खिलौने आदि देकर कुछ सोना इकट्ठा किया था। इसके सिवाय उसने नई खोज कुछ भी न की थी।

यद्यपि कोलम्बसको जल्दी लौटनेकी कोई विशेष चिन्ता न थी, पर उसने वापिस लौटना ही अच्छा समझा। एक तो जहाजोंकी हालत ठीक न थी, दूसरे यात्रा करते करते लोगोंका चित्त भी उकता गया था। बड़ी लंबी यात्रा करनेके कारण जहाजोंमें अधिक पानी आने लगा था और लोग इस अतिशय आश्चर्य पैदा करनेवाली यात्राका वर्णन अपने देशबंधुओंको सुनानेके लिए भी व्यग्र हो रहे थे। इन सब बातोंके कारण सबकी आन्तरिक इच्छा शीघ्र ही स्वदेश लौटनेकी थी। कोलम्बसने १६ वीं जनवरीको जहाज ईशान कोणकी ओर हँकवाये और थोड़ी देरमें उन द्वीपोंके किनारे दीखने बंद होगये। कोलम्बसने उन द्वीपोंके कई आदमियोंको अपने साथ ले लिया था। वहाँसे मिला हुआ सोना भी उसके पास था और उन लोगोंको जो चीजें पसंद आती थीं उनके नमूने भी थे। कुछ उन देशोंके नई तरहके जानवर और ऐसे पक्षी थे जिन्हें योरपवालोंने कभी न देखे थे। कोलम्बस फरवरी महीनेकी १४ वीं तारीख तक एटलांटिक महासागरमें १५००मील चला आया। यहाँ तक हवाका रुख बहुत अच्छा रहा, पर बादमें हवा बिगड़ गई और अन्तमें तूफान उठ खड़ा हुआ। कोलम्बस समुद्री विद्याका बहुत बड़ा जानकार और अनुभवी था। उसने अपने जहाजोंको बचानेकी पूरी चेष्टा

की, पर जहाज समुद्रके बीचमें थे, इसलिए कोलम्बसने सोचा कि तूफानसे बचना मुश्किल है। खलासी इस समय भयसे घबराकर ईश्वरकी प्रार्थना और पवित्र पुरुषोंके नामस्मरण करने लगे—कुछ जंतरमंतर भी करने लगे। पर कुछ भी न हुआ। अन्तमें सबने आशा छोड़ दी और सबको यह मालूम होने लगा कि अब घड़ी आध घड़ीमें जलसमाधि हो जायगी। इस समय कोलम्बसको केवल अपनी मौतकी ही चिन्ता न थी, बल्कि वह सोच रहा था कि मैंने जो आविष्कार किया है अभी उसकी खबर किसीको भी नहीं है—इससे मनुष्यजातिका जो महान् उपकार होता उसके डूब जानेका अवसर आ उपस्थित हुआ। कोलम्बसको सबसे बड़ा दुःख यह था कि सब लोग मेरे कामसे अनजान रहनेके कारण कहेंगे कि कोलम्बस एक अविचारी और मूर्ख मनुष्य था जिसने अपने सिर असम्भव काम लिया। इस विचारमें पड़नेसे कोलम्बस मौतका ध्यान बिलकुल भूलगया। वह इस विचारमें पड़ गया कि मैं चाहे जैसे मर जाऊँ पर ऐसा कोई उपाय होना चाहिए जिससे इस खोजकी खबर योरप तक जा पहुँचे। भीतर जाकर कोलम्बसने अपनी सब यात्राका हाल संक्षेपसे एक चमड़े पर लिखा और नई बस्तीमें जिन आदमियोंको छोड़ आया था उनका भी हाल लिख दिया। फिर इस चमड़ेको तेलके कपड़ेसे खूब लपेटकर उसके ऊपर

मोमका गलेथ चढ़ाया और फिर उसे एक पीपेमें बन्द करके खूब अच्छी तरहसे खामकर समुद्रमें फेंक दिया। उसे केवल इतनी आशा थी कि यदि दैवयोगसे यह पीपा किसीके हाथ जा पड़ेगा तो इस बड़ी खोजका समाचार योरप तक पहुँच जायगा।

जिस विशेष पुरुषके हाथसे अभी संसारमें और बहुतसे काम होने बाकी थे उसके लिए मौत अपना काला हाथ नहीं बढ़ा सकती थी। थोड़ी देर बाद तूफान ठंडा पड़ा और कोलम्बसने अपने जहाज आगे बढ़वाये। १६ जनवरीको जमीन दिखाई दी। इसके विषयमें उन्हें कुछ भी मालूम न था। फिर भी उन्होंने अपने जहाज आगे बढ़वाये। पश्चिमी एजोरस टापुओंमेंसे यह एक था और पोर्च्युगीज लोगोंके अधीन था। यहाँके हाकिमसे कोलम्बस मिला और आवश्यक पदार्थ लेकर उसने फिर यात्रा शुरू कर दी। तूफानवाले दिन पेंटा जहाज बिछुर गया था, वह आजतक नहीं मिला था, इसलिए कोलम्बसको कुछ चिन्ता थी। वह सोच रहा था कि शायद पेंटा जहाज तूफानमें पड़कर डूब गया और उसके यात्री मौतके ग्रास बन गये। पर कोलम्बसको फिर पिनजोन पर बहम हुआ और उसने सोचा कि शायद वह मुझसे पहले आविष्कारका समाचार सुनाने स्पेन चला गया।

अच्छी हवा देखते ही कोलम्बसने अपना जहाज स्पेन देशकी ओर छोड़ दिया। जहाज स्पेन देशके किनारेके पास आया और

उसके यात्रियोंने समझा कि अब इस लंबी यात्रा और संकटका अन्त आगया । पर थोड़ी ही देरमें फिर एक तूफान उठा और उस तूफानके जोरसे जहाज दो दिन और दो रात तक समुद्रमें लकड़ीके टुकड़ेकी तरह इधर उधर झोके खाता रहा । अन्तमें जहाजको टेगस नदीमें लेजाना पड़ा और पोर्च्युगीज राजासे आज्ञा लेकर कोलम्बस लिस्बन नगरमें प्रविष्ट हुआ । अभिमानी पोर्च्युगीज लोग अभी तक अपने आपको समुद्री आविष्कारोंमें अद्वितीय मानते थे, पर जब उन्हें ज्ञात हुआ कि स्पेनिश लोग भी ऐसे काम अपने सिर लेने लगे और पहली वारमें ही वे ऐसा आविष्कार कर सके कि सबकी दृष्टि उधर ही खिंच गई तब उन्होंने कोलम्बसको ईर्षाकी दृष्टिसे देखा, किन्तु उसका योग्य सम्मान भी उन्होंने किया । राजाने कोलम्बसको अपने दरबारमें बुलाया और उसके मुँहसे उसकी विचित्र यात्राकी और खोजे हुए विचित्र देशकी कहानी सानंदाश्चर्य सुनी । उसे बड़ा अफसोस हुआ कि पहले जब कोलम्बस उससे सहायता माँगने आया था तब उसने सहायता क्यों न दी । कोलम्बसने अपने आविष्कारका वर्णन बड़ी प्रसन्नतासे किया । जिन लोगोंने कोलम्बसकी कल्पनाको हवाई किला बताया था और राजाको उसकी सहायता करनेसे रोका था उन्हीं लोगोंके सामने उसने

अपने सिद्धान्तको साबित कर दिया और इससे उसे बहुत ही अधिक सन्तोष हुआ।

लिस्बन नगरमें केवल पाँच दिन रह कर कोलम्बस स्पेनकी ओर चल पड़ा। जिस पालोस बंदरसे वह रवाना हुआ था उसी बंदर पर वह सात महीने ग्यारह दिनमें वापिस लौटा। वह दिन मार्च मासकी १५ तारीख थी। जहाजको आता देख कर वहाँके लोग बड़ी उत्सुकतासे और हर्षसे अपने देशी बन्धुओंसे मिलने और उनकी यात्राका हाल सुननेके लिए किनारे पर आगये। जब उन्होंने यह सुना कि इस यात्राका फल अच्छा हुआ और नये आदमी और नये पशुपक्षी देखे तब तो उनके आनन्दका ठिकाना न रहा। जहाजसे उतरते ही लोगोंने कोलम्बसकी बादशाही इज्जत की। कोलम्बस और मल्लाहोंकी बड़ी भारी सवारी सबसे पहले उपासना-मन्दिरमें गई और निर्विघ्न यात्रा समाप्त होनेके उपलक्ष्यमें सबने भक्तिभावसे ईश्वरकी प्रार्थना की। जो पेंटा जहाज तूफानमें पड़कर खोगया था वह भी इसी दिनकी शामको किनारे पर आगया, यह देख कर कोलम्बसको और भी अधिक सन्तोष हुआ। कोलम्बसने अपने कर्ममय जीवनमें सफलता प्राप्त की और कर्मके अनन्तर उसका फल अवश्यम्भावी है।

चौथा अध्याय।

विभूति-दर्शन ।

प्राप्यापदं न व्यथते कदाचिद्
उद्योगमन्विच्छति चाप्रमत्तः ।
दुःखं च काले सहते महात्मा,
धुरन्धरस्तस्य जिताः सपत्नाः ॥"*

कर्मका फलके साथ अनादि और अनन्त सम्बन्ध है। शब्द और अर्थका सम्बन्ध जैसे नित्य है वैसे ही यह सम्बन्ध भी नित्य है। अब तक कोलम्बसकी जीवनी भार, कष्ट और यातनामें बीती—धैर्यके साथ वह इन सबका मुकाबिला करता रहा और अपने स्थिर उद्देश पर टकटकी लगाये अहर्निश कर्म करता रहा। अब उस कर्मके विपाकका समय आगया, इसी लिए विभूतिदर्शन होने आवश्यक हुए। सबसे पहले कोलम्बसने अपनी यात्राका समाचार राजारानीके पास लिख भेजा। कोलम्बसकी सफलताका समाचार पाकर राजारानी प्रसन्न हुए और उन्होंने सन्मानके साथ लिखा कि

---

* आपत्ति आजाने पर जो घबराता नहीं, अलस भावसे जो उद्योग नहीं त्यागता, मौके पर जो दुःखोंको सहता है, निश्चित कर्तव्यमें लगे रहनेके कारण उस महात्माके शत्रु अवश्य जीते जाते हैं।—अर्थात् प्रत्येक दशामें जो सतत उद्योगी बना रहता है उसे अवश्य ही सफलता प्राप्त होती है।

आप शीघ्र ही दरबारमें आइए और अपनी अपूर्व यात्राका हाल सुनाइए। उस समय राजपरिवार बार्सिलोनामें था। जिस रास्तेसे कोलम्बसकी सवारी निकलती उस ही ओरके धनी और निर्धन सब उससे मिलने आते। सम्पूर्ण राज्य भरमें कोलम्बसके अपूर्व आविष्कारकी कहानी फैल गई। राजा फर्डिनैण्ड और रानी इसाबिल्लाको भी इस बातका अभिमान हुआ कि उनके राज्यमें पृथ्वीके एक अदृष्टपूर्व देशका पता लगा। इस लिए राजाकी आज्ञासे शहरमें बड़ी धूमधामसे कोलम्बसकी सवारी निकाली गई। जिन आदमियों और जानवरोंको कोलम्बस नये देशसे लाया था, वे इस सवारीके आगे रक्खे गये। उनकी अजीब शकलें और अपूर्व वर्ण देख कर लोगोंको आश्चर्य होने लगा और कोलम्बस पर सबकी श्रद्धा बढ़ने लगी। जो सोनेके बर्तन और सोनेके टुकड़े कोलम्बसको नये देशोंसे मिले थे वे भी सवारीमें सजाये गये। इनके बाद वे चीजें सजाई गईं जिन्हें उस देशके लोग पसंद करते थे। सवारीमें सबसे पीछे कोलम्बस बैठा। उस बुद्धिसम्पन्न आविष्कारकको देख कर लोगोंके हृदय श्रद्धा और सहानुभूतिसे भरने लगे। दरबारमें राजा और रानी नई पोशाकमें कोलम्बससे मिलनेके लिए उत्सुकताके साथ बैठे थे। जब कोलम्बस सामने आया तब राजा रानी खड़े हो गये, कोलम्बस उनका हाथ चूमनेके लिए

झुका, पर उन्होंने उसे हाथका सहारा देकर एक खूबसूरत कुरसी पर बैठा दिया । इसके बाद कोलम्बसको अपनी यात्राका हाल सुनानेकी आज्ञा दी । उसने गम्भीर और प्रौढ भाषामें शुरूसे अखीर तक अपना सारा हाल कह सुनाया । इस वर्णनमें उसने एक शब्द भी अपनी बड़ाईका न कहा । उसने नम्रताके साथ अपने साथियोंकी प्रशंसा की । जब कोलम्बसकी बात समाप्त हो गई, तब राजारानीने इस सफलताके लिए ईश्वरकी वन्दना की । कृतज्ञता और आनन्दसे कोलम्बसको बहुत कुछ सम्मान दिया गया । पहले जो एक इकरारनामा लिखा गया था उसके अनुसार कोलम्बसको अधिकार देनेका विज्ञापन प्रकट किया गया । दरबारसे कोलम्बसके कुटुम्बको रईसकी पदवी दी गई । बड़ेसे बड़े पदवीधारियोंका जितना सम्मान राजारानी करते थे उतना ही अब कोलम्बसका करने लगे । थोड़े ही दिनोंमें यह आज्ञा प्रचलित हुई कि पता लगाये हुए देशों पर अधिकार करने और नये देशोंका पता लगानेके लिए एक जंगी बेड़ा तैयार किया जायगा । कोलम्बसको इससे और भी अधिक प्रसन्नता हुई ।

इस ओर कोलम्बस अपनी दूसरी यात्राकी तैयारीमें लगा और उधर कोलम्बसकी विचित्र यात्राका हाल सारे योरपमें फैल गया, जिसे सुनकर सबका मन इस ही ओर खिंच आया ।

इस समाचारको सुनकर साधारण मनुष्योंके अचम्भेका ठिकाना न रहा और बहुतोंको तो यह बात सच ही न मालूम हुई। जो विद्वान् थे वे इसे सुनकर आनन्दके साथ आश्चर्यान्वित हुए और इसके भविष्य परिणामको सोचने लगे। इस प्रकार ज्ञानी अज्ञानी और राजा रंकमें कोलम्बसकी सफलताका समाचार फैल गया। प्रत्येक श्रेणीके समाजोंकी चर्चाका विषय यही बन गया और सब यह सोचकर आनन्दित होने लगे कि हमारे समयमें यह आविष्कार हुआ। नये देश पृथ्वीके किस भागमें हैं, इस विषयको लेकर पण्डित—मण्डलीमें वादविवाद होने लगा। कोलम्बस समझ रहा था कि यह नया देश भी एशिया खण्डका एक भाग है और हिन्दुस्थान इससे अधिक दूर न होगा। इस भ्रान्त मतके बदलनेका उसे कोई कारण भी न मिला था। वहाँ बहुत प्राचीन समयसे यह कहावत चली आती थी कि हिन्दुस्थानमें सोना पैदा होता है और वहाँकी जमीन बहुत ही उपजाऊ है। कोलम्बसने जिन द्वीपोंका आविष्कार किया था उनमें भी सोना मिलता था और जमीनकी उपज भी विशेष थी—तथा एसे ही कुछ और भी कारण थे जिनसे यही निश्चय हुआ कि ये नये देश हिन्दुस्थानके निकटवर्ती देशोंमेंसे हैं। हिन्दुस्थानमें रुईकी खेती होती थी और उसके कपड़े बन कर योरपकी बाजारोंमें बिकते थे। उन नये द्वीपोंमें भी रुईकी

पैदावार देखकर यही अनुमान ठीक समझा गया । अन्य सब लोगोंने भी कोलम्बसके इस मतको स्वीकार किया और सबको यह निश्चय होगया कि नये पाये हुए देश हिन्दुस्थानके नजदीकवाले देशोंमेंसे हैं। राजा फर्डिनैण्ड और रानी इसबिल्लाने कोलम्बसको जो प्रतिज्ञापत्र दिया था उसमें इसी भ्रान्त विश्वास पर इन देशोंका नाम ‘ इंडीज ’ लिखा है। अब इस बातका पूर्णरूपसे निश्चय हो जाने पर भी कि ये हिन्दुस्थानके समीपवर्ती द्वीप नहीं हैं सब लोग इन्हें वेस्ट इंडीज (पश्चिमी हिन्दुस्थान) और यहाँके निवासियोंको इंडियन (हिन्दुस्थानी) कहते हैं ।

कोलम्बसने इन देशोंकी चीजोंके जो नमूने दिखाये और उसके सहयात्रियोंने जो अतिशयोक्तियोंके साथ चित्ताकर्षक वर्णन किया इससे स्पेनिश लोग इस साहसी यात्राके लिए बड़ी उत्सुकता दिखाने लगे। स्पेनवालोंको लंबी यात्राका अभ्यास न था; पर इस उत्सुकताके मारे प्रत्येक श्रेणीके मनुष्य कोलम्बसके साथ जानेको तैयार होने लगे । यहाँ तक कि अनेक धनी और पदवीधर भी तैयार होगये । सबको धन और यशकी पूरी आशा थी, इस लिए किसीने यात्राके कष्टोंका स्मरण भी न किया । राजा फर्डिनैण्ड प्रत्येक ही नये कामको अपने सिर लेनेमें सदा पीछे हटा करता था,

पर इस अवसर पर वह भी अपनी उत्सुकता न रोक सका और दूसरी यात्राकी तैयारी बड़ी शीघ्रतासे करवाने लगा। सब मिलाकर सत्रह जहाज तैयार हुए जिनमें कई जहाज अधिक बोझा उठा सकने योग्य थे। इस यात्रामें १५०० आदमी थे, जिनमें बहुतसे पदवीधारी और धनी भी थे। अधिकांश लोग वहीं बसनेके इरादेसे जा रहे थे, इस लिए उन्होंने सब आवश्यक सामग्रियाँ, पालतू जानवर, अच्छे अच्छे पौधे और उनके बीज भी अपने साथ ले लिये थे। नई बस्तीके लिए जिन कारीगरोंकी जरूरत थी वे भी साथ ले लिये गये थे।

उस समय योरपकी राजनैतिक धारा धार्मिक नीतिके नीचे दबी हुई थी, वहाँ धर्म और राजनीति भिन्न नहीं मानी जाती थी। पोप ईसाई धार्मिक जगत्का सबसे बड़ा प्रतिनिधि या सम्राट् माना जाता था। सब लोगोंकी धारणा थी कि प्रत्येक नवीन देशको लेनेसे पहले धार्मिक सम्राट् पोपकी आज्ञा भी अवश्य लेनी चाहिए। पोप स्वयं क्राइस्टका अवतार माना जाता था और इसीके अनुसार यह धारणा थी कि सम्पूर्ण पृथ्वी पर राज्य करनेका केवल उसे ही अधिकार है। उस समय रोमके सिंहासन पर छठा एलेकजेण्डर नामक पोप था। इसका आचरण कलंकी साधु महन्तोंसे मिलता-जुलता हुआ था।

राजा फर्डिनैण्डके राज्यमें ही इसका जन्म हुआ था और अपने कुटुम्बके कल्याणके लिए यह स्पेन देशके राजा-रानीको प्रसन्न रखना चाहता था। इसी लिए एक कौड़ी भेट चढ़ाये विना ही राजारानीको पोपसे यह आज्ञापत्र प्राप्त हो गया कि विधर्मियोंके जिन देशोंका तुमने पता लगाया है तथा भविष्यमें और लगाओगे उन सबका राज्य मैं पूर्णरूपसे तुम्हारे ही अधिकारमें वंशपरम्पराके लिए देता हूँ। स्वयं पोपको कुछ भी मालूम न था कि संसारमें और भी देश हैं या नहीं, फिर भी उसने लिख दिया कि क्राइस्टने जो मुझे अधिकार दिया है उसके अनुसार मैं वे सब देश तुम्हें उपहारमें देता हूँ। पोपने ऐसा ही अधिकारपत्र पोर्च्युगीज लोकोंको भी दे दिया था। पीछे पोर्च्युगीज और स्पेनिश लोगोंका झगड़ा मिटानेके लिए उसने कहा था कि, एजोरसके टापुओंसे तीनसौ मील पश्चिमकी ओर एक कल्पित रेखा एक ध्रुवसे दूसरे ध्रुवतक मान कर उस रेखासे पश्चिम ओर वाले देश मैं स्पेनिश लोगोंको देता हूँ तथा पूर्व तरफके पोर्च्युगीजोंको।

उस समयकी जो सबसे बड़ी रुकावट पोपकी आज्ञा मिलनी थी, सो आसानीसे मिल गई, इसलिए बेड़ेको यात्राकी आज्ञा शीघ्र ही दे दी गई। इस समय कोलम्बसकी कीर्ति चारों ओर फैल चुकी थी, अब वह इसे और भी अधिक बढ़ानेके लिए दूसरी यात्राके लिए तैयार हुआ। २५सितम्बरको कोलम्बसने यह दूसरी यात्रा शुरू

कर दी । उष्णकटिबंधमें चलनेवाली एकसार हवा उसके जहाजोंको लगी जिसके कारण यात्रा निर्विघ्न होने लगी। गोमेरा टापूसे निकलनेके बाद २६ वें दिन जमीन दिखाई दी। नीवर्डके द्वीपपुंजमेंसे यह एक टापू था । कोलम्बस और उसके साथी किसी नई पृथ्वीका आविष्कार करनेके बड़े पक्षपाती थे, इसलिए इस टापूका नाम उन्होंने 'दि सिआडा' रक्खा । इसके बाद वायव्य कोणकी ओर चलते हुए और जितने टापू इन्हें मिले उन सबमें भ्रमण करते हुए ये आगे बढ़े । राजा ग्वाकानाहारीने जिन क्रूर और निर्दय लोगोंकी बात कही थी वे सब इन्हीं टापुओंमें रहते थे । जब स्पेनिश लोग इन टापुओंमे उतरे तब यहाँवालोंने अपनी युद्धकला दिखा कर उनको अपनी वीरताका परिचय दिया । ये लोग आदमियोंको मार कर उनका मांस खाजाते थे । स्पेनिश लोगोंने वहाँ इनके द्वारा मारे गये आदमियोंकी हड्डियोंके ढेरके ढेर देखे ।

इस समय कोलम्बसको नये द्वीपमें छोड़े हुए आदमियोंकी दशा जाननेकी विशेष चिन्ता थी, इसीलिए उसने ऊपर लिखे हुए किसी भी द्वीपमें निवास न किया और अपने जहाज सीधे हिस्पान्योलाकी ओर हँकवाये । यह पहले ही कहा जा चुका है कि कोलम्बस वहाँ एक किला बना कर उसमें अड़तीस आदमी छोड़ आया था । जब कोलम्बस इस द्वीपके किनारे पर पहुँचा

तब अपने किसी भी आदमीको वहाँ न देखकर उसे विशेष चिन्ता हुई। फिर भी उसे आशा थी कि उसके स्वदेशबन्धु शीघ्र ही उसका स्वागत करेंगे। वह उन सबकी चिन्ता करता हुआ किनारे पर उतरा। वहाँके आदिम निवासी इन जहाजोंको देखकर जंगलोंमें भाग गये थे। कोलम्बसने अपने किलेको टूटी फूटी हालतमें पाया। वहाँ फटे हुए कपड़े और टूटे फूटे अस्त्र देखकर सबको निश्चय हो गया कि हमारे बन्धुओंका विध्वंस हो गया। अपने बन्धुनाशके कारण स्पेनिश लोग रोने लगे। इसही समय राजा ग्वाकानाहारीका एक भाई आ गया। कोलम्बसने इसके द्वारा सब हाल जाना। मालूम हुआ कि ये भोले लोग स्पेनिश लोगोंको स्वर्गके मनुष्य समझते थे, पर जब उनके साथ ये लोग मिलने जुलने लगे तब, धीरेधीरे यह विश्वास उठने लगा। स्पेनिश लोगोंकी घृणित व्यभिचार प्रवृत्तियोंसे वे लोग इन्हें जघन्य समझने लगे। कोलम्बसके चले जाने पर उसके उपदेशको सबने भुला दिया और प्रत्येक आदमी अपने आपको स्वाधीन समझ कर मनमानी उद्धतता करने लगा। उन भोले और अनसमझ लोगोंकी स्त्रियोंके साथ उन्होंने बलात्कार किया और उनकी भोजनसामग्री तथा सोना लूट लिया। वे लोग दीन और नम्र अवश्य थे, पर मनुष्यकी सहनशक्ति असीम नहीं हुआ करती। जब दुराचारी स्पेनिश लोग

नारकी पिशाचकी तरह उन्हें रात दिन दुखी करने लगे, तब सबने मिल कर इनका सामना किया। स्पेनिश लोगोंको मालूम हुआ था कि सिबाओ प्रान्तमें अधिक सोना है—इसलिए कुछ आदमी उस ओर सोना लाने गये थे। इसी समय यहाँके लोगोंने इन पर छापा मारा। इसके बाद निकटके ही एक सरदारने अपने लोगोंको इकट्ठा किया और उस किलेको घेर कर उसमें आग लगा दी। बहुतसे उस किलेको बचानेमें मर गये और बाकी अपनी जान बचाते हुए खाड़ीमें तैर कर डूब मरे। राजा ग्वाकानाहारीने फिर भी मित्रताका ही परिचय दिया था। जब स्पेनिश लोगों पर विपत्ति आई थी तब राजा ग्वाकानाहारीने उनकी रक्षाके लिए युद्ध किया था और इससे उसके एक घाव भी लगा था जिसके कारण वह अब भी अच्छी तरह उठ बैठ नहीं सकता था।

स्पेनिश लोगोंके मनमें राजा ग्वाकानाहारीके प्रति जो सन्देह उठा था उसकी सफाई राजाके इतने प्रामाणिकपनके सुबूत पर भी न हुई। सबने कोलम्बसको यही सलाह दी कि हमारे देशबन्धुओंको इन लोगोंने मारा है, इसलिए इन्हें उसकी सजा देनी चाहिए और राजा ग्वाकानाहारीको अच्छी तरह पराधीन कर देना चाहिए। पर विचारज्ञ कोलम्बसने यह बात न मानी। उसने कहा कि हम यहाँ बसने आये हैं, इसलिए यहाँके किसी

राजाको अपना मित्र बना लेना आवश्यक है। यदि मूर्खतासे हम अपना वैर निकालेंगे तो अन्तमें ये सब तंग आकर हमें बड़ी कठिनाईमें डाल देंगे। कोलम्बसने आगेसे इस बातकी विशेष सँभाल रक्खी कि जिससे कोई वैसी खटपट फिर न हो। समुद्रके किनारे एक बड़े मैदानमें कोलम्बसने एक शहर बसाना सोचा। उसने निश्चय किया कि आगे चल कर इसके कारण स्पेनिश लोगोंकी विशेष रक्षा हो सकेगी। इसी विचार-के अनुसार नकशा बना कर कोलम्बसने शहर बनवाया और उसके मकान और कोट थोड़े ही दिनोंमें बन कर तैयार होगये। रानीकी इज्जत करनेके लिए कोलम्बसने इस शहरका नाम इसाबिल्ला रक्खा। यूरोपियन लोगोंने पश्चिममें जितने शहर बसाये हैं उनमें सबसे पहला बसा हुआ शहर यही है।

जिन देशोंमें खेती नहीं की जाती वहाँ शहर बसानेमें जो कठिनाइयाँ हुआ करती हैं उनका सामना कोलम्बसको भी करना पड़ा। इन ऊपरी कठिनाइयोंकी अपेक्षा कोलम्बसके मार्गमें जो सबसे बड़ी कठिनाई थी वह स्पेनिश लोगोंका आलसीपन और दुर्व्यसन था। आलस और दुर्व्यसनका जोड़ा चिरकालसे चला आया है। योरपमें स्पेनवाले वैसे ही आलसी मशहूर थे, फिर गरम देशमें आनेसे उनकी सुस्तीने और भी अधिक उन्नति कर डाली। देश विजय करनेवाले उस बड़े भारी

यात्री दलमें बहुत कम लोग शारीरिक कामके अभ्यासी थे। आलसी मनुष्य छप्पर फटकर दौलत पानेके विशेष इच्छुक होते हैं। जब कोलम्बसके नाविकोंने इन पश्चिमी देशोंका बड़ी बड़ी अतिशयोक्तियोंसे भराहुआ वर्णन किया था और इन देशोंके पहाड़ोंको सोनेकी खान बताया था तब आलसी स्पेनिश लोगोंकी लार टपक पड़ी थी। सब अपने अपने घरोंसे सोना लूटनेके लिए चल पड़े थे, पर यहाँकी छोटी छोठी कठिनाइयोंसे ही वह आलस्यमें बढ़ा हुआ उत्साह मुरझा गया। पहले उन्होंने सोचा था कि वहाँ बिना किसी मेहनतके सोना मिल जायगा, पर यहाँ आने पर अनुभवसे मालूम हुआ कि सोना पानेके लिए अधिक दिन और अधिक परिश्रमकी आवश्यकता है और फिर भी सोनेका मिलना न मिलना निश्चित नहीं। इस सपने-की आशाके टूटते ही उनका उत्साह हवा होगया और इसके बदले उनके चित्त पर असन्तोष छागया। ये ही सब कठिनाइयाँ कोलम्बसके मार्गमें थीं। उसने सबसे कहा कि देखो यहाँकी जमीन कैसी उर्वरा है और यहाँ सोना भी बहुत नजर आता है, तुम यहाँ रहकर उसकी खोज करो। पर लोग कहने लगे कि यहाँ खेती पैदा हो तब तक हम नहीं ठहर सकते और सोना तो यहाँ बहुत ही कम है। लोगोंकी कोलम्बस पर जो पहले श्रद्धा और भक्ति हो गई थी वह काफूरकी तरह उड़ गई

और सबने मिल कर कोलम्बसके खिलाफ़ जाल रचा। किन्तु कोलम्बस रातदिन परिश्रम करते हुए समय, देश और बला-बल पर विचार करता रहता था—वह बाहरसे किसीसे कुछ न कहता था पर भीतरी षड्यन्त्रका उसे ज्ञान होगया था। अन्तमें षड्यन्त्रके नेताओंको उसने पकड़ लिया और अपने साथके जो बारह जहाज उसने लौटाये थे उनमें उन्हें कैद करके वापिस स्पेन भेज दिया और राजा-रानीको और आदमी तथा सामान भेजनेके लिए लिखा।

कोलम्बस इसे अच्छी तरह जानता था कि मनुष्य आलसमें पड़े रहनेसे फिजूलकी बातें सोचा करता है। इसलिए लोगोंको काममें लगा कर उनका ध्यान बँटाना उसने आवश्यक समझा। कोलम्बसने इसी उद्देशसे उस देशमें कई सवारियाँ निकालीं। जब उसे मालूम हुआ कि सिबाओ प्रान्तमें अधिक सोना मिलता है, तब उसने एक चतुर और साहसी पुरुषको थोड़ीसी सेनाका सरदार बना कर वहाँ भेजा और पीछेसे बड़ी फौज लेकर स्वयं कोलम्बस भी गया। लोगों पर रोआब जमानेके लिए वहाँ बड़े जोरशोरसे कवायद हुई। फौजमें झंडे फहराते थे, लड़ाईके बाजे बजते थे और आगे पीछे सवार दौड़ते थे। वहाँके लोगोंने पहले कभी घोड़े न देखे थे और जानवरोंका पालना भी उन्हें न आता था। इसलिए घोड़ोंको

देख कर उन्हें भय और आश्चर्य हुआ। उन्होंने समझा कि घोड़ा और सवार मिल कर एक ही जानवर है और वह बड़ा ही भयंकर वेगवाला है। उन्हें यह विश्वास होगया कि यह प्राणी तो किसीसे हार ही नहीं सकता। इस प्रकार वहाँके लोगोंको भय दिखाकर फिर कोलम्बसने ऐसी युक्तियाँ रचीं जिससे उन लोगोंका प्रेम भी वह पा सके। उसने वहाँके सब लोगोंके साथ बड़ी ही सचाई और प्रामाणिकताका व्यवहार किया और समय समय पर उन पर दया और प्रेम भी प्रकट किया। सिबाओ प्रान्तके विषयमें कोलम्बसने जो कुछ सुना था वह कुछ कुछ सच भी मालूम हुआ। उस देशकी नदियोंकी बालूमें सोनेके कण मिलते थे और कोई कोई कण बड़ा होता था। वहाँके लोगोंको खानोंसे सोना निकालना न आता था। बरसातमें पानीके साथ पहाड़ों परसे सोनेके कण नदीमें बह आते थे और बालूमें वे पाये जाते थे। नदीकी बालूमें सोना देख कर स्पेनिश लोगोंको पता लग गया कि यहाँ सोना अधिक है। इस प्रान्तको अपने हाथमें करलेनेके लिए कोलम्बसने यहाँ एक छोटासा किला बनवाया। इस किलेका नाम सेंट थामस रक्खा गया।

जब नई बस्तीमें रहनेवाले स्पेनिश लोग नाना प्रकारके दुखोंके कारण निराश और हतोत्साह हो गये थे तब उन्हें

सिबाओ प्रान्तमें सोना होनेके समाचार मिले और इससे उनमें कुछ हिम्मत लौटी। जो खाद्य पदार्थ वे लोग अपने देशसे लाये थे उसका अधिकांश अब तक निपट चुका था और जो बाकी था वह गरम जलवायुके कारण काममें आने लायक न रहा था। वहाँके निवासियोंको खेतीका ज्ञान बहुत ही कम था और फिर वे जमीन भी बहुत ही कम जोतते थे, इस लिए वे खुद अपना पेट भी मुश्किलसे पाल सकते थे। इधर इसाबिल्ला नगरके स्पेनिश निवासियोंको जमीन साफ करके खेत बोनेका अवकाश न मिला था, इस लिए अनाजका टोटा आगया और सबको अपना भोजन घटानेके लिए विवश होना पड़ा। इस पर भी यह भय बना रहा कि कहीं हमें भूखसे तड़प तड़प कर प्राण न देने पड़ें। इतने पर ही आपत्तियोंका अन्त न था। उष्ण कटिबन्धके जिन देशोंकी जंगली झाड़ियाँ काटी नहीं जातीं, जमीन साफ नहीं की जाती और नदियोंका पानी साफ करके काममें नहीं लाया जाता वहाँके निवासियोंमें नानाप्रकारकी बीमारियाँ फैल जाया करती हैं। वे बीमारियाँ भी इन लोगोंमें फैलनी शुरू होगईं। स्पेन देशमें रहते हुए इन लोगोंने इन कठिनाइयोंका सौवाँ हिस्सा भी न देखा था। चारों ओरकी इन कठिनाइयोंसे वे रात दिन भय, चिन्ता, दुःख और शोकमें रहने लगे। सब लोग एक स्वरसे इन

सबका कारण कोलम्बस और उसकी पहली यात्रामें साथ आनेवाले यात्रियोंको बताने लगे। वे लोग कहने लगे कि, इन दुष्टोंने इस जंगली जानवरोंके योग्य भूमिकी बड़ी बड़ी तारीफें करके हमें लालचमें फँसा लिया और कुत्तोंकी मौत मारनेके लिए यहाँ ला पटका। उन लोगोंमें जो कुछ इज्जत और प्रतिष्ठावाले पुरुष थे वे भी उन लोगोंको समझानेके स्थान पर उन्हींके समस्वर होकर बोलने लगे। इन लोगोंके साथ एक धर्मोपदेशक (पादरी) भी आया था। उसने उपदेशोंके स्थान पर बड़े बड़े उत्पात मचाये। इन सबको शान्त करके फिरसे अपने अधिकारके नीचे लानेमें कोलम्बसको अपनी विद्या, बुद्धि और अधिकारका बड़ी चतुराईसे उपयोग करना पड़ा। बहुत बार वह इन लोगोंको धमकाता था और अनेकों बार सहानुभूति और दयाके साथ उनमें आशाका संचार करता था। अन्तमें वह कहता था, सिबाओ प्रान्तसे तुम्हें इतना सोना मिलेगा कि अपने कष्टों और यातनाओंको भूल जाओगे। कोलम्बसकी इन बातोंका उन पर बहुत प्रभाव पड़ता था और वे शान्त हो जाते थे।

कोलम्बसने बड़े परिश्रमसे उन लोगोंमें ऐसी व्यवस्था बना दी कि जिससे उसके न रहने पर भी वे लोग योग्य रीतिसे काम करते रहें। क्योंकि कोलम्बसने अभी अपनी खोज समाप्त नहीं

की थी। वह अब तक जिन नये टापुओं और नई जमीनोंको खोज चुका था उनके विषयमें अब उसे पूर्ण ज्ञान प्राप्त करना था। उसे यह भी पता लगाना था कि उसके खोजे हुए टापू किस महाप्रदेशके खण्ड हैं। अपनी अनुपस्थितिमें यहाँकी व्यवस्था बनाये रखनेके लिए उसने अपने भाई डोन डिओगे-को प्रधान बानया और उसकी सहायताके लिए कुछ सरदारोंकी एक सभा बना दी। डोन पेट्रो मार्गारीटाके अधीन कुछ सेना भी कर दी और उसे समझा दिया कि तुम इस पृथ्वीके भिन्न भिन्न भागों पर यहाँके निवासियोंको नाराज न करते हुए राज्य स्थापित करनेका प्रयत्न करना। कोलम्बस अपने आदमियोंको बार बार भलमनसीके बर्तावकी शिक्षा देता था और इस अनजान तथा सुदूर देशमें वह केवल सद्वर्तनको ही अपने देशबन्धुओंका रक्षक समझता था। सब प्रकारकी व्यवस्था करके और सबको परस्पर एकसूत्रमें बँधे रहनेका उपदेश देकर कोलम्बस २४ वीं अप्रेलको वहाँसे रवाना होगया। लंबी यात्रामें जो कुछ दुःख आते हैं वे सब कोलम्बस और उसके नाविकों पर आये। इस बार वे लगातार पाँच महीने तक समुद्रकी लहरोंसे टकराते रहे और इस अर्सेमें उन्हें जेमैका टापूके सिवाय और किसी द्वीपका पता न लगा। जब कूबा द्वीपके दक्षिणकी ओर कोलम्बस गया तब उसे छोटे मोटे बहुतसे टापुओंका एक झुंड मिला। इस द्वीपसमूहका

नाम उसने 'रानीका बाग' रक्खा। इन टापुओंके बीचके रास्ते ऐसे टेढ़े मेढ़े और पेचीले हैं कि उनमें चतुरसे चतुर नाविक भी धोखा खा जाता है। कोलम्बस सबसे पहला सभ्य नाविक उस ओर गया था। इसे वहाँ बड़े बड़े तूफानोंका सामना करना पड़ा—साथ ही उष्णकटिबन्धमें जैसी वर्षा और बिजली कड़का करती है वह भी इसे झेलनी पड़ी। इन सब आपत्तियोंके सिवाय सबसे बड़ी कठिनाई यह आगई कि भोजन-सामग्री बीत गई। सब नाविक भूखों मरने लगे और अपने भूखों मरनेका कारण कोलम्बसको मान कर वे इस घातमें रहने लगे कि समय मिले तो कोलम्बसको मार कर सदाके लिए इन रोज रोजकी आफतोंसे छूट जायँ। इन सब आपत्तियोंके कारण वह रातभर होशियारीसे जागता था और वह जो जो आज्ञायें देता था वे पालन की जाती हैं या नहीं, इसकी भी सँभाल रखता था। नौकाशास्त्रमें कोलम्बसकी जितनी अधिक जानकारी थी उस सबका काम अब तक उसे कभी न पड़ा था—पर इन स्थानोंके तूफानों और बेतरतीब हवाओंमें अब उसे अपनी तमाम विद्याबुद्धि खर्च करनी पड़ी। यदि कोलम्बसके स्थान पर और कोई पुरुष होता तो उसके जहाज कभीके रसातलमें पहुँच गये होते। कोलम्बसकी दिमागी शक्ति जैसी

सबल थी वैसी ही उसकी शारीरिक शक्ति भी बहुत बढ़ी चढ़ी थी। किन्तु इन दिनों उसने रात दिन जाग जाग कर काम किया था और उसे कई प्रकारकी चिन्ताओंने घेर रक्खा था—सबसे अधिक वह अपने साथियों और नाविकोंकी दुष्प्रवृत्तियोंके कारण चिन्तित था। कड़ी मेहनतके बाद उसे नींद आई और वह नींद बुखारके रूपमें बदल गई। बुखारमें वह बेहोश होगया। अच्छा हुआ जो इस बेहोशीकी हालतमें मल्लाहोंने उसे समुद्रमें नहीं फेंका।

कोलम्बसके सशक्त शरीरने उस महाव्याधिका सामना किया और वह संसारका उपकार करनेके लिए बच गया। सितम्बर मासका अन्त होते होते हिस्पान्योला द्वीपके इसाबिल्ला नगर पर उसका जहाज आलगा। यहाँ कोलम्बसको उसका भाई बार्थोलोमेओ मिला। बीमारी और चिन्ताके कारण कोलम्बस बहुत उदास होगया था, पर भाईको देख कर उसके चित्तमें कुछ प्रसन्नता हुई। दोनों भाइयोंमें सदैव मतैक्य रहता था। आज उसे यह भाई तेरह वर्षके लंबे वियोगके अनन्तर मिला था। पाठकोंको स्मरण होगा, कोलम्बसने अपने इसी भाईको इँग्लैंडके राजाके पास सहायताकी प्रार्थना करनेके लिए भेजा था, पर दुर्भाग्यसे वह डाकुओंके हाथ पड़कर बंदी हो गया था। वहाँसे जैसे तैसे छूट कर वह इँग्लैंड पहुँचा और

कई महीने यहाँ वहाँ भटकनेके बाद उसने इँग्लैंडेश्वरको अपनी प्रार्थना सुनाई। वहाँसे फ्राँस होता हुआ वह वापिस स्पेन जानेके लिए निकला। कोलम्बससे जुदा हुए उसे एक जमाना गुजर गया था और इस अर्सेमें उसे अपने भाईका कोई पत्र या समाचार न मिला था। जब वह पेरिसमें पहुँचा तब उसे अपने भाईकी पहली खोजका समाचार मिला। यहीं उसने यह भी सुना कि कोलम्बस बहुत जल्दी एक और बड़ी यात्रा करनेवाला है। इससे बार्थोलोमेओने बड़ी जल्दी स्पेनकी ओर यात्रा की, पर जब वह स्पेन पहुँचा तो मालूम हुआ कि कोलम्बस कई दिन पहले वहाँसे रवाना हो गया। विद्या, बुद्धि और प्रतिभाके कारण अब लोग कोलम्बसको साधारण मनुष्य न समझते थे, इसलिए रानी इसाबिल्ला और राजा फर्डिनैंडने उसके भाईका योग्य आदरसत्कार किया। कुछ महीनोंके बाद तीन जहाज हिस्पान्योलाकी ओर खाद्य पदार्थ लेकर स्पेनसे जानेवाले थे। राजा फर्डिनैंडने बार्थोलोमेओको उन्हींका कप्तान बनाकर भेज दिया। जब कोलम्बस पाँच महीने तक क्रोधित समुद्रकी तरंगोंसे टकराकर और अपने साथियोंकी अविश्वासकी चिन्तासे जर्जरित होकर वापिस हिस्पान्योला पहुँचा तब उसे भाई बार्थोलोमेओ मिला। इस उदासीके समयमें तेरह वर्षकी जुदाईके बाद भाईको देखकर कोलम्बसका चित्त प्रसन्न हुआ।

जिस समय कोलम्बसको एक सुदक्ष सलाह देनेवाले मित्रकी आवश्यकता थी, उसी समय बार्थोलोमेओ वहाँ पहुँच गया। स्पेन देशसे खाद्य पदार्थ आने पर भी लोगोंके मनसे भूखे मरनेका डर न गया; क्योंकि वह कुछ दिन चलने योग्य ही सामग्री थी और इधर अनाज पकनेमें अभी देर थीं। इसी अवसर पर एक घटना और घट गई थी जिस पर ध्यान देना अत्यावश्यक था। कोलम्बस जिस समय यात्राके लिए गया था तब मार्गारीटाको थोड़ीसी सेनाका स्वामी बना गया था और सबको उपदेश दे गया था कि वे यहाँके निवासियोंको किसी प्रकारका कष्ट न पहुँचाते हुए सब काम करें। किन्तु पीछेसे कोलम्बसके इस दीर्घदर्शीपनकी किसीने परवा न की, सारे सिपाहियों और दूसरे लोगोंने अपने अपने स्वाधीन झुंड बना लिये और सबके सब स्वेच्छापूर्वक जहाँ तहाँ घूमने लगे। मानों सबने अपने आपको स्वाधीन राजा मान लिया और सभ्यताका नाम लेकर उन निरीह और भोले लोगों पर अत्याचार करनेका उन्हें अधिकार मिल गया। मनुष्यके मनमें जितने राक्षसी अत्याचारोंकी कल्पना उठ सकती है, उन सबको स्पेनिश लोगोंने प्रत्यक्ष कर दिखाया। उन्होंने वहाँके भोले

निवासियोंकी सोने चाँदीकी चीजें लूट लीं, भोजनसामग्री जो कुछ मिली वह छीन ली, उन लोगोंकी सती और सच्ची स्त्रियों-पर मनमाना बलात्कार किया और जिसे जीमें आया उसे मारा पीटा और अधमरा कर दिया या मार ही डाला।

वहाँके आदिम निवासी बहुत ही भोले और निष्कपट थे। उन्हें सपनेमें भी खयाल न था कि ये सफेद रंगवाले स्वर्गीय आदमी हम पर इतना अत्याचार करेंगे। वे इन लोगोंके हर-एक काममें सहायता देते थे और प्रसन्न थे, पर स्पेनिश लोग वास्तवमें देवता तो थे ही नहीं, बल्कि उस समयके योरपके सबसे अधिक आलसी और निरुद्योगी राक्षस थे। सोना पानेके लालचमें आलसी आदमी भी जैसे कुआ खोद डालता है, उसीतरह ये लोग भी सोनेके लालचमें वहाँतक गये थे। आलसी आदमी अत्याचारका घर होता है और उसका मन नरकका द्वार। स्पेनिश लोगोंने अपनी करतूतसे यही दिखाया। पहले वहाँके आदिम निवासियोंने समझा था कि ये लोग देश देखकर चले जायँगे, पर धीरे धीरे उन्हें मालूम हुआ कि ये सब यहीं रहेंगे और हमें सदैव यातना सहनी होगी। स्पेनिश लोगोंने एक शहर बसाया और उसके चारों ओर कोट बना लिया, और भी कई एक किले बनाये, फिर खेत बोये। इन सब बातोंसे उन लोगोंने समझा कि ये केवल देखनेहीके

लिए नहीं आये हैं, बल्कि यहाँ रहना ही इनका उद्देश है। वहाँ रहनेवाले स्पेनिश लोगोंकी संख्या कुछ अधिक न थी, किन्तु इन अल्पसंख्यक लोगोंको भी अन्न देना वहाँके निवासियोंके लिए महाकठिन काम था। कारण यह था कि एक तो उन लोगोंको जमीन जोतने बोनेका भलीभाँति ज्ञान न था। दूसरे जो कुछ ज्ञान उन्हें था उससे भी अधिक परिश्रम करने पर काफी अनाज मिल सकता था, पर वे आलसी थे। वे कुछ दिन धीरे धीरे काम करके अपने खाने लायक अनाज पैदा कर लेते थे और बाकी दिन आलसमें पड़े पड़े बिताते थे। गरम देशोंकी जलवायु आदमीको काहिल बना डालती है। उनके शरीर जन्मसे ही कमजोर होते थे और मेहनत करने-की तो आदत ही उन्हें न थी, इस कारण उनकी खुराक भी थोड़ी ही थी। वे लोग जैसे काम करनेके आदी न थे वैसे ही विचारशक्ति भी उनकी जागृत न थी। क्योंकि मक्का या कंदमूलकी फीकी रोटियाँ उनकी थोड़ीसी भूखको बस होती थीं, इससे आगे उन्हें न विचार करनेकी आवश्यकता थी और न श्रमकी। योरपके सब देशोंमें स्पेनवाले ही कम भोजन करने और आलसीपनमें पड़े रहनेके लिए प्रसिद्ध थे; किन्तु इन नवीन द्वीपवालोंको ये लोग भी भोजन और श्रममें भीम जान पड़ते थे। अनेक इन्डियनोंकी खुराक एक एक स्पेनिश खा

जाता था, इससे वे हैरान रह जाते थे और सोचते थे कि इनकी भूखका पार नहीं । धीरे धीरे उनके मनोंमें एक कल्पना यह उठने लगी कि इन लोगोंको अपने देशमें पेट भर भोजन नहीं मिला, इसीलिए ये यहाँ आये हैं। अपनी रक्षाके लिए वे चाहने लगे कि ये अत्याचारी स्पेनिश लोग यहाँसे बिदा हो जायँ तो बहुत ही अच्छा हो। अब तक उनका यह खयाल था कि ये लोग जैसे आये हैं वैसे ही चले जायँगे; पर ज्यों ज्यों समय बीतने लगा त्यों त्यों उनकी यह आशा दुराशा सी जान पड़ने लगी । अन्तमें उन्होंने निश्चय किया कि जिन प्रान्तोंको इन लोगोंने बलात्कार अपने अधिकारमें ले लिया है, यदि वे शीघ्र न छुड़ाये जायँगे तो इन लोगोंकी राक्षसी भूखके कारण अकालसे या इनके प्रबल होने पर इनकी शक्तिसे हमारा नाश अवश्य हो जायगा ।

जिस समय कोलम्बस लौटकर इसाबिल्ला नगरमें आया उस समय इन्डियन लोगोंके ऊपर लिखे विचार दृढ होरहे थे। स्वभावसे वहाँके निवासी शान्त और सहनशील थे, किन्तु स्पेनिश लोगोंने उन निरीहों पर इतना अत्याचार किया था कि वे क्रोधित हो उठे थे । वे अब केवल इस आशा पर समय काट रहे थे कि सरदार लोग आज्ञा दें तो हम इन पर टूट पड़ें । जब स्पेनिश लोग अपनी अपनी टोलियाँ बनाकर मतवाले हाथीकी तरह निरीह

प्रजारूप कमलवनके तहस नहस करते हुए इधर उधर घूम रहे थे, उस समय कुछ राजाओंने अनजानमें उन पर छापे भी मारे थे और हानि भी पहुँचाई थी। जब स्पेनिश लोग इस दशामें आ पहुँचे तब उनकी आँखें खुलीं और उन्हें कोलम्बसकी दीर्घदर्शी-पनसे भरी सलाह याद आई। सबने एकत्र होकर अपनी अपनी स्वच्छन्दताका त्याग किया और कोलम्बसका नेतृत्व फिर स्वीकार किया गया। यात्रासे लौटते ही कोलम्बसके सामने यही समस्या आगई। अब तक कोलम्बसने शस्त्रका उपयोग न किया था, पर जो गलती हो चुकी थी वह अब तलवारके बिना और किसी तरह नहीं सुधारी जा सकती थी। ये पश्चिमी महाद्वीपके निवासी निरे जंगली थे। कमरमें थोड़ासा कपड़ा लपेटनेके सिवाय वे बिलकुल नंगे रहते थे। आगमें तपाये हुए बाँस, लकड़ियोंकी नोकोंपर जड़ा हुआ लोहा या हड्डियाँ और लकड़ीकी तलवारें-बस, ये ही उन लोगोंके अस्त्र--शस्त्र थे। इधर स्पेनिश लोग अच्छी तरह युद्ध करना जानते थे और उस समय योरपमें जितने विनाशक अस्त्र-शस्त्र काममें लाये जाते थे वे सब उनके पास थे। इन्डियन लोग युद्ध करना अवश्य नहीं जानते थे, पर वे संख्यामें बहुत अधिक थे। स्पेनवालोंकी संख्या थोड़ी थी, इस लिए उन्हें डर था कि यदि किसी प्रतिकूल बाधाके कारण या अकस्मात् दैवी घटनाके कारण हम लड़ाईमें हार जायँगे,

तो फिर यहाँ रहना ही असम्भव हो जायगा। कोलम्बसने अपनी सारी अनुकूलताओं और प्रतिकूलताओं पर विचार किया और अन्तमें उसे झटपट युद्ध कर डालना ही भला मालूम हुआ। जब उसने अपने विचारके अनुसार फौज एकत्र की, तो उसे आदमी कम मालूम हुए। उस देशकी गरमी, मलेरिया और अनुचित आहारविहारोंसे बहुतसे स्पेनिश रोगशय्या पर पड़े थे। उन्हें जो रोग हुए थे, वे कुछ विलक्षण ही थे। उनका कुछ निदान नहीं हो सकता था, इस लिए उनके रोकनेके उपाय भी नहीं किये जा सकते थे। दो तिहाई स्पेनिश लोग मौत और बीमारीके शिकार बन चुके थे, और जो बाकी थे उनमें युद्ध करनेकी बहुत ही कम शक्ति थी। फिर भी युद्धके लिए दो सौ पैदल, बीस सवार और बीस कुत्तोंका लश्कर भेजा गया। १४९५ ई० की २४ वीं मार्चको सेनाका कूच हुआ। इस युद्धमें आदमी और सवारोंकी अपेक्षा कुत्तोंने अधिक काम किया। नंगे और अनजान इंडियन लोगों पर जब कुत्ते छोड़ दिये गये तब उनकी बड़ी ही दुर्दशा हुई—वे त्राहित्राहि करने लगे। राजा ग्वाकानाहारीका स्पेनिश लोगोंसे प्रेम था। इस लिए उसे छोड़कर बाकी आसपासके सब राजा अपने अपने लश्करके साथ युद्ध करनेके लिए घिर आये थे। कोलम्बसकी फौजकी तादाद ऊपर लिखी जा चुकी है। इन्डियन लोगोंकी फौजकी

तादाद उस समयके स्पेनिश लेखकोंने एक लाख बताई है। मूर्ख इन्डियन लोगोंने किसी पहाड़ी या जंगलको लड़ाईके लिए पसंद न करके 'बिगर ए आल' नामक मैदानको संग्राम-भूमि बनाया। कोलम्बसने एकाएक उन पर हमला कर दिया, इस कारण न वे अपनी गलती समझ सके और न स्थान बदल सके। वे लोग संख्यामें अवश्य अधिक थे, पर अज्ञानी होनेके कारण ऐसे बेढंगे दल बना कर खड़े हुए कि कोलम्बसने उन्हें आसानीसे हरा दिया। तोपोंके गगनभेदी नादसे वे 'किंकर्तव्य-मूढ' बन गये, तलवारों और बंदूकोंसे उनका बेहद नाश हुआ, घोडोंकी टापोंके मारे वे घबड़ा गये और कुत्ते तो उन्हें राक्षसों जैसे दीखते थे। वे थोड़ी ही देरमें अपने अपने हथियार फेंक फेंक कर भाग गये। जो लोग पकड़े गये उन्हें स्पेनिश लोगोंने गुलाम बना लिया। सारे ही इंडियनोंके जीमें इतना भय घुस गया कि वे सर्वथा निराश होगये। स्पेनिश लोगोंको अजेय मान कर युद्धका भाव ही उन्होंने छोड़ दिया।

कोलम्बस कई मास तक निरन्तर घूमता रहा और सारे टापुओंको स्पेनके अधिकारमें लाता रहा, पर वहाँके लोग इतने डर गये थे कि उनमेंसे फिर किसीने भी उसका सामना करनेकी हिम्मत न की। वहाँके निवासियोंमें जो चादह वर्षकी आयुसे अधिक उमरके थे उन सब पर कर लगाया गया। जिन

टापुओंमें सोना मिलता था उनके निवासियोंसे करमें प्रति तीसरे महीने एक 'माप' निश्चित करके उतनी सोनेकी रज ली जानेकी व्यवस्था की गई। इस मापका नाम 'हाक्सबेल' था। जिन टापुओंमें सोना पैदा न होता था वहाँके निवासियोंसे २५ पौण्ड रुई ली जाने लगी। कोलम्बसने यह कर सब पर समान रूपसे लगाया, पर पीछे इसके अलावा और भी कई कड़े कर लगाये गये। यह बात कोलम्बसकी नीति और उद्देशके खिलाफ थी, किन्तु इसके भी कुछ विशेष कारण थे। कोलम्बसने जन्म भर अपने भाग्यसे संग्राम किया था। उसके जीवनका कोई समय ऐसा नहीं मिलता जब वह जीवन-संग्रामसे उदास होकर बैठा हो। एक ओर वह अपने देशबन्धुओंको चतुराईसे अधिकारमें रक्खे हुए था और दूसरी ओर इन टापुओंमें स्पेनके राज्यकी वृद्धि कर रहा था। पर खास स्पेनमें उसके खिलाफ राजारानीके कान भरे जारहे थे। मार्गारीटा और दो एक और आदमी या तो इस इरादेसे कि इस यशके भागी हम बनें और या जलनसे कोलम्बसके विरुद्ध तरह तरह-की अफवाहें फैला रहे थे। दरबारमें कोलम्बसका सबसे अधिक सम्मान देखकर बहुतसे दरबारी भी जले जारहे थे। इस समय स्पेनके दरबारमें पश्चिमी टापुओंका प्रधान मंत्री एक 'फिन्सेका' नामक पादरी नियत किया गया था। यह कोलम्बससे बहुत ही

जलता था और उसकी बुराइयोंका संग्रह बड़ी सावधानीसे करता था। पर उसकी जलनका कारण उस समयके इतिहास-से नहीं जाना जाता। कोलम्बसने सोचा कि मेरे मार्गमें जो जाल फैलाये गये हैं उनके काटनेका अब केवल एक ही उपाय है, और वह यह कि इस देशमें जितना अधिक सोना मिल सके उतना संग्रह करके राजा-रानीकी भेट किया जाय जिस-से मुझ पर उनका विश्वास हो और मेरी बातको वे सच मानें। इस तरह अपने विरुद्धके सम्पूर्ण षड्यन्त्रोंको नष्ट करनेके लिए और स्पेनवालोंको इन देशोंका महत्त्व समझानेके लिए कोल-म्बसने वहाँके निवासियों पर कड़े कर लगाये थे और उन्हें सख्तीसे वसूल करनेकी व्यवस्था की थी। उस समय वह जिस स्थितिमें आपहुँचा था उससे निकलनेका इसके सिवाय और कोई मार्ग ही न था।

हम ऊपर लिख चुके हैं कि वहाँके निवासी आलसी थे, वे अपनी आवश्यकताओं पर कभी ध्यान न देते थे। पर अब कर अदा करनेमें उन्हें परिश्रम करना पड़ता था और बहुत कुछ आगा पीछा सोचना पड़ता था; इस लिए उन्हें बहुत ही दुःख मालूम होता था। दूसरे उन लोगोंके शरीर भी इस योग्य न थे जो इतनी मेहनत कर सकते। अन्तमें उन्होंने इस आपत्तिसे बचनेका एक उपाय किया जिससे जान पड़ता है कि वे

प्रतीकारकी और सब आशायें बिलकुल छोड़ चुके थे। स्पेनिश लोग उनसे विद्या बुद्धि और शरीरमें अधिक बलवान् थे, वे उन्हें युद्धमें पराजित करके अपने देशसे नहीं निकाल सकते थे, इस लिए उन्होंने उन्हें अन्नके बिना भूखों मारना सोचा। उन लोगोंका विश्वास था कि स्पेनवाले भोजन बहुत करते हैं, यदि अन्न न मिलेगा तो उनकी अक्ल ठिकाने आ जायगी। यह सोच कर उन्होंने खेतीका सारा कामकाज बंद कर दिया। मक्का बोना बंद कर दिया और खेतोंमें जो कंदमूल थे उन सबको भी उखाड़ डाला। इस प्रकार खेतीका नाश करके वे लोग पहाड़ोंमें जा छुपे। बस्तियाँ छोड़ दीं। इससे स्पेनवालोंको थोड़ा तंग जरूर होना पड़ा, पर अधिक हानि इन्डियन लोगोंकी ही हुई। जिस समय स्पेन वालोंको भोजनका कष्ट होने लगा, उस ही समय स्पेनसे खानेके सामानका एक जहाजी बेड़ा आ गया और इस प्रकार वे तो अधिक कष्टसे बच गये, पर इन्डियन लोगोंके लिए नीचे पृथ्वी और ऊपर शून्य आकाशके सिवाय और कुछ न था। उन बेचारोंको केवल जंगली फलोंपर दिन काटने पड़े। उनके कष्टोंका अन्त यहीं नहीं हुआ, पहाड़ोंकी खोहोंमें रहनेके कारण उनमें अनेक संक्रामक रोग फैल गये और वे रोग और भूखके मारे पटापट मरने लगे। कुछ महीनेमें ही एक तिहाईसे अधिक द्वीपवासी मर गये।

जिस समय कोलम्बस पश्चिमी महाद्वीपमें स्पेनवालोंके अधिकार बढ़ा रहा था, उसी समय स्पेन देशमें उसके शत्रु उसके अवर्णनीय दुःखोंसे पैदा किये हुए यश और मर्यादाको नाश करनेकी पूरी चिन्तामें थे। जो धन और गौरव उसे मिलनेवाला था उसे उसके हाथसे गिरवा देना ही उनका उद्देश था। अनजान देशोंमें राज्य स्थापित करते समय जिन दुःखोंका होना अनिवार्य था, नासमझी उद्धतता और ऋतुविपर्ययसे जिन क्लेशोंका भोगना अवश्यम्भावी था, कोलम्बसके शत्रुओंने उन सबका दोष कोलम्बसके ही सिर मँढ़ा। वे लोग कहने लगे कि इन सब दुःखोंका मूल कारण केवल कोलम्बसका अविचार और अतिशय लोभ है। उसने तो लोगोंको बड़ी चतुराईसे अपने अधीन कर रक्खा था, पर उसके शत्रु कहते थे वह बड़ी सख्ती और निर्दयतासे काम लेता है। जो लोग बलवा करनेके लिए तैयार होगये थे उन्हें कोलम्बसने यथोचित दण्ड दिया था, इसी बातको उठाकर उसके शत्रु कहते थे कि वह बड़ा ही क्रूर है। जब स्पेनका दरबार कोलम्बसकी शिकायतोंसे गूँज उठा, तब दरबारसे कुछ व्यक्ति एक प्रधानकी मातहातीमें इस विषयकी अच्छी तरह जाँच पड़ताल करनेके लिए नियत हुए। उक्त प्रधान व्यक्ति वास्तवमें इस कामके योग्य ही न था, पर मालूम होता है कोलम्बसकी बुराई करनेवालोंमें प्रधान रहनेके ही कारण

वह चुना गया था। कोलम्बसके विरुद्ध जितनी भी सच्ची-झूठी शिकायतें आती थीं, उन सबको वह बड़ी सावधानीसे संग्रह करता था। उसने कोलम्बसके साथ गये हुए बहुतसे स्पेनवालों और इन्डियनोंको सिखा-पढ़ाकर उनसे झूठी झूठी तुहमतें भी उस पर लगवाईं। कोलम्बसकी शासन-व्यवस्थाकी उसने खूब ही निन्दा की, पर उन टापुओंमें खुद उसने और उसके साथियोंने जो गलतियाँ कीं और केवल उन्हींके कारण वहाँ जो अनेक झगड़े पैदा हुए, उनका जिक्र भी नहीं किया। कोलम्बस बुद्धिमान् और दीर्घदर्शी था। उसने सोचा कि मेरी जाँच करनेका काम एक प्रकारसे मेरे ही शत्रुओंको दिया गया है। यदि मैं इनके रहते यहाँ रहा तो सम्भव है कि मेरी मानहानि हो। इसलिए उसने स्पेन जानेका और वहाँ पहुँच कर राजा-रानीके सामने ही अपनी निर्दोषता प्रमाणित करनेका निश्चय कर लिया। उसने अपने भाई बार्थोलोमेओको तो वहाँके अधिकारीका पद दिया और फ्रेंसिस रोल्डेनको मुख्य न्यायाधीश बनाया। यह न्यायाधीश पीछेसे अयोग्य साबित हुआ और इसीके कारण वहाँके निवासियोंको विशेष कष्ट पहुँचा।

इस बार योरप पहुँचनेके लिए कोलम्बसने दूसरा रास्ता पकड़ा। बाईसवें अक्षांशवृत्तमें पहुँचकर उसने अपने जहाजका रुख पूर्व दिशाकी ओर कर दिया। उस समय तक यह बात

किसीको मालूम न थी कि उत्तरकी ओर जहाज चलानेसे नैर्ऋत्य वायुमें मार्ग सुगमतासे कटता है । उष्ण कटिबंधमें जो एकसार पूर्वी हवा चला करती है वह निरंतर कोलम्बसकी बाधक बनी रही । इस मार्गमें सदैव उसे अपनी बुद्धि लगाकर जहाजको विपत्तियोंसे बचाना पड़ता था । उस समय तक पश्चिमी द्वीपोंके साथ जलमार्गसे व्यवहार शुरू ही हुआ था और किसीको भी इधरकी वायु और समुद्रका अनुभव न था, इस लिए कोलम्बस पर नासमझीका धब्बा नहीं आ सकता । इस यात्रामें कोलम्बस पर बड़ी बड़ी आपत्तियाँ आईं, पर अपने स्वाभाविक धैर्य और दृढतासे वह आगे बढ़ता गया । तीन महीने तक उसे किनारा नजर न आया । अन्तमें खाद्य पदार्थ भी बीतने पर आगये । हरएक मनुष्यको दिन भरमें केवल तीन छटाक भोजन तौल कर दिया जाने लगा । स्वयं कोलम्बस भी इतना ही भोजन करता था । कई मल्लाहोंने कोलम्बससे कहा कि, साथमें जो द्वीपवासी इंडियन लोग हैं, वे यदि मारकर समुद्रमें डाल दिये जायँ तो बाकी खाद्य पदार्थ हमारे लिए अधिक दिनोंतक चल सकते हैं । पर कोलम्बस बिलकुल ही दयाहीन न था । उसने साथियोंके इस अमानुषी प्रस्ताव पर ध्यान न दिया । उसने कहा,—जैसे मनुष्य हम हैं वैसे ही ये भी हैं । जैसी दशामें हम आगये हैं वैसीहीमें ये भी हैं—हमारा इनका

सुखदुःख समान है। कोलम्बसकी दृढ़ता और तत्परतासे उसके साथियोंके क्रूर विचार जाते रहे और कुछ दिनोंके बाद ही स्पेन देशका किनारा दीख पड़ा जिससे सब प्रसन्न होगये और परमात्माको धन्यवाद देते हुए स्पेनकी भूमि पर उतर पड़े।

कोलम्बस एक सच्चे और विश्वासी कर्मचारीकी तरह निर्भीकतापूर्वक दरवारमें उपस्थित हुआ। राजा और रानीने कोलम्बसके विरुद्ध छोटी छोटी वातोंको भी सच मान लिया था; पर जब निर्भीक, विश्वस्त और प्रामाणिक कोलम्बसकी मूर्ति सामने आ खड़ी हुई तब वे शरमिंदा होगये, उन्होंने उसका इतना अधिक सम्मान किया कि उसके शत्रु भी निन्दा करनेसे हिचकने लगे। कोलम्बसके दुश्मनोंने पहलेसे ही यह अफवाह उड़ा रक्खी थी कि वह नया देश अत्यन्त दरिद्र है और कोलम्बस केवल खजाना खाली करवानेके लिए ही वहाँ गया है। पर जब कोलम्बसने उन देशोंसे लाई हुई सोना, मोती आदि चीजें राजारानीके सामने रख दीं तब सब अपने आप नीचेकी ओर देखने लगे। कोलम्बसने बतला दिया कि मैंने स्पेन देशके राज्यका विस्तार किया है और यह साबित कर दिया है कि भविष्यमें इन देशोंसे आशासे अधिक आमदनी होने लगेगी।

रानीने जब इन बातों पर विचार किया तब उसका कोलम्बस पर विश्वास जम गया, साथ ही अपने आपको आश्रय-

दाता समझ कर उसे और भी अधिक प्रसन्नता हुई। राजाको भी पहले विश्वास न था कि कोलम्बसकी बात पूरी होगी, पर इतनी अधिक सफलता देखकर वह भी सन्तुष्ट हो गया। इसका फल यह हुआ कि राजा-रानीने हिस्पान्योलामें राज्य स्थापित करनेके लिए सारा आवश्यक सामान भेजनेका और कोलम्बस पृथ्वी पर जिन जिन देशोंका होना और मानता था उनकी खोजमें उसे यथेष्ट सहायता देनेका निश्चय कर लिया। इन दोनों बातोंकी पूर्तिके लिए उन्होंने कोलम्बससे सम्मति ली। पश्चिम महाद्वीपकी ओर जो पहली यात्रा की गई थी उसका हेतु यही था कि पृथ्वी पर और भी देश हैं या नहीं, यह पता लगाया जाय। दूसरी यात्रा वहाँ राज्य स्थापित करनेके इरादेसे की गई, पर स्पेनिश लोगोंकी मूर्ख और आलसी प्रकृतिके कारण वह पूरी न हुई। अब विचार करने योग्य बात यही सामने आई कि वहाँ कैसा राज्य स्थापित किया जाय। सब बातोंका विचार करके निश्चय किया गया कि सब पदवियों और पेशोंके लोग वहाँ जावें और साथ ही अपनी स्त्रियोंको भी ले जावें। अन्नके कारण कष्ट न हो, इस लिए बहुतसे योग्य किसान भी तैयार किये गये। जो कारीगर सोने और चाँदीको शुद्ध कर सकते थे वे भी भेजे गये। यह भी निश्चय

हुआ कि जो लोग पश्चिमी द्वीपोंमें जावें उन्हें कुछ वर्षों तक सरकारकी ओरसे कुछ मुसाहरा भी मिलेगा।

इस प्रकार राजा-रानी कोलम्बसके कहनेके अनुसार चलने लगे और उसके शत्रु सूर्यके सामने जुगनूकी तरह छिप गये। अब कोलम्बसकी नये देश बसानेकी नीतिके अनुसार काम होने लगा।

पाँचवाँ अध्याय।

पश्चिमी क्षितिज पर।

विपदि धैर्यमथाभ्युदये क्षमा
सदसि वाक्पटुता युधि विक्रमः।
यशसि चाभिरुचिर्व्यसनं श्रुतौ
प्रकृतिसिद्धमिदं हि महात्मनाम्॥

संसारमें जिन्हें जीवनके मीठे फल खानेको मिलते हैं वे भले और भाग्यवान् समझे जाते हैं और जो कर्त्तव्यके कँकरीले रास्ते पर परिश्रमकी डोरके सहारे निरन्तर चले जाते हैं और जिन्हें जीवनके दुःखरूप कटुक फल खाना पड़ते हैं उनका नाम संसार अपनी कठोर कलमसे दुखियोंकी श्रेणीमें लिख लेता है। पर संसारका यह विवेचन अर्थशून्य है। वास्तवमें आजीवन परिश्रमके सहचर रहनेवाले ही महात्मा और वैदिक भाषामें ऋषिके नामसे पुकारे जाने योग्य होते हैं। योरपका उपकार करनेवाला कोलम्बस इसी श्रेणीका पुरुष था। वह महात्मा था और उसके जीवनका मूलमत्र **'कार्यं वा साधयामि शरीरं वा पातयामि'** था। इसी मूलमंत्रको लेकर वह अपने जीवनके प्रारम्भसे अन्त तक कभी भयानक समुद्रकी लहरोंमें, कभी जहाँ सभ्य मनुष्योंके पैर नहीं पड़े उन प्रदेशोंमें, कभी दूसरेकी बढ़ती न देख सकनेवाले षड्यन्त्रकारियोंके बीचमें और कभी तीखी राजनीतिका जाल फैलानेवालोंमें,—अटल अविचल भावसे अपने मूलमंत्रका

पाठ करता हुआ दीखता है। घोर विपत्तिके समय उसमें धैर्यकी नदी बहती दीखती है, अधिकारोंको हाथमें पाकर भी वह क्षमा करना जानता है, राजसभामें वह निर्भीकता और नीतिमत्तासे बोलता है, युद्धमें वह पराक्रम दिखलाता है, यश उसकी प्यारी चीज है, नये देशोंकी खोजके व्यसनके सिवाय अन्य किसी व्यसनमें हमने उसे कभी फँसा हुआ नहीं पाया—महात्माओंमें स्वभावतः रहनेवाले ये सब लक्षण उसमें वर्तमान हैं। स्पेन आकर कोलम्बसने सबको सन्तुष्ट कर दिया। राजा-रानी प्रसन्न हो गये और उसके विरोधियोंको चूँ-चरा करनेका अवसर ही न मिला। अब नये द्वीपोंमें राज्य स्थापित करनेका विचार और तदनुसार काम भी होने लगा।

नये द्वीपोंकी हवा स्पेनवालोंको बीमार कर देती थी, उनमेंसे अधिकांश लोग रोगशय्यापर पड़ जाते थे, इसलिए कोलम्बसने सोचा कि यदि स्पेनके जेलखानोंसे अधिक समयकी सजा भोगनेवाले और मृत्युका दण्ड पानेवाले लोग वहाँ भेजे जायँ और खानों पर उनसे काम कराया जाय तो बहुत सुभीता होगा। उसने अपना यह विचार दरबारमें प्रकट किया और सबने बिना अच्छी तरहसे सोचे समझे ही इसको पसन्द कर लिया। उसी समय यह नियम बन गया कि फौजदारी जुर्ममें सजा पाये हुए लोग नये द्वीपोंमें भेजे जायँ। वास्तवमें नवीन

राज्य स्थापित करनेके लिए सबसे पहले स्वार्थत्यागी, परिश्रमी, उदार, सदाचारी, परस्पर प्रेम करनेवाले और धीर वीर मनुष्योंको चुनना चाहिए था। जो काम सर्वथा उत्तम गुणवाले मनुष्य ही कर सकते हैं उसको चोरों, डाकुओं, लुटेरों, गिरहकटों और बदमाशोंसे प्रारम्भ करवानेमें स्पेन राज्यने बहुत ही बड़ी गलती की। इस गलतीका परिणाम बहुत ही खराब निकला और योरपके अन्यान्य उपनिवेश स्थापन करनेवाले राज्योंने इससे अच्छी शिक्षा ग्रहण की– वे सावधान हो गये। स्पेनवालोंने जहाँ जहाँ इन सजा पाये हुए लोगोंको बसाया वहाँ वहाँ उन्हें बड़ी बड़ी आपत्तियोंका सामना करना पड़ा।

कोलम्बसने राजा-रानीसे नवीन राज्यके विषयमें जो जो नियम बनानेको कहे वे उन्होंने स्वीकार तो कर लिये; किन्तु उनके बनानेमें इतनी देर की गई कि यदि और कोई होता तो वह कभी अपने धैर्यको स्थिर न रख सकता। एक तो स्पेनवालोंकी आदत ही एक दिनके काममें दस दिन लगा देनेकी थी, दूसरे इसी अवसर पर वहाँके युवराजका विवाह आस्ट्रियाकी राजकुमारी मार्गारेटसे और राजकुमारी जेअन्नाका विवाह आस्ट्रियाके आर्क डयूकसे हुआ था, इस कारण सरकारी खजाना खाली हो जानेसे उसी समय इस नये खर्चका प्रबन्ध नहीं हो सकता था। पर कहा जाता है कि वास्तवमें

इस विलम्बका मुख्य कारण उसके शत्रु ही थे। राजारानीको कोलम्बसका स्वागत करते देखकर उसके शत्रुओंकी डाह और भी बढ़ गई थी। वे फिरसे षड्यन्त्र रचने लगे थे। उस समय 'इंडीज' द्वीपोंके मंत्रीका पद फोंसेका नामके एक धर्माध्यक्ष या पादरीको दिया गया था। षड्यन्त्रकारियोंने इसी फोंसेकासे मिलकर कोलम्बसके काममें अत्यधिक देर करवाई। द्वीपनिवासी स्पेनवालोंके लिए कुछ खाने-पीनेका आवश्यक सामान भेजना था। इस सामानको लेजानेवाला जहाज बड़ी कठिनाईसे एक वर्षमें मिला और आगेकी खोज करनेके लिए जो जहाजी बेड़ा आवश्यक था, वह तो उसे दो वर्षमें मिलसका।

इस बेड़में छोटे छोटे केवल छः जहाज थे, जो इतने लंबे और भयानक सफरके लिए बहुत ही अकिंचित्कर थे, और उनमें जितना आवश्यक सामान चाहिए वह भी पूरा न था। पर कोलम्बसके जीवनकी बड़ी भारी विशेषता यही है कि वह हताश होना नहीं जानता था, उसने इन अधूरे सामानवाले--थोड़ेसे जहाजोंके भरोस ही अपनी यात्रा शुरू कर दी। उसका ध्यान और उद्देश यही था कि मैं हिंदुस्थानको खोज निकालूँ। उसका विचार दृढ हो गया था कि सोनेके लिए और उपजाऊ भूमिके लिए प्रसिद्ध हिन्दुस्थान मेरे खोजे हुए द्वीपोंसे नैर्ऋत्य दिशाकी ओर है। इसलिए उसने बिचार किया कि कानेरी

टापुओंसे विषुवत्वृत्त तक सीधे दक्षिण जाकर उष्ण कटिबंधमें जो एकसार हवा चलती रहती है उसकी सहायतासे हिन्दुस्थान पहुँचा जा सकेगा। इसी विचारके अनुसार यात्रा प्रारम्भ करके वह कानेरी टापुओंमें आया। यहाँसे तीन जहाज उसने हिस्पान्योलाकी ओर रवाने कर दिये और बाकी तीनको अपने साथ लेकर उसने सीधी दक्षिणकी यात्रा की। विषुवत्-वृत्तसे पाँच अंश दूर रहनेतक तो कोई उल्लेख योग्य घटना न हुई, पर इस स्थानसे आगे बढ़ते ही हवा एकदम बंद हो गई और इतनी कड़ी गरमी पड़ने लगी कि शराबके पीपे फट गये। उस समय तक योरपवालोंमेंसे किसीने भी उष्ण कटिबंधकी ओर इतनी लंबी यात्रा न की थी; उन्होंने केवल कहानियाँ ही सुन रक्खी थीं कि उष्णकटिबंधमें आग बरसा करती है। इतनी त्रासदायक गरमी देखकर स्पेनिश नाविक डरने लगे कि कहीं जहाज ही भस्म न हो जाय। पर दो एक दिनमें ही बड़े जोरका पानी बरसा और उनका डर बहुत कुछ दूर हो गया। यह पानी इतने जोरसे बरसा कि नाविक जहाजकी छत पर ठहर न सके, और इससे गरमीका जोर बहुत ही कम हो गया। कोलम्बसकी यह आदत थी कि यात्रा प्रारम्भ करनेके बाद वह हरएक कामको स्वयं देखा करता था और नवीन यात्रामें तो वह चौबीसों घंटे जहाजके अगले भाग पर खड़ा

होकर सारे परिवर्तनोंकी जाँच किया करता था। निरन्तरके इस परिश्रम और अधिक जागरणके कारण उसे बुखार आने लगा। उधर नाविक लोग भी उकता गये थे; बहुत दिनोंसे न देखी हुई पृथ्वीके लिए वे तड़-फड़ा रहे थे। उन्होंने इस समय कोलम्बससे दिशा बदल देनेके लिए बहुत आग्रह किया और अशक्त होनेके कारण उसने भी उनकी बात मानली। जहाजोंकी गति वायव्य कोणकी ओर की गई और निश्चय किया गया कि किसी टापूमें उतर कर जहाज दुरुस्त किये जायँ और कुछ समय तक विश्राम किया जाय।

जो व्यक्ति जहाजके अग्रिम भाग पर नियत किया गया था, वह अगस्त मासकी पहली तारीखको प्रसन्नतासे 'जमीन, जमीन' पुकार उठा। उसी ओर जहाज चलाये गये और वे एक बड़े टापूके किनारे जा पहुँचे। इस टापूका नाम कोलम्बसने 'ट्रिनिडाड' रक्खा और वह अब भी इसी नामसे पुकारा जाता है। यह टापू गिआनाके निकट ओरिनोको नदीके मुँह पर है। दक्षिण अमेरिकामें इससे अधिक बड़ी कोई नदी नहीं है। इस नदीका पानी समुद्रमें बड़े जोरसे मिलता है और उसकी धारा मीलों तक न्यारी बहती जान पड़ती है। इसी कारण कई मील तक समुद्र मीठा होजाता है। उस समय तक सभ्य मनुष्योंके चरण कभी उस ओर न पड़े थे। अनजान कोल-

म्बसके जहाज भी नदीकी धारामें पड़ गये। उसने बड़ी कठिनाई और परिश्रमसे अपने जहाजोंको बचाया। इसी कारण इस धाराका नाम उसने 'अजगरका मुँह' रक्खा। जब जहाजोंकी रक्षा हो गई तब उसने जमीनकी स्थिति और लक्षणों पर विचार किया तो उसका हृदय आनन्दके मारे नाचने लगा। सबसे पहले उसने विचार किया कि इतनी बड़ी और वेगवाली नदी किसी छोटे मोटे टापूसे नहीं निकल सकती, यह जरूर सैकड़ों कोस लंबे चौड़े देशसे आई है। अतः जिस हिन्दुस्थानको खोजनेकी चिन्ता मुझे अपने जीवनमें सबसे अधिक रही है, वह जरूर इसके आसपास ही होगा। पर यह उसका भ्रम था, वास्तवमें वह दक्षिणअमेरिकाके समीप पहुँचा था। उसने बड़ी प्रसन्नतासे दक्षिणकी ओरके किनारेके सहारे अपने जहाजोंको चलानेकी आज्ञा दी। आगे चलकर कई स्थानों पर उसे भद्दी शकलवाले मनुष्योंकी बस्तियाँ मिलीं। बहुत जगह उतर कर कोलम्बस उनसे मिला। उन लोगोंकी चालचलन और आकृति आदि बातें हिस्पान्योलावालोंके ही समान थीं। सोनेके पत्तर और बड़े बड़े कीमती मोती वे गलेमें पहनते थे। इन कीमती चीजोंको देकर उन भोले लोगोंने योरपवालोंसे चमकते हुए रंगीन काचके टुकड़े बड़ी प्रसन्नतासे ले लिये। आसपासके टापूवालोंसे इनमें कुछ विशेष बुद्धि और शौर्य देखा

गया। वहाँ नानाप्रकारके सुन्दर और मनोहर पक्षी थे और भाँति भाँतिके लुभावने और रसाल फल होते थे। वहाँके प्राकृतिक सौन्दर्यको देख कर एक बार कोलम्बसके मनमें हो आया कि ईसाई धर्मपुस्तकमें जिस स्वर्गका वर्णन किया गया है वह सम्भवतः यही है। कोलम्बसने इस नये देशका पता लगा कर कोरी कीर्ति ही नहीं कमाई, बल्कि उसने मनुष्यजातिके अनुभवको बहुत अधिक बढ़ाया। पृथ्वीके इस बड़े भारी खंडके खोज निकालनेसे स्पेनवालोंके राज्यमें बहुत बड़ी पृथ्वी शामिल हो गई और इससे स्पेनको अतुल्य धन मिला। कोलम्बसके मार्गमें एक एक पैर पर बाधा, विघ्न और आपत्तियाँ थीं। उसे इस महाप्रदेशको खोज कर अपार हर्ष हुआ था। वह अधिक खोज करना चाहता था, पर विघ्नोंके कारण उसे वापिस हिस्पान्योला लौटना पड़ा। उसके तीनों जहाज खराब होगये थे, भोजनसामग्री बीत चुकी थी और मल्लाह तथा साथके आदमी निरन्तर पानीमें रहते रहते घबरा उठे थे। इसी कारण वह वापिस फिरा। रास्तेमें उसे मार्गारीटा टापूका पता लगा। यहाँ मोती अधिक होते थे, इसलिए पीछे यह इसी नामसे विख्यात हुआ। जब हिस्पान्योलामें कोलम्बस आया, तब उसका शरीर बहुत ही खराब होगया था और उसके लिए शान्ति और विश्रामकी अत्यधिक आवश्यकता थी। पर उसकी

अनुपस्थितिमें वहाँका राजकार्य बिगड़ गया था; जो जिसके मनमें आता था सो करता था—इसलिए उसे विश्रामके लिए एक दिन भी न मिला, तत्काल ही वहाँकी व्यवस्था सुधारनेमें लग जाना पड़ा ।

जब कोलम्बस वापिस हिस्पान्योला आया तब उसे मालूम हुआ कि वहाँ बहुत कुछ लौट-फेर होगया है । जाते समय वह अपने भाईको सलाह दे गया था कि इसाबिल्लासे शहर उठाकर टापूके सामनेवाली जमीन पर बसाना ठीक होगा । इसी सलाहके अनुसार उसके भाईने एक विशाल जगह तलाश करके उसमें सेंट डोमिंगो नामक नगर बसा दिया था । पश्चिमी दुनियामें यह नगर बहुत समय तक प्रसिद्ध रहा है । यह स्पेनकी कचहरियोंका मुख्य स्थान बन गया था । जिन टापुओं और बस्तियोंमें कोलम्बस अब तक न जासका था उनको भी अपने ताबेमें लानेके लिए कोलम्बसके भाईने चढ़ाई की थी । इसमें दो हेतु थे, एक तो पश्चिमी द्वीपोंमें राज्य स्थापित करना और दूसरा यह कि यदि स्पेनवाले निठल्ले रहेंगे तो आपसहीमें कलह करेंगे, इस लिए उन्हें लड़ाईके काममें लगाये रखना अच्छा होगा । वहाँके मूर्ख निवासियोंमें इनका सामना करनेकी शक्ति न थी । उन्होंने अधीनता मानकर कर देना स्वीकार कर लिया; पर वह कर इतना अधिक था कि यद्यपि स्पेनिश लोगोंके

शस्त्रोंसे उन्हें मृत्युके समान भय लगता था, फिर भी कुछ समयके अनन्तर वे खुल्लमखुल्ला लड़नेके लिए तैयार हो गये। पर इस लड़ाईमें विजय पाना स्पेनवालोंके लिए कुछ भी कठिन न था; क्योंकि वृक्षोंकी छाल लपेटनेवाले निरीह प्राणी वास्तवमें जिसे युद्ध कहते हैं उसे जानते ही न थे।

कोलम्बस अपने भाईको मंत्री बना गया था और फ्रेंसिस रोल्डन नामक एक व्यक्तिको शान्तिरक्षक। जिस समय कोलम्बसका भाई द्वीपनिवासियोंसे युद्ध करनेकी चिन्तामें लीन था उस समय फ्रेंसिस रोल्डन बलवा करनेके ध्यानमें था। लोभसे अंधा बनकर वह अपनी पदवीसे विरुद्ध काम करनेको तैयार होगया। अपने लालची साथियोंको अपनी ओर करनेमें उसने उन्हें जैसी दलीलें और युक्तियाँ दीं वे सब निर्बलता और अदूरदर्शितासे भरी थीं। कोलम्बसके भाईके विरुद्ध भड़काते हुए उसने स्पेनवालोंसे कहा, यह कठोर प्रकृति और निर्दय है और यहाँ अपना स्वतंत्र राज्य स्थापित करना चाहता है; साथ ही हममेंसे बहुतोंको भूखे मार देना भी इसका उद्देश है। उसने यह भी कहा कि, एक दीन जनेवावालेके नीचे गुलामकी तरह अधीन रहना हम कास्टिलियन लोगोंके लिए शरमकी बात है। स्पेनिश लोगोंका यह विश्वास तो हो ही रहा था कि हम पर जो दुःख और आपत्तियाँ आई हैं वे सब हमारे ऊपरवाले अधिकारीकी ही करतूतके कारण आई हैं,

इसके ऊपर रोल्डनकी शिक्षा भी अपना असर कर गई। अन्तमें बहुतसे स्पेनिश लोगोंने रोल्डनको अपना सरदार बना लिया और बादशाहके प्रतिनिधिके विरुद्ध बलवा कर दिया। बलवाइयोंने भंडारघर पर कब्जा कर लिया और सेंट डोमिंगोके किले पर धावा बोल दिया। पर कोलम्बसके भाईकी बुद्धि-मत्तासे इस किलेकी रक्षा हुई। अब बलवाई असन्तुष्ट होकर द्वीपनिवासियोंसे कहने लगे कि तुम लोग स्वाधीन होजाओ

जिस समय कोलम्बस अपनी यात्रासे अस्वस्थ होकर हिस्पान्योला वापिस आया उस समय वहाँकी यही दशा थी। जिन तीन जहाजोंको उसने कानेरी टापुओंसे यहाँ भेजे थे वे अभी तक न आये थे, इस कारण उसे और भी अधिक चिंता हो रही थी। उन जहाजोंमें कोई सुचतुर नेता न था, इसलिए पानीके बहावमें पड़कर वे जहाज सेंट डोमिंगोसे १६ मील पश्चिमकी ओर चले गये थे। वहाँ रोल्डन और उसके बलवाई साथियोंका अड्डा था। रोल्डनने बड़ी सावधानीसे जहाजवालोंसे बलवेकी बात छिपाई और खुश्कीके रास्तेसे सेंट डोमिंगो जानेका विचार प्रकट करके उनका विश्वास अपने ऊपर करवा लिया और उनमेंसे बहुतोंको अपने साथ ले लिया। इन लोगोंको बलवाई बना डालनेमें रोल्डनको अधिक श्रम न करना पड़ा। क्योंकि ये लोग स्पेनके जेलखानोंसे छूटे हुए

चोर, उठाईगीरे, डाकू और बदमाश थे। इन लोगोंको दुष्टता सिखानेकी आवश्यकता न थी; क्योंकि ये स्वयं दुष्टताके प्रमाण और उदाहरण थे, इसलिए इन लोगोंने बड़ी प्रसन्नताके साथ रोल्डनको सहायता देना स्वीकार कर लिया। जहाजोंके अध्यक्षोंको इतने आदमियोंके उतार देनेकी गलती अब समझमें आई। आखिर वे बचे खुचे कुछ आदमियोंको लेकर सीधे सेंट डोमिंगोकी ओर चल दिये और कोलम्बसके वहाँ पहुँचनेके कुछ दिन बाद ये भी वहाँ जा पहुँचे। बलवाइयोंके साथ कैदियोंके मिल जानेसे उनकी शक्ति और भी बढ़ गई और अब वे द्वीपनिवासियोंको अधिकाधिक बहकाने लगे।

रोल्डनके विश्वासघातका और कैदियोंकी कृतघ्नताका खयाल करके कोलम्बसको बड़ा गुस्सा आया,– पर इस गुस्सेमें भी उसने जल्दीसे लड़ाई शुरू न की। दूरदर्शी कोलम्बसका खयाल था कि यदि दोनों पक्ष युद्ध करेंगे तो दोनोंहीकी शक्ति इतनी कम होजायगी कि फिर वे साधारण शत्रुका भी सामना करने योग्य न रहेंगे। इस आपसकी लड़ाईके भयंकर परिणामको सोच कर कोलम्बसका साहसी हृदय हिल उठा। कोलम्बसने यह भी लक्ष्य कर लिया कि मेरे बिरुद्ध बलवाइयोंको शस्त्र उठाये देखकर मेरे पक्षवालों पर भी इसका बुरा असर हुआ है और इनमेंसे भी अधिकांश लोग मेरे विरुद्ध हैं। अपने आपको

ऐसी संकटकी स्थितिमें पड़ा हुआ देखकर कोलम्बसने भविष्यके कल्याणकी आशासे बलवाइयोंसे लड़ाई करनेकी अपेक्षा सुलह करना अच्छा समझा । उसी समय कोलम्बसने एक विज्ञापन निकाला कि जो बहकावटमें आकर बलवाई बने हैं, यदि वे ईमानदारीसे फिर अपने काम पर आना चाहें तो उन्हें माफी मिल सकती है । इसका असर अच्छा हुआ । जो बीमारीसे या और किसी सबबसे वापिस स्पेन जाना चाहते थे उनसे कोलम्बसने वापिस भेजदेनेका वादा किया । लोगोंने अपने लिए जो जो अधिकार माँगे यथासम्भव सब उन्हें दिये गये और रोल्डनको उसके पहले ओहदे पर बहाल कर दिया—इससे सब शान्त होगये । इस प्रकार सबको शान्त करके कोलम्बसने फिरसे नये नियमोंकी रचना की ।

नये नियमोंके अनुसार बलवाइयोंको टापूके भिन्न भिन्न भागोंमें जमीनें दी गईं और इन भूस्वामियोंकी जमीन जोतने बोनेके लिए उन स्थानोंके द्वीपनिवासियोंके कर माफ किये गये । रोगी और निर्बल संस्थानमें ऐसे नियम बनानेकी चाहे जितनी आवश्यकता हो, किन्तु आलसी स्पेनवालोंके लिए ये नियम बहुत बुरे निकले । द्वीपनिवासियोंको बड़े दुःख हुए और उन पर अन्याय भी असीम हुआ । इसके सिवाय बलवेके और भी बहुतसे बुरे परिणाम निकले । बलवेके कारण

कोलम्बसको फिरसे सुव्यवस्था स्थापित करनी पड़ी । इस अवसर पर प्रत्येक समय उसकी जानका खतरा था, इसी लिए वह अपने भाई और विश्वासी नाविकोंको नवीन खोजके लिए न भेज सका। इन सब कामोंसे अवकाश मिलते ही कोलम्बसने खाली जहाजोंको स्पेन वापिस रवाना किया और पत्रमें अपनी यात्राका पूरा विवरण, एक नये बड़े भारी महाप्रदेशके खोजनेका शुभ संवाद और वहाँके लोगोंसे जो हीरे मोती मिले थे उनके नमूने आदिके सहित लिख भेजा। साथ ही हिस्पान्योलाके बलवेके हाल भी उसमें लिख दिया। उसने यह भी लिखा कि बलवाई लोगोंने नवीन राज्यमें बलवा करके मेरी जान आफतमें डालनी चाही थी, उन्होंने मुझे विवश करके ऐसे नियम बनवाये हैं। यद्यपि यह बलवा उनके अनुकूल नियम बना देनेसे दब गया है, पर भविष्यमें उससे भी अधिक जोरका बलवा हो सकता है। इसलिए दरबारको इस विषयमें विचार करना चाहिए। इसी जहाजमें रोल्डन और उसके पक्षवालोंने भी अपने आपको दूषणसे बचानेके लिए और कोलम्बस और उसके भाईको दोषी साबित करनेके लिए अनेक पत्र लिखकर भेजे थे। स्पेनके दरबारमें जो कोलम्बसके शत्रु थे, उन्होंने रोल्डनके पक्षका खूब समर्थन किया।

उक्त पत्रोंके परिणामकी कथा लिखनेसे पहले हमें इस पश्चिमी महाद्वीपके सम्बन्धकी कुछ ऐतिहासिक बातें लिखनी आवश्यक

प्रतीत होती हैं। जिस समय कोलम्बस स्पेनवालोंकी सहायतासे पश्चिमी द्वीपोंकी खोज करने निकला था, उस समय पोर्च्युगीज लोगोंका उत्साह—जो पहलेसे ही खोजके प्रेमी थे—कुछ कम न था। कोलम्बसने पहले पोर्च्युगीज लोगोंसे सहायता माँगी थी, पर उन्होंने उसकी बातको हँसीमें उड़ा दिया था। अब जब कोलम्बसकी योजना सच निकली तो उन्हें इसके लिए बड़ा पछतावा हुआ। पर उनमें उच्च मानवी गुण थे, इस लिए वे कोरे पछतावे या ईर्षामें समय खोनेकी अपेक्षा कोलम्बससे अधिक काम करके संसारको दिखाना चाहते थे। इस देशका राजा इमानुएल बड़ा साहसी और चतुर था। सिंहासन पर बैठते ही इसने ‘ केप गुडहोप ’ के रास्तेसे हिन्दुस्थानको तलाश करनेका काम बड़ी सर गर्मीसे शुरू किया। सारे योरप भरमें यह बात मशहूर हो रही थी कि हिन्दुस्थान सोने और हीरे मोतियोंका देश है। वहाँसे सोनेका जहाज भर लानेके लिए हरएकके मुँहमें पानी भर आता था। इमानुएलने उस समयकी प्रथाके अनुसार एक छोटासा जहाजी बेड़ा तैयार कराया और उसका स्वामी ‘वास्को डि गामा’ को बनाया। यह पुरुष बड़े घरानेका, साहसी, गुणी और धीर वीर था। उस समय जहाजी विद्याकी इतनी तरक्की न हुई थी और समुद्री जानकारी भी लोगोंकी बहुत ही कम थी। वे बड़े बड़े देशोंको खोजनेके लिए छोटे छोटे बेड़े

भेजा करते थे। वास्को डि गामाका भी एक तीन जहाजोंका छोटासा बेड़ा तैयार हुआ। मौसिमी हवाके घटने बढ़नेके कारण एटलांटिक महासागर तथा आफ्रिका और हिन्दुस्थानके बीचवाला सागर कभी कभी बड़ा भयानक हो जाता है, यहाँ तक कि कभी कभी तो इन समुद्रोंमें जहाज चल ही नहीं सकते। उस समय हवाकी चालोंका ज्ञान बहुत ही कम था, इस लिए वास्को डि गामा उस मौसिममें रवाना हुआ जो यात्राके लिए बहुत ही खराब था। वह सन् १४९३ ई० की ९ वीं जुलाईको लिस्बनसे चला और सामनेवाली हवाके झोके खाता हुआ चार महीनेमें केप गुडहोप पहुँचा। उस समय वायु कुछ शान्त हो गई थी, इस लिए वह आसानीसे केप गुडहोपसे आगे बढ़ गया। इस समय तक योरपका कोई भी जहाज गुड-होपसे आगे न गया था। वास्को डि गामा अपने जहाजोंको आफ्रिकाके किनारे किनारे ईशान कोणकी ओर चलाने लगा। मार्गमें वह प्रत्येक बंदर पर ठहरता था। मेलिंडा बंदर पर वह अधिक ठहरा। यहाँ उसने जहाजोंको सुधारा। इस आफ्रिका खंडके प्रत्येक जगहके निवासी उसे असभ्य, जंगली और विद्या, कला, व्यापारके ज्ञानसे हीन मिले। उनके चेहरे मोहरे और नियम योरपवालोंसे सर्वथा भिन्न थे। वह जैसे जैसे वहाँसे आगे बढ़ता गया वैसे ही वैसे उसे खूबसूरत और सभ्य

मनुष्य मिलते गये। आगे चलकर उसे एशियाखंडके सुन्दर और विद्वान् मनुष्य मिलने लगे, जिनमें अधिकांश मुसलमान थे और जो व्यापार, शिल्प आदिमें यथेष्ट उन्नत थे। हिन्दुस्थानकी कारीगरीके नमूने भी उसे मिलने लगे। यह कारीगरी योरपसे कहीं अधिक उन्नत और उज्ज्वल थी। मेलिंडाके बंदरमें उसे कई हिन्दुस्थानसे गये हुए जहाज भी मिले। अब तो वह हर्षके मारे नाच उठा। यहाँसे एक मुसलमानको उसने रास्ता दिखानेके लिए अपने जहाज पर रख लिया। निदान रात दिन यात्रा करते हुए बास्को डि गामाके तीन जहाजोंका वह छोटासा बेड़ा सन् १४९८ई० की २२ वीं मईको भारतके मलबारके किनारे पर आ लगा। यह पहला दिन था जब योरपनिवासियोंके चरण हिन्दुस्थान पर पड़े थे। यहाँका वैभव, धन, सौन्दर्य, शिल्प, व्यापार, और यहाँके पशु, पक्षी, शहर, मेले, तमाशे, नदी पहाड़ और सुन्दर दृश्य देख कर बास्को डि गामाकी आँखें तृप्त होगईं। उसने जैसा कहानियोंमें सुना था यहाँका वैभव उससे कहीं अधिक पाया। वह यहाँसे १४९९ ई० की १४ वीं सितम्बरको वापिस लौटा। उसके देशवासियोंने हिन्दुस्थानकी चीजोंके नमूने देखे और इस उपकारके लिए वे उसके बहुत ही आभारी हुए।

इस प्रकार पन्द्रहवीं शताब्दीमें यूरोपियन जातिको जितनी पृथ्वीका ज्ञान हुआ उतनीका और किसी समयमें न हुआ था। एक

तो किसीको बहुत दूर तक जानेका साहस ही न होता था और यदि कोई साहस भी करता था तो विपत्तियोंके मारे उसे वापिस लौटना पड़ता था। जैसे जैसे नये नये देशोंका पता लगता गया वैसे वैसे साहस बढ़ता गया और लोग लम्बी लम्बी यात्रायें करने लगे। आफ्रिका खंडके किनारे पर केप डिवेर्ड और केप नोनके बीच केवल बारह अंशोंका अन्तर है। पर इन्हींके बीचकी यात्रा लगभग पचास वर्षोंमें शुरू हो पाई। विषुवत् वृत्तसे आगे दूसरे गोलार्द्धमें जानेमें लगभग तीस बरस लग गये। इससे आगे सात बरसमें पश्चिमी महाद्वीप अमेरिका-का पता लगा। पूर्वके अनजान समुद्रको पार करके सभ्य और सर्वतोधिक उन्नत हिन्दुस्थानका पता लगानेमे भी कुछ कम समय नहीं लगा। हिन्दुस्थानका पता लगनेके बाद योरप-वालोंका उत्साह सैकड़ों गुणा अधिक बढ गया— वे बड़े उत्साहके साथ इस देशसे व्यवहार बढ़ाने लग गये।

यह बात सत्य है कि सफलतासे उत्साह बहुत ही बढ़ जाया करता है। जब एक मनुष्य किसी काममें कामयाब होजाता है तब उसकी हिम्मत और अधिक काम करनेकी होती है। यह बात जैसी एक मनुष्यके विषयमें पूरी उतरती है वैसी ही एक जाति या एक देशके विषयमें भी। उस समय स्पेनके आदमी योरप भरमें आलसीपनके लिए मशहूर थे। उनका देश समुद्रके किनारे

पर था, तो भी वे समुद्री विद्याके जानकार न थे और व्यापार आदिमें तो वे सबसे ही पीछे थे। परन्तु कोलम्बसने उनके आलसीपनको उड़ा दिया। उसके कर्ममय पारसके संयोगसे स्पेनवालोंका आलस्यरूप लोहा बदल कर उद्योगरूप सोना बन गया। अब वे अपने अपने खर्चसे जहाज बनवा कर पृथ्वीके पृथक् पृथक् भागोंका पता लगानेके लिए तैयार होने लगे। स्पेन देशकी आमदनी अधिक न थी और उस पर कर्ज बहुत अधिक हो चुका था, इसलिए दरबारकी इच्छा थी कि प्रजामेंसे-ही यदि कुछ लोग इस कामके लिए तैयार हों तो अच्छा हो। जब कुछ साहसी लोगोंने अपने खर्चसे नये देशोंका पता लगा-नेकी इच्छा प्रकट की, तब राजा-रानीने उन्हें सहर्ष स्वीकारता दे दी। सबसे पहले 'एलेन्सो डि ओजेडा' नामक एक उत्साही पुरुषने नये देश खोजनेकी आज्ञा मागी। यह 'ओजेडा' कोलम्ब-सके साथ उसकी दूसरी यात्रामें गया था। इसकी साख अच्छी थी। महाजनोंने वादा कर लिया था कि यदि ओजेडाको देश खोजनेकी आज्ञा मिल जायगी तो हम उसे चार जहाज बनवा देंगे। पर वास्तवमें ओजेडाको पश्चिमी महाद्वीपकी ओर जानेकी आज्ञा देना स्पेन-दरबारका कोलम्बसके साथ विश्वास-घात करना था। राजा-रानीने जिन नियमों पर दस्तखत कर दिये थे उनका इस समय कुछ भी खयाल न किया गया। यह

ठीक है कि इसमें कोलम्बसके शत्रुओंका भी हाथ था; पर फिर भी राजा-रानीको कोलम्बसका एहसान इतनी जल्दी न भूलना चाहिए था। ओजेडाको रास्तेका पूरापूरा ज्ञान न था, इसलिए स्पेनके राजमंत्रियोंने कोलम्बसकी यात्राका विवरण—जो उसने लिखकर भेजा था—उसे सौंप दिया। एक मनुष्यके यशको छीनकर दूसरेको दे देनेके बराबर संसारमें कोई अन्याय नहीं है। एक मनुष्यके सिरसे यशका मुकुट उतार लेना उसे मार डालनेसे भी अधिक है। जिस स्पेन देशका कोलम्बसने असीम उपकार किया, उसी देशके निवासियोंने उसीके बनाये हुए नकशोंके अनुसार यात्रा करनेका ओजेडाको अधिकार दे दिया और उसे भेज भी दिया। कोलम्बस अमेरिकाके दक्षिणी किनारों पर जा आया था, पर काफी सामान न होनेके कारण अधिक आगे न जा सका था। किन्तु ओजेडा उसके नकशोंके आधारसे अमेरिकाकी प्रदक्षिणा कर आया। इससे लोगोंमें यह प्रसिद्ध हो गया कि ओजेडाने एक बड़े भारी देशका पता लगाया है।

इस यात्रामें एक अमेरिगो नामका पुरुष भी गया था जो फ्लोरैंस नगरका निवासी था। यह उस यात्रामें किस ओहदे पर था, इसका तो पता नहीं लगा, पर इसमें सन्देह नहीं कि वह समुद्रीविद्याका अच्छा जानकार था। सम्भवतः इसी कारण मल्लाह लोग उसकी बात मानते थे। यात्रासे लौटनेके बाद

अमेरिगोने अपनी यात्राका हाल अपने एक मित्रको लिख भेजा। यह बड़ा बातूनी और अभिमानी था, इसलिए अपने पत्रमें इसने ऐसा वर्णन किया जैसे इस महादेशको इसने ही तलाश किया है। यह वर्णन उसने बहुत ही मनोरंजक ढंगसे लिखा था और उसमें वहाँके आदमियोंकी रहन-सहन और वहाँकी उपज आदिका भी विवरण दिया था। लोगोंको नये देशोंके वर्णन पढ़नेका बड़ा चाव था, इसलिए इस पत्रका बड़ा आदर हुआ। लोगोंने समझा कि इस बड़े भारी देशका पता अमेरिगोने ही लगाया है, इसलिए उन्होंने उसका नाम अमेरिका रख दिया और धीरे धीरे वह अमेरिकाके ही नामसे प्रसिद्ध हो गया। इस चालबाज मनुष्यने अमेरिकाके सच्चे पता लगानेवाले कर्मवीर कोलम्बसका कीर्तिमुकुट उतार कर अपने सिर पर रख लिया। कोलम्बसके साथ जितने अन्याय किये गये, उन सबमें यह सबसे अधिक बड़ा है। बरसों अटूट परिश्रम करके ग्रन्थ तैयार करनेवालेका नाम उड़ाकर जैसे कोई उसे अपना बनाया हुआ प्रसिद्ध कर देता है, वैसे ही अमेरिगोने कोलम्बसके यशको अपना प्रसिद्ध कर दिया। कोलम्बसके स्थान पर अमेरिगोका नाम फैले सैकड़ों बरस हो चुके, इसलिए खेद है कि अब यह गलती नहीं सुधर सकती।

इसी वर्षमें अन्यान्य देशोंसे भी नवीन देशोंके खोजनेके लिए यात्रायें की गईं। कोलम्बसके ही कारण सैकड़ों मनुष्योंमें यह असीम कष्ट सहकर यात्रा करनेकी हिम्मत आई थी। कोलम्बसके बाद जिन जिन लोगोंने नये टापुओं और द्वीपोंका पता लगाया और जिन्हें सफलता प्राप्त हुई वे सब कोलम्बसके ही शिष्य थे। कोलम्बसके साथ यात्रा करके ही उन लोगोंने इस विषयका ज्ञान प्राप्त किया था। ओजेडोके समान 'एलेन्सो निन्यो' ने भी-जो पिछली यात्रामें कोलम्बसके साथ गया था—एक व्यापारी कम्पनीके साझेमें दो जहाज बना कर देश खोजनेका काम शुरू किया। निन्यो और उसके साझीदारोंने किसी नये देशका पता-वता न लगाया, पर वे सोना, मोती इतना अधिक भर लाये कि उसे देख कर स्पेनवालोंके मुँहमें पानी भर आया और ऐसी खोजें करनेके लिए छोटे बड़े सभीका मन ललचा उठा।

जो पिनजोन पहली यात्रामें कोलम्बसके साथ रहा था, वह भी सन् १५०० में चार जहाज लेकर नये देश खोजनेके लिए निकला। वह बड़े साहससे दक्षिणकी ओर विषुवत्वृत्तसे आगे निकल गया और वहाँ उसने भी कई देशोंका पता लगाया।

अमेरिकाके जुदा जुदा देशोंका पता पन्द्रहवीं शताब्दीके अन्तमें लगा। जब वास्को डि गामाकी हिन्दुस्थानकी खोजका

समाचार पोर्च्युगीज लोगोंको मिला तब वे बड़े ही प्रसन्न हुए। उनके राजाने एक बड़ा भारी जहाजी बेड़ा तैयार कराया और एक काब्राल नामक विश्वासी पुरुषको उसका अध्यक्ष बनाया। काब्रालको मालूम था कि आफ्रिकाके किनारे किनारे चलनेसे उलटी सीधी हवा लगती है, इसलिए वह इस हवासे बचनेके लिए दक्षिणकी ओर चला गया। जब वह विषुवत्वृत्तसे दक्षिण दश अंश पर पहुँचा, तब उसे अपने आपको एक नये देशके किनारे पर पाकर बहुत आश्चर्य हुआ। पहले उसने समझा कि यह एटलांटिक महासमुद्रका कोई ऐसा देश है जिसे अब तक किसीने नहीं देखा है; पर पीछेसे उसने अनुमान किया कि यह किसी और ही बड़े भारी द्वीपका एक अंश है। उसका यह अनुमान ठीक भी था। जिस स्थान पर वह पहुँचा था वह दक्षिण अमेरिकाके ब्राजील नामक प्रदेशमें था। उसने वहाँ उतरकर पुर्तगालके राजाके नामसे उस पर कब्जा कर लिया। यह समाचार एक जहाज द्वारा पुर्तगाल भेज दिया गया। लोग इन सब देशोंके खोजनेका यश जुदाजुदा व्यक्तियोंको देते हैं; पर इसमें सन्देह नहीं कि इन सबका वास्तविक खोजी कोलम्बस था—लोगोंमें नई खोज करनेकी हिम्मत उसीकी देखादेखी आई थी।

स्पेन और पुर्तगालवालोंके बार बार आनेजानेसे कोलम्बसके खोजे हुए देशोंका ऐश्वर्य सब पर प्रकट हो गया, परन्तु

उसे इस महान् कार्यके बदले जो इज्जत मिलनी चाहिए थी वह लोगोंकी जलन और स्पेनके राजाकी कृतघ्नतासे न मिली। रोल्डनके साथ कुछ नियम निश्चित कर लेनेके कारण वहाँकी कुछ अशान्ति दबी अवश्य थी, पर उसके बीज वैसे ही हरे बने हुए थे। बहुतसे लोग तो अब तक उसके विरुद्ध ही थे। उन बलवाइयोंको दबा देने और देशमें सुराज्य स्थापित करनेमें निरंतर लगे रहनेके कारण वह स्पेन देशके अपने अकारण शत्रुओंकी घातों पर उचित ध्यान न दे सका। सेंट डोमिंगोसे ऐसे बहुतसे लोग स्पेन चले गये थे जो कोलम्बससे नाराज थे। ये भाग्यहीन लोग वहाँ सोना लूटनेके लिए गये थे, पर आलस्यके कारण इनके पल्ले कुछ न पड़ा, इसलिए ये कोलम्बस पर नाराज थे। इन लोगोंकी दरिद्रता और दुःख देखकर स्पेनवालोंको तरस आया और उन्होंने इनकी बातोंको सच मानकर कोलम्बसको दोषी ठहराया। कोलम्बस पर बड़े बड़े जुर्म लगाकर ये लोग राजा-रानीके पास अर्जियों पर अर्जियाँ भेजने लगे। ज्योंही राजा-रानी बाहर सैर करनेके लिए निकलते त्योंही ये लोग बलवाइयोंकी तरह उनकी गाड़ी घेर लेते और सब दुःखोंका मूल कारण कोलम्बसको बता कर उसे सजा देनेकी प्रार्थना करते। जब कोलम्बसके बालबच्चे बाहर घूमनेके लिए निकलते, तब ये लोग उनसे कहते कि, 'तुम्हारे

बापने ऐसे बुरे देश तलाश किये जिनमें जाकर हम लोगोंकी ऐसी बुरी हालत हुई' यह पहले कई बार कह जा चुका है कि दरबारमें कोलम्बसकी बढ़ती देखकर जलनेवाले पुरुषोंकी कमी न थी। उन्होंने तो पहले ही कोलम्बसकी बातको उड़ा देना चाहा था, पर जब उसकी योजना सच निकली तब उन्हें चुप होना पड़ा था। अब मौका पाकर वे लोग फिर उसकी बुराई करने लगे। उन्होंने अमेरिकासे लौटे हुए इन मनुष्योंको अच्छा सहारा दिया।

राजा फर्डिनैंड भी कोलम्बससे सन्तुष्ट न था, इसलिए उसने भी इन लोगोंकी शिकायतोंको सच मान लिया। इसका एक कारण यह भी था कि कोलम्बसके खोजे हुए देशोंसे अभी तक बहुत ही कम आमदनी हुई थी। यद्यपि इन देशोंसे भविष्यमें अधिक आमदनी होनेकी आशा थी और नये देश खोजनेके कारण स्पेनका यश चारों ओर फैल गया था, पर इस लोभी और मंदबुद्धि राजाका सन्तोष इससे नहीं हो सकता था। उस समयके स्पेनवाले योरपभरमें मूर्ख थे। जिस काममें तुरंत लाभ न होता उसे वे मूर्खताका काम समझते थे। ऐसे ही विचारोंके वशवर्ती होकर राजाने सोचा कि अब तक इन नये खोजे हुए देशोंसे अधिक लाभ न हुआ, इसका कारण कोलम्बस ही है। कोलम्बसकी सबसे अधिक सहायकारिणी रानी इसाबिल्ला थी, पर कोलम्बसके खिलाफ

बातें सुनते सुनते उसके भी कान पक गये और वह भी सोचने लगी कि कोई न कोई बात जरूर होगी। कुछ धर्माध्यक्षोंने भी राजा-रानीके कान भर दिये कि यह बात सच है।

जब रानी भी कोलम्बसकी निन्दा पर ध्यान देने लगी तब वहाँ उसका पक्ष समर्थन करनेवाला कोई न रहा। फ्रैंसिस डि बोवाडिल्ला नामक एक व्यक्तिको दरबारसे आज्ञा दी गई कि तुम हिस्पान्योला जाओ और कोलम्बसके कामकी जाँच—पड़ताल करो। यदि वह दोषी साबित हो तो उसे अलग कर दो और उसकी जगहका काम तुम करने लगो। कोलम्बसके दोषी साबित होनेमें इस न्यायाधीशका अधिक लाभ था, इसलिए अब कोलम्बसको वास्तविक न्याय मिलनेकी कोई जगह न रही। इस समय कोलम्बसने द्वीपमें शान्ति स्थापित कर ली थी और स्पेन तथा द्वीपनिवासियोंको अधिक लाभ करानेके लिए उसने सोनेकी खानोंमें नये ढंगसे काम शुरू कराया था। पर इन सब कामों पर बोवाडिल्लाकी नजर न थी, उसने तो मानों पहलेसे ही कोलम्बसको दोषी बना डाला था। पूछने-ताछने और खोज-खबर लेनेकी कुछ भी आवश्यकता न समझ कर बोवाडिल्लाने जाते ही एक डकैतके घरकी तरह कोलम्बसके घरको घेर लिया। उस समय कोलम्बस अपने घरमें न था। बोवाडिल्लाने जबर्दस्ती किले और भांडार पर अधिकार जमा लिया। साथ ही यह भी

प्रकट कर दिया कि अब यहाँका राजा (प्रतिनिधि) मैं हूँ। कोलम्बसके कैद किये हुए कैदियोंको उसने छोड़ दिया और उसे लिख भेजा कि तुम दरबारमें हाजिर होकर मेरे सामने अपनी सफाई पेश करो। इस आज्ञाके साथ ही राजा फर्डिनैंडके हुक्मकी नकल भी उसने भेज दी।

राजा रानीकी इस नीचता और कृतघ्नताको देख कर कोल-म्बसको हार्दिक दुःख हुआ, पर उसने अपनी सफाई पेश करनेमें देर न की। राजाकी आज्ञाको सिर पर रखकर कोल-म्बस इस पक्षपाती और अत्याचारी न्यायाधीशकी कचहरीमें हाजिर हुआ। अत्याचारी बोवाडिल्लाने उसे अपने पास न आने देकर आज्ञा दी कि उसे बेड़ियाँ पहनाकर कैद कर लो और जहाजमें बंद करके स्पेन भेज दो। उस आपत्तिके समयमें भी कोलम्बसमें धैर्य था। उसे अपनी सचाई पर पूरा विश्वास था। वह बड़ी गम्भीर प्रकृतिका पुरुष था। उसने इस अपमानको चुपचाप सह लिया। उस समय वहाँ एक मनुष्य भी ऐसा न था जो कोलम्बससे सहानुभूतिके चार शब्द भी कहता। बोवाडिल्लाने उस प्रदेशमें अपनी मंशाके घोड़े आजादीसे छोड़े दिये और जिसने जितने देशी आदमी और जितनी जमीन माँगी उसे उतने ही आदमी और उतनी ही जमीन दे दी। इससे खुश होकर लोग कोलम्बसकी हँसी उड़ाने लगे। जो

आदमी कोलम्बसके विरुद्ध बलवा करनेको तैयार हुए थे उन्हींसे बोवाडिल्लाको उसके दोषी होनेके प्रमाण मिल गये। कोलम्बसके विरुद्ध झूठीसे झूठी और असम्भव असम्भव बातको बोवाडिल्ला लिख लेता था और इस प्रकार यह कोलम्बसके दोषोंका एक गट्ठर तैयार करता जाता था। अन्तमें उसने यह 'दोषसंग्रह' स्पेनको रवाना कर दिया। कोलम्बस और उसके दोनों भाइयोंको उसने हथकड़ी बेड़ी पहनवाकर कैद किया और उन तीनोंको न्यारे न्यारे तीन जहाजोंमें रक्खा; जिससे वे एक दूसरेसे मिल-जुल कर दुखसुखकी बातें न कर सकें। जिस मनुष्यने रातदिन परिश्रम करके स्पेन देशका भला किया और जिसके हृदयमें अपनी जातिके उपकारके सिवाय दूसरी इच्छाने स्थान ही न पाया था उसको अपमानित होते देख कर नीच स्पेनवालोंने खुशी मनाई! रास्तेमें पड़े हुए घासके तिनके पर जैसे कोई नजर नहीं डालता वैसे ही कोलम्बसकी ओर किसीने नजर उठा कर देखा तक नहीं। जिस पृथ्वीको संसारमें सबसे पहले कोलम्बसने खोजा था, जहाँ उसने स्पेन देशका झंडा गाड़ कर राज्य स्थापित किया था, जहाँसे सोनेकी डालियाँ भर भर कर उसने स्पेन-दरबारकी अर्चना की थी–उसी भूमिसे कैद होकर वह संसारका महान् आविष्कारक बेड़ियाँ पहने हुए स्पेनकी ओर चल पड़ा। यह सत्य है कि संसारके सब मनुष्य

हृदयहीन नहीं होते। जहाज जैसे ही कुछ दूर पहुँचा वैसे ही जहाजके कप्तानने पूरे सम्मानसे उस पूज्य पुरुषकी पदवन्दना की और कहा कि इन बेड़ियोंको खोल देनेकी आप मुझे आज्ञा दें। पर कोलम्बसने धैर्यके साथ उत्तर दिया कि 'मेरे प्यारे राजा और रानीकी आज्ञासे ये बेड़ियाँ मेरे पैरोंमें डाली गई हैं, और उनकी अन्यान्य आज्ञाओंके समान मैंने इस आज्ञाको भी अपने सिर पर चढ़ाया है। मैं उनकी आज्ञासे कैद हुआ हूँ और उन्हींकी आज्ञासे छूटूँगा।' यह कोलम्बसकी गहरी राजभक्तिका नमूना था।

रास्तेमें किसी प्रकारकी विपत्ति न आई। यथासमय जहाज स्पेन पहुँचे और राजा-रानीको कोलम्बसके कैद करके लाये जानेका समाचार मिला। जब उन्हें यह मालूम हुआ कि कोलम्बस बेड़ियाँ पहना कर लाया गया है तब वे बड़े ही विचलित हुए और उन्हें मालूम हुआ कि इससे लोग हमारा विश्वास न करेंगे, इस लिए उसकी बेड़ियाँ निकालनेकी उसी समय आज्ञा दी गई। उनके ध्यानमें यह बात भी आई कि कोलम्बसने स्पेन देशका महान् उपकार किया है और यदि यह बात फैल जायगी कि ऐसे उपकारी मनुष्यके साथ ऐसा बुरा वर्ताव किया गया तो सारा योरप हम पर कृतघ्नताका दोष मँढ़ेगा। इस समय वे अपनी करतूतसे सचमुच ही लज्जित

हुए और उन्होंने कोलम्बसको बन्धनमुक्त करके पूरी इज्जतके साथ दरबारमें लानेकी आज्ञा दी। वह तत्काल ही उपस्थित हुआ और उसने राजा-रानीकी चरणवन्दना की। अनेक हार्दिक विकारोंके कारण थोड़ी देर तक उसके मुँहसे शब्द न निकले। जब वह कुछ स्वस्थ हुआ तब उसने अपनी प्रामाणिकता सिद्ध करनेके लिए एक छोटासा व्याख्यान दिया। उसने बताया कि मैं सर्वथा निर्दोष हूँ और जो कुछ कार्य मैंने किये हैं वे सब राज्यकी जड़ मजबूत करने और आमदनी बढ़ानेके लिए किये हैं। मेरे शत्रु मुझे नहीं देख सकते और वे मेरी इज्जतके साथ कीर्ति भी छीननेको तैयार हैं। इस बातको कोलम्बसने प्रमाणोंसे भी साबित कर दिया। इससे राजा फर्डिनैंडने उसका बड़ा सम्मान किया और रानी इसाबिल्लाने उस पर बड़ी दया दिखाई। उन्होंने कहा हमें इन बातोंके विषयमें कुछ भी मालूम न था और इसके लिए हम बहुत दुःखी हैं। राजा-रानी पर किसी प्रकारका आक्षेप न किया जा सके, इसलिए बोवाडिल्ला उसी समय पदभ्रष्ट कर दिया गया, पर वह स्थान कोलम्बसको नहीं मिला। यद्यपि राजाने प्रकटमें कहा था कि मैं कोलम्बसके शत्रुओंको दंड दूँगा, पर यह बात या तो दिखानेको ही कही गई थी और या कोलम्बसको धीरज देना ही इसका मतलब था। एक दूसरा

व्यक्ति हिस्पान्योलाका प्रतिनिधि वना कर भेज दिया गया और कोलम्बस दरबारमें ही रक्खा गया।

जो कोलम्बसके दुःख दूर करनेका दम भरते थे उन्हींके द्वारा उसे यह एक और नया दुःख मिला। इससे यह साफ प्रकट होता था कि उसके ऊपरका सन्देह सर्वथा दूर नहीं हुआ है। इससे उसे मार्मिक पीड़ा हुई। कोलम्बसको राजा रानीका यह विश्वासघात वहुत ही बुरा लगा। वह सर्वथा सच्चा था, इसलिए उससे चुप न रहा जाता था। वह जब कभी कहीं जाता तब इन कृतघ्नताकी चिह्नस्वरूप बेड़ियोंको अपने साथ रखता था। उन्हें उसने अपने घरके दरवाजे पर टँगवा दिया था और अपने आदमियोंसे कह दिया था कि जब मैं मरूँ तब ये मेरे शरीरके साथ गाड़ी जायँ!!

आलसी स्पेनवासियोंको कर्मशीलताकी छड़ी छुलाकर साहसी बनानेवाला कोलम्बस जब इस प्रकार अपमानित हुआ, तब यद्यपि नये देशोंके खोजखाज करनेवाले प्रायः सभी लोगोंको भय हुआ; क्योंकि वे सब ही कोलम्बसके शिष्य थे; पर जो प्रवाह चल पड़ा था वह बंद न हुआ। सन् १५०१ में जुआना डिल्लाने दो जहाज लेकर यात्रा की। यह व्यक्ति कोलम्बसकी दोनों यात्राओंमें उसके साथ रह चुका था, इसलिए समुद्री विद्याका मशहूर जानकार माना जाने लगा था। यह सीधा

अमेरिका चला गया और 'टेरा फर्मा' तक जा पहुँचा। अमेरिगो नामके पुरुषने भी एक यात्रा की और इसी रास्तसे वह भी वहीं जा पहुँचा। इन यात्राओंसे यद्यपि कुछ अधिक लाभ न हुआ, पर स्पेनवालोंको अमेरिकाके विषयमें अधिकाधिक बातें मालूम होती गईं।

बोवाडिल्लाने हिस्पान्योलामें कोलम्बसके साथ बहुत ही अन्याय किया था। वह स्वयं भी इस बातको जानता था, इसलिए वह वहाँके लोगोंको खुश रखना चाहता था। अतः वहाँके लिए कोलम्बसने जो राज्यसम्बन्धी बनाये थे उनसे ठीक उलटे नियम उसने तैयार किये। स्पेनिश लोगोंमें कैदी, आलसी और दुराचारी व्यक्ति अधिक थे। उन्हें खुश करनेके लिए उसने इतने अधिकार दे दिये कि वे अन्याय करने लगे। इन दुष्ट लोगोंने उन बेचारे द्वीपनिवासियोंको अपने बापकी मौरूसी जायदाद समझ कर उन्हें अपना गुलाम बना लिया। इनकी नजर हर समय सोने पर लगी रहती थी, इसलिए ये खानों पर उन बेचारोंसे जानवरकी तरह काम लेते थे। उनके साथ दया और मनुष्यत्वका व्यवहार तो किया ही न जाता था। वे बेचारे कमजोर थे और मेहनतके आदी न थे, इसलिए इन सभ्य कहलानेवालोंके अत्याचारसे इतने जल्दी मरने लगे कि यदि ऐसा ही अत्याचार कुछ समय तक और भी जारी रहता तो उस जातिका समूल नाश ही होजाता।

इस घोर अत्याचारको रोकनेके लिए नये प्रतिनिधि ओवान्दोका जाना आवश्यक हुआ। उसके लिए शीघ्र ही एक बेड़ा तैयार हुआ और उसमें ३२ जहाज और २५०० आदमी अमेरिकामें बसनेके लिए भेजे गये। ओवान्दो जब हिस्पान्योलामे पहुँचा तब बोवाडिल्लाको सब काम उसके अधीन कर देना पड़ा। बोवाडिल्लाको आज्ञा हुई कि तुम अपने कामका जवाब देनेके लिए स्पेन जाओ। उसके साथ ही रोल्डन आदि बलवाई भी स्पेन भेजे गये। इसके बाद एक सूचना निकली कि यहाँ के मूलनिवासियोंको स्पेनके राजाकी स्वाधीन प्रजा समझना चाहिए और उनकी मरजीके खिलाफ तथा पूरी मजदूरी दिये बिना उनसे कोई भी काम न लिया जाना चाहिए। इस आज्ञासे स्पेनिश लोगोंके अत्याचार बहुत कुछ कम हो गये। आगे जब यह मालूम हुआ कि लोग खानोंसे अधिक सोना निकालते हैं, तब यह आज्ञा प्रचारित हुई कि सोनेकी मालिक सरकार है, इसलिए सोना पहले सरकारी टकसालमें उपस्थित किया जाय।

जिस समय कोलम्बसके प्राप्त किये हुए प्रदेशमें यह सुव्यवस्था की जारही थी, उस समय वह स्पेनके कृतघ्न दरबारमें प्रार्थना कर रहा था। पर वहाँ उसकी योग्यता और सेवाका कुछ भी विचार न किया गया। उसकी प्रार्थना नामंजूर

हुई। पूर्वोल्लिखित प्रतिज्ञापत्रके अनुसार उसने अपने खोजे हुए प्रदेशका प्रतिनिधिपन माँगा, पर अविचारी राजाने सोचा कि कोलम्बसके खोजे हुए देशोंसे भविष्यमें बहुत लाभ होगा, इस लिए मैंने जो कुछ एकरारनामेमें लिख दिया है वह बहुत अधिक है। इसके सिवाय एक ही आदमीको वहाँके अधिकार सौंपे जायँगे तो पीछे इसका परिणाम अच्छा न होगा, इसलिए वह अधिकार देनेमें टालटूल करने लगा। उसने रानीके मनमें भी यही बातें जमा कर बहम पैदा कर दिया। महान् आविष्कारक कोलम्बस दो वर्ष तक स्पेनके दरबारमें मामूली अर्जी देनेवालेकी तरह धक्के खाता रहा, पर परिणाम कुछ भी न हुआ। कोलम्बस स्वयं शुद्ध और निर्दोष था, पर बहमी राजाके बहमकी दवा उसके पास न थी। अन्तमें उसे निश्चय हो गया कि इस पक्षपाती और कठोर प्रकृति राजासे न्यायकी आशा करना ही व्यर्थ है।

कोलम्बसको उसकी मेहनतका बदला न मिला। उसने स्पेनवालोंका महान् उपकार किया, और उन्होंने उसका चोरों और ठगोंके समान अपमान किया। फिर भी वह महान् पुरुष था। उसका ध्यान अब भी इसी ओर लगा हुआ था कि हिदुस्थान पहुँचनेका नया मार्ग ढूँढ़ निकालूँ। अमेरिकाके जिस भागको उसने देखा था और पीछेसे उसे जैसा पता

लगा था उससे उसने निश्चय किया कि अमेरिकासे आगे-वाला समुद्र पार करने पर हिन्दुस्थान अवश्य मिलेगा। कोल-म्बसकी अवस्था ढल चुकी थी, जन्मभर घोर परिश्रम और रात दिन चिन्तालीन रहनेके कारण उस पर बुढ़ापेका असर हो चला था, कमजोरीका उसमें प्रवेश होगया था—पर उसका कर्मवीर मन सदा एक ही विचार और एक ही धारामें बहा करता था। नवीन देश खोज निकालनेका उत्साह एक नवयुवामें भी जितना न होगा, उतना उसकी उस ढली उमरमें भी था। उसकी योजनाकी सचाई सूरजकी रोशनीके समान चारों ओर फैल चुकी थी और विद्वान् लोग उसकी प्रत्येक बातको सच मानने लगे थे, इसलिए राजा-रानीको उसके विचारोंमें शक करनेकी एक तिल भर भी जगह न थी। वह बड़ा प्रामाणिक और सदाचारी था। इन्हीं कारणोंसे राजा-रानी उसके सामने आँखें नहीं उठा सकते थे। इसके सिवाय कोलम्बसके बताये हुए रास्तेसे ही पोर्च्युगीजोंने हिन्दुस्थानका पता लगाया था। इस बातसे भी कोलम्बसकी प्रखर बुद्धिका परिचय संसारको मिल गया था। योरपमें उस समय कपड़ा, बर्तन, तसवीरें आदि चीजें बहुत ही खराब बनती थीं। जब पुर्तगालवाले पहली यात्रामें हिन्दुस्थान आये थे तब वे यहाँका बढ़िया कपड़ा, ताँबे पीतलके बर्तन, मूर्तियाँ, तसवीरें और नक्काशीके कामकी

चीजें लेगये थे । उन्हें देखकर योरपवाले उन चीजोंकी सुन्दरता और बारीकी पर हैरान थे । उन चीजोंके योरपमें गहरे दाम बँटे । अब कई जहाजी कम्पनियाँ खुल गईं और वे हिन्दुस्तानकी चीजें ले जाकर योरपमें बेचने लगीं । लिस्बन नगरकी दूकानें भारतके मालसे खचाखच भर गईं और पोर्च्युगीज जाति योरपकी सब जातियोंसे अधिक धनवाली हो गई । स्पेन-वाले अमेरिकाके जंगली प्रदेशोंकी ओर गये थे, इससे उन्हें भविष्यमें लाभकी आशा जरूर थी, पर इस समय तो उनके पल्ले विशेष कुछ न पड़ा था । इधर हिन्दुस्थानकी चीजोंके कारण पोर्च्युगीज मालदार बन बैठे थे । इसलिए जब कोलम्ब-सने हिन्दुस्थानका सीधा रास्ता खोजनेकी बात उठाई, तब स्पेनवालोंको वह बड़ी प्यारी लगी । हिन्दुस्थानके नामसे स्वार्थी फर्डिनैंडके मुँहमें भी पानी भर आया और उसने कोलम्बसको हिन्दुस्थानकी यात्राकी स्वीकारता दे दी ।

यद्यपि कोलम्बसकी इस यात्रासे अधिक लाभकी आशा थी, फिर भी उसे केवल छोटे छोटे चार जहाज मिले । जो जहाज सबसे बड़ा था वह केवल ७० टनका था । थोड़ीसी सामग्रीसे भी कोलम्बसको बड़े काम करनेका अभ्यास था । वह उपकरणकी ओर देखना जानता ही न था—उसे तो सदैव काम करनेकी धुन थी । इस यात्रामें कोलम्बसका भाई बार्थो-

लोमेओ और उसका बड़ा बेटा भी साथ था। १५०३ ई० के मई मासकी ९ वीं तारीखको उसने यात्रा प्रारम्भ की और वह नियमानुसार कानेरी टापूकी ओर रवाना हो गया। उसने बहुत ही जल्दी अमेरिका जाना सोचा था, पर उसका एक जहाज इतना सुस्त चलनेवाला था कि वह एक दिनका रास्ता ढाई दिनमें तै करता था। इसलिए इस जहाजको ओवान्दोके किसी तेज जहाजसे बदलनेके लिए उसे हिस्पान्योला जाना पड़ा। जब कोलम्बस सेंट डोमिंगो पहुँचा तब वहाँ मालसे भरे हुए अठारह जहाज स्पेन वापिस जानेको तैयार हो रहे थे। कोलम्बसने अपनी यात्राकी सूचना देकर बंदरमें घुसनेकी आज्ञा माँगी। उसे एक तो जहाज बदलना था और दूसरे उसे अपनी अनुभवी बुद्धिसे यह भी माळूम हो गया था कि थोड़ी ही देरमें एक बड़े जोरका तूफान आनेवाला है। इस कारण भी उसने अपने जहाज बंदरमें ले जाने चाहे थे। कोलम्बसने ओवान्दोको भी यही सलाह दी कि अपने जहाजोंका स्पेन भेजना कुछ दिनके लिए बंद कर दो। पर ओवान्दोने कोलम्बसकी सलाहकी कुछ भी परवा न की; साथ ही उसे बंदरमें घुसने की भी आज्ञा न दी। एक अनजान परदेशी भी यदि विपत्तिमें पड़ा हो, तो लोग उसे आश्रय देकर अपने घरमें टिकाते हैं, पर एक महान् आविष्कारककी बात उसके उपकृत देशबन्धुओंने ही

सुनी अनसुनी कर दी! कोलम्बस समुद्री विद्याका मार्मिक जानकार और अनुभवी था, पर ओवान्दोने उसकी तूफानकी भविष्यवाणी पर उसका मजाक उड़ाया। उसने उस अठारह जहाजोंके बेड़ेको उसी समय स्पेन रवाना कर दिया। बेड़ेके रवाना होनेके दूसरे ही दिन रातको आकाश काले मेघोंसे घिर गया और बड़ा भयंकर तूफान आया। कोलम्बस कई दिन पहलेसे इस तूफानके आनेका अनुमान कर रहा था, इसलिए उसने तो रातभर जाग कर अपने जहाजोंको 'येन केन प्रकारेण' बचा लिया; पर उन अठारह जहाजोंके बेड़ेको इस गलतीकी बड़ी बुरी सजा मिली। उनमेंसे केवल दो जहाज बचे, बाकी सोलह डूब गये! इन जहाजोंमें कोलम्बसके खिलाफ बलवा करनेवाले और उनके अगुआ रोल्डन आदि सब डूब गये। ये स्पेनको जबाब देने जा रहे थे। इस तरह जिन लोगोंने निरीह द्वीपवासियों पर घोर अत्याचार किया था और कोलम्बसको हैरान कर डाला था वे सब ही समुद्रमें डूब कर जानवरोंके भोजन बन गये। द्वीपनिवासियोंको तंग करके इन लोगोंने जो सोना संग्रह किया था वह भी समुद्रमें डूब गया। जो दो जहाज बचे थे, उनमें कोलम्बसका जप्त किया हुआ माल था। लोग कहने लगे कि 'इनमें यदि कोलम्बसका माल न होता तो ये भी डूब जाते! वह सच्चा, प्रामाणिक और सदाचारी है। जिन

लोगोंने उससे नीचता की, उन्हें परमेश्वरने दंड दिया है। अवश्य ही उसमें कोई दैवी शक्ति है। उसीने परमात्मासे प्रार्थना करके लोगोंको सजा दिलानेके लिए यह तूफान बुलाया था।'

हिस्पान्योलामें कोलम्बसका कुछ भी सम्मान न किया गया, यहाँ तक कि उसे बंदरमें घुसने तककी आज्ञा न मिली। यहाँसे कोलम्बस सीधा अमेरिकाखंडकी ओर चला। आपत्तिसे भरी हुई बड़ी लंबी यात्राके बाद उसे एक ग्वानेआनो नामक द्वीपका पता लगा। यहाँके मनुष्य कुछ सभ्य और समझदार थे। ये डोंगियोंमें बैठकर आये और कोलम्बससे मिले। अब तक कोलम्बसके देखनेमें जितने असभ्य लोग आये थे, उन सबसे ये अच्छे थे। स्पेनवाले किसी भी द्वीपनिवासीके मिलने पर सबसे पहले इशारोंसे यही पूछा करते थे कि जिस सोनेके गहने तुमने पहन रक्खे हैं वह कहाँ मिलता है। इसी आदतके अनुसार यहाँ भी यह बात पूछी गई। उन लोगोंने पश्चिमकी ओर हाथ उठाकर बताया। यदि उस समय कोलम्बसने पश्चिमकी ओर जहाज चलाये होते तो वह मेक्सिकोके रमणीक प्रदेशमें जा पहुँचता, पर उसे तो हिन्दुस्थान पहुँचनेकी धुन थी, अतएव उसने अपने जहाज अज्ञात दक्षिणी समुद्रमें डाल दिये। इस यात्रामें उसे केप ग्रेसिअसका पता लगा। यह बंदर बड़े सुंदर स्थान पर था, इसलिए कोलम्बसने इसका नाम

मनोहर बंदर रक्खा। यहाँके लोगोंके पास जो सोनेकी चीजें मिलीं, उनसे कोलम्बसने अनुमान किया कि यहाँ धन अधिक है और पृथ्वी भी यहाँकी विशेष रसाल है। इन सब बातोंको देखकर उसे वहाँ पर राज्य स्थापित करनेकी धुन सवार हुई। उसने अपने भाईकी मातहतीमें वहाँ थोड़ेसे आदमियोंको छोड़कर स्पेनसे राज्य स्थापित करने योग्य सामानको लानेका विचार किया। पर यह बात सच है कि आलसी मनुष्य सबसे अधिक पापी हुआ करते हैं। स्पेनवाले आलसी थे, अतएव पापी थे। कोलम्बस वहाँ राज्य स्थापित करनेका विचार कर ही रहा था कि उसके साथियोंने वहाँके आदिम निवासियों-को हरतरहसे तंग करना शुरू कर दिया। पर वहाँके मनुष्य अन्य द्वीपनिवासियोंके समान निर्बल न थे। जब स्पेनवाले उनकी चीजें लूटने लगे और उनकी स्त्रियोंको भ्रष्ट करने लगे, तब वे सब लड़नेको तैयार हो गये। इस लड़ाईमें कई स्पेनिश मारे गये और जो बचे उन्हें भागकर अपने जहाजोंकी शरण लेनी पड़ी। इस तरह यह कोलम्बसकी राज्य स्थापित करने-की इच्छा उसके देशबन्धुओंके कारण जहाँकी तहाँ रह गई।

अमेरिकाके आदिम निवासियोंसे योरपवालोंकी यह सबसे पहली हार हुई। कोलम्बसका हृदय इससे बहुत ही दुखी हुआ। इसी समय मौसिमने अपना रंग बदला। बड़े जोरसे बिजली

चमकने लगी और पानी पड़ने लगा। एक ओर नाविक नाराज हो रहे थे और दूसरी ओर खुराक बीत चुकी थी, इसलिए किसीको भी भरपेट भोजन न मिलता था। यों तो ये चारों ही जहाज निकम्मे थे, पर किसी तरह काम दे रहे थे, सो इनमेंसे एक तो इस गड़बड़में डूब गया और दूसरा इतना खराब हो गया कि उसका ले चलना असम्भव होगया—उसे वहीं छोड़ देना पड़ा। और कोई उपाय न देखकर बाकी बचे हुए दो जहाजोंको लेकर कोलम्बस हिस्पान्योलाकी ओर चला; पर दूसरे ही दिन रास्तेमें फिर बड़े जोरका तूफान आया और दुर्भाग्यसे बचे हुए ये दोनों जहाज भी आपसमें टकरा कर इतने निकम्मे होगये कि कोलम्बस अपनी सम्पूर्ण बुद्धि और शक्ति खर्च करके उन्हें ज्यों त्यों करके जमैका टापू तक ला सका। कोलम्बसको इस समय चारों ओरसे विपत्तियोंने घेर लिया था। उसके दोनों जहाज इतने खराब हो गये थे कि मरम्मतसे भी वे काम नहीं दे सकते थे। हिस्पान्योला वहाँसे बहुत दूर था। वहाँ किसी प्रकारसे खबर पहुँचाना भी असंभव था। पर इस समय भी कोलम्बसका धैर्य और विवेक उसके साथ था और उसके केवल इन्हीं गुणोंके कारण स्पेनवालोंके प्राण बचे, नहीं तो सबके सब मर जाते। इस टापूके निवासियोंका विश्वास था कि ये सफेद चमड़ीवाले मनुष्य नहीं, स्वर्गके देव हैं। इसलिए वे इनकी बड़ी खातिर करते थे

और उनकी इसी खातिरसे इनके प्राण बच गये। वे लोग लंबे दरख्तोंके तनोंको बीचमें पोला करके नावें बनाते थे। उन्हें तख्ते चीरना न आता था। इन नावोंसे नदियाँ पार की जा सकती थीं और समुद्रके किनारे किनारे घूमा भी जा सकता था, पर इनमें बैठ कर लंबी यात्रा करना मौतके मुँहमें पैर रखनेके समान था। फिर भी स्पेनवालोंने इनसे दो नावें माँग लीं और उन्होंने इन्हें देवता समझ कर दे दीं। कोलम्बसके जो दो पक्के मित्र थे, उन्होंने इन्हीं नावोंके द्वारा हिस्पान्योला जाना निश्चित किया। इन नाममात्रकी नावों पर बैठ कर सौ मीलका समुद्र पार करना बहुत ही कठिन काम था। पर इन दोनों साहसी वीरोंने यह काम अपने सिर लिया और कई टापूनिवासियोंको अपने साथ सहायताके लिए लेकर ये चल दिये। बड़ी कठिनतासे विपत्तियाँ सहते हुए कोई दस दिनमें ये हिस्पान्योला जा पहुँचे। इन्हें लगातार इतनी मेहनत करनी पड़ी थी कि इनके साथके कई टापूनिवासियोंके थकावटके मारे प्राण ही चले गये! इन लोगोंकी कठिनाइयों और कोलम्बसकी विपत्तियों पर हिस्पान्योलाके प्रतिनिधिको ध्यान देना चाहिए था, पर उसने इस पर कुछ भी ध्यान न दिया। वह यही विचार करता रह गया कि कोलम्बसको अपने आधीन टापूमें

आने दूँ या नहीं? ऐसे अवसरों पर नीच मनुष्य-प्रकृतिके लिए 'धिक्कार' के सिवाय और कुछ नहीं निकलता। यदि कोई बेजान पहचानका मनुष्य भी दैवयोगसे ऐसी आपत्तिमें गिर गया हो, तो मनुष्यका धर्म है कि उसे बचावे—पर मनुष्य जातिके बहुत बड़े उपकारक और स्वार्थत्यागी कोलम्बसको ऐसी विपत्तिमें पड़ा सुनकर भी हिस्पान्योलाका प्रतिनिधि 'अगर मगर'में पड़ा रहा। कोलम्बसके दोनों विश्वासी मित्र आठ महीने तक इन प्रतिनिधि महाराजसे प्रार्थना करते रहे कि एक जहाज भेज कर उस महापुरुषका विपत्तिसे उद्धार कीजिए, पर इसका कुछ भी फल न हुआ। यह कृतघ्नताकी चरमसीमा है; मनुष्य-प्रकृतिकी राक्षसी क्रूरता है।

इधर कोलम्बस और उसके साथियोंके दुःख नित्य प्रति बढ़ रहे थे। वे रोज आशाके साथ अनन्त समुद्रकी ओर आँखें फाड़ फाड़ कर देखते थे, पर सहायताके लिए किसीकी भी शकल न दिखाई देती थी। दोनों मित्रोंके रवाना होते ही कोलम्बसके साथियोंको विश्वास हो गया था कि शीघ्र ही कोई जहाज आकर हमारा उद्धार करेगा। पर जब महीनों बीत गये, तब बड़ी बड़ी आशा करनेवालोंने भी आशा छोड़ दी और वे समझने लगे कि वे दोनों साहसी वीर समुद्रकी भेट होगये। इस आशाके टूटते ही अब उन्हें अपनी दशा और भी

अधिक बुरी मालूम होने लगी। उन्हें ऐसा मालूम होने लगा कि अब हमें अपने प्यारे देश और स्वजनबान्धवोंसे सर्वथा विच्छिन्न होकर इस टापूके नंगे असभ्य मनुष्योंके साथ मृत्यु-पर्यंत दिन बिताने पड़ेंगे। कोलम्बसका दुःख चौगुना था, पर वह धैर्यके साथ शान्त था। नाविक लोग उससे बातबातमें कहने लगे कि इसीके कारण हमें यह कालेपानीकी सजा मिली है। इस समय वे कोलम्बसकी कोई भी बात न मानते थे। कोलम्बसने उन्हें एक जगह रहनेके फायदे समझा कर एकत्र रहनेके लिए कहा; पर उन्होंने उस अनुभवीकी बात न मानी और वे टापूके अन्यान्य भागोंमें स्वेच्छापूर्वक विचरण करने लगे।

उस टापूके निवासियोंने सोचा था कि ये लोग स्वर्गसे पृथ्वी देखने आये हैं और कुछ दिनोंमें चले जायँगे; पर जब इन्हें अधिक दिन हो गये तब वे अनाजकी तंगीके मारे भीतर-ही-भीतर बड़बड़ाने लगे। वे लोग आलसी थे और भूख भी उनकी कम थी; इसलिए अधिक भोजन करनेवाले स्पेनिश लोगोंको अधिक दिन तक भोजन न दे सके। अब वे बड़ी तंगीसे भोजन देने लगे और जो देते थे उसे भी बंद करनेकी धमकी देने लगे। यदि उन्होंने एकदम भोजन बंद कर दिया होता, तो ये सब मर जाते। इसी समय स्पेनिश लोगोंने वहाँकी अनेक स्त्रियोंका सतीत्व हरण किया, इसलिए इन परकी रही सही आदरबुद्धि भी उन

लोगोंकी जाती रही। यदि इन लोगोंमें कोलम्बसके समान चतुर और बुद्धिमान् मनुष्य न होता तो अवश्य ही ये सब बिना मौत मारे जाते। कोलम्बसने चतुराईसे एक ऐसी युक्ति निकाली कि जिससे टापूनिवासी उनका पहलेसे भी अधिक सम्मान करने लगे। कोलम्बस ज्योतिषशास्त्रका अच्छा जानकार था। उसने गणितके द्वारा मालूम कर लिया कि दो चार दिनमें चन्द्रमाका 'ग्रहण' होनेवाला है। ग्रहणसे पहले दिन उसने वहाँ-के सब लोगोंको इकट्ठा किया और उन्हें उन्हींकी भाषामें समझा कर कहा कि—“ तुम लोग हमारा सन्मान जैसा पहले करते थे वैसा अब नहीं करते, इससे मालूम होता है तुम पापी हो।” इस प्रकार कह कर उसने कहा—“ जिस परमात्माने संसार पैदा किया है, हम उसके सेवक हैं और वह हमसे बड़ा प्रेम करता है। तुम लोग पहलेके समान हमारा आदर नहीं करते, इसलिए वह परमात्मा तुम पर बड़ा नाराज है और तुम्हें बड़ी भारी सजा देनेकी चिन्तामें है। यदि तुम्हें परमात्माका क्रोध देखना हो, तो तुम मेरे साथ आज रातमें रहो, देखो तुम्हें चन्द्रमाकी रोशनी काली दीखेगी और परमात्मा तुम्हारे लिए रोशनी न देगा। ” द्वीपनिवासियोंमेंसे बहुतोंने तो इस बात पर ध्यान ही न दिया, पर बहुतसे लोग इसे बड़े ध्यानसे सुनते रहे और जब रातको चाँद धीरे धीरे काला होने

लगा तब मारे डरके अपने अपने घरोंमें जा छिपे। थोड़ी देरमें बहुतसे खाने पीनेके पदार्थ लेकर वे सब कोलम्बसके पैरों पर आ गिरे और प्रार्थना करने लगे कि हम पर जो महासंकट आ रहा है उसे आप टाल दीजिए। थोड़ी देरमें ग्रहण अपने आप शुद्ध हो गया। यह देख कर वे लोग उस दिनसे स्पेनिश लोगोंका और भी अधिक सम्मान करने लगे और जिन बातोंसे वे नाराज होते थे उनसे दूर रहने लगे।

इस बीचमें कोलम्ब्रसके विरुद्ध होकर कुछ लोगोंने टापूनिवासियोंसे दो एक नावें छीन लीं थीं और उन पर चढ़कर हिस्पान्योला पहुँचनेका प्रयास किया था, पर हवाके प्रतिकूल होनेसे और दूसरे कई कारणोंसे वे इसमें कृतकार्य न हो सके थे। इससे उन्हें कोलम्बस पर गुस्सा आया और वे उसका तरहतरहसे अपमान करने लगे। इसी समय हिस्पान्योलाके प्रतिनिधिने कोई आठ नौ महीनेके बाद एक छोटीसी नाव इसलिए भेजी कि उन लोगोंकी दशा मालूम की जाय कि वे जीते हैं या मर गये। प्रतिनिधिकी हार्दिक इच्छा थी कि किसीका उद्धार न हो और खास करके कोलम्बसकी रक्षाकी तो वह आवश्यकता ही न समझता था। उस छोटीसी नावका नायक एक ऐसा मनुष्य बनाया गया था जो कोलम्ब्रसका कट्टर शत्रु था। अतएव उसने अपने स्वामीकी आज्ञाका अक्षरशः पालन किया। उसने अपनी

नांव किनारेसे दो मील दूर ठहराई और वहाँसे एक छोटीसी डोंगीके द्वारा एक आदमीको चिट्ठी लेकर किनारे भेजा । वह चिट्ठी कोलम्बसके नामकी थी । कोलम्बसने उसका उत्तर लिख दिया। वह आदमी चिट्ठी लेकर नाव पर पहुँचा । उसी समय नाव हिस्पान्योलाकी ओर चली गई । डोंगीको आती देख कर कोलम्बसके साथियोंको विश्वास हुआ था कि इतने अरसेके बाद अब उद्धारका समय आया; पर जब डोंगी चली गई तब वे निराशाके गहरे गढ़ेमें गिर पड़े । एक अत्यन्त प्यासे मनुष्यको पानीका गिलास दिखाकर फेंक देने पर उसकी जो दशा होती है, वही हालत कोलम्बसके साथियोंकी हुई । कोलम्बसका यह बड़ा भारी अपमान था । जन्मभर काम करते करते वह महापुरुष बूढ़ा होगया था, आपत्तिमें फँसा था, दु:खोंका पहाड़ उस पर टूटता चला आरहा था, फिर भी उसके पास दो चीजें थीं जिनके जोर पर वह बराबर लड़ रहा था । उसके पास एक असीम धैर्य था और दूसरा कभी मंद न पड़नेवाला उत्साह। हिस्पान्योलाके प्रतिनिधिने उसका अपमान किया और चिढ़ानेके लिए उसके पास चिट्ठी भेजी । उसके साथी निराश होकर अधमुए हो रहे थे, पर उसने सबको धैर्य बँधाया । उसने कहा कि—“ हताश मत होओ । निश्चय समझो, हमारे वे दोनों मित्र हिस्पान्योला पहुँचे हैं और वे शीघ्र ही

जहाज लाकर हमारा उद्धार करेंगे। इस छोटीसी डोंगीमें हम सब सवार नहीं हो सकते थे, इसलिए मैंने तुम सबको छोड़ कर अकेले जाना उचित नहीं समझा; क्योंकि अपने आपत्ति-कालके मित्रोंको त्यागना कभी योग्य नहीं है।" इन बातोंसे गई हुई आशा फिर लौट आई और वे कोलम्बसको अपने लिए इतना स्वार्थत्यागी देख कर उसका पहलेके ही समान सम्मान करने लगे।

अपने उद्धारकी आशासे वे रोज अनन्त समुद्रकी ओर आँखें फाड़ फाड़ कर देखते थे, पर उन्हें कोई जहाज न दिखाई देता था। इसी प्रकार देखते देखते जब बहुत दिन बीत गये तब उनकी आशाका पाया फिर टूट गया। उनमेंसे कई लोग बड़ी नीच प्रकृतिके थे। वे कोलम्बसको जानसे मार देनेके लिए तैयार होगये। उन्हें एकबार फिर समझाया, पर वे न मानें और उन्होंने हमला ही कर दिया। इस समय कोलम्बसके जोड़ोंमें दर्द था, वह कठिनतासे चल फिर सकता था, फिर भी उसके कुछ मित्र ऐसे थे जो उसके लिए जान देनेको तैयार थे। इन्हीं मित्रोंको लेकर कोलम्बसके भाई बार्थोलोमेओने उन नीच मनुष्योंका सामना किया। पहले ही हमलेमें उनके कई नेता मारे गये और कई जखमी हो गये। जो बचे बार्थोलोमेओने उन सबके हथियार छीन लिये। आखिर सबने हार कर कोलम्बससे

क्षमा माँगी और शपथ की कि अब हम कभी तुम्हारी आज्ञाका उल्लंघन न करेंगे। इस ही समय हिस्पान्योलासे उनके लेनेके लिए एक जहाज आगया। उस पर बैठ कर सब लोग हिस्पान्योला जा पहुँचे। इस तरह हिस्पान्योलाके प्रतिनिधिकी नीचतासे कोलम्बसको एक वर्ष तक टापूमें कैद रह कर असीम कष्ट भोगने पड़े।

जब कोलम्बस सेंट डोमिंगो पहुँचा, तब वहाँके प्रतिनिधिने जो वास्तवमें उसकी मौत चाहता था--दुनियाको दिखलानेके लिए उसका राजाकी तरह सम्मान किया और अपने महलमें ठहराया। यह सब करते हुए भी कोलम्बसके प्रति अपने द्वेषको वह छिपा न सका। दंगा करनेवाले जिस मुख्य नेताको कोलम्बस कैद करके साथ लाया था, उसे इस प्रतिनिधिने मुक्त कर दिया और कोलम्बसके पक्षवालोंको धमकी दी कि मैं इस विषयमें तुम्हारे व्यवहारका उत्तर माँगूँगा। कोलम्बस इस अन्यायको न देख सका और अन्यायीके अधिकृत देशमें उससे अधिक समय तक न रहा गया। जल्दीसे यात्राका सामान करके वह दो जहाज लेकर स्पेनकी ओर चल पड़ा। प्रकृति कमर कसकर कोलम्बसको हरानेके लिए मुस्तैद थी। विपत्तियाँ हाथ धोकर उसके पीछे पड़ी हुई थीं। उसे यात्रा करते अभी कुछ ही समय हुआ था कि एक बड़े

जोरका तूफान आया और उसमें उसका एक जहाज डूब गया और दूसरा खराब हो गया। यह जहाज कोई २१०० मील तक बहता चला गया। कोलम्बसने इस जहाजके चलानेमें अपनी सारी विद्या-बुद्धि खर्च कर दी। अन्तमें जैसे तैसे कई महीनोंमें यह 'सेंट ल्यूकिस' नामक बंदरमें पहुँचा।

बंदरमें पहुँचते ही कोलम्बस पर बिना मेघका वज्र गिरा। उसे समाचार मिला कि उसकी सहायकारिणी रानी इसाबिल्ला अब संसारमें नहीं है। वास्तवमें सारे स्पेनमें एक रानी ही कोलम्बसका पक्ष लेनेवाली थी, और वही अब नहीं रही। कोलम्बसको इससे बड़ा ही दुःख हुआ। राजा बड़ी ही कड़ी प्रकृतिका और कृतघ्न था। कोलम्बसको अब आशा न रही कि मेरे परिश्रमका बदला मिलेगा। वह इस समय वृद्ध हो चुका था, उसका शरीर कालकी झपेट सह कर शिथिल हो गया था। कुछ समय तक आराम करनेके बाद जब वह दरबारमें उपस्थित हुआ तब राजाने उसका जरा भी सम्मान न किया। इस नीच व्यवहारको सहते हुए भी उसने बारम्बार अर्जियाँ दीं कि मेरे साथ जो वादा किया गया था वह पूरा किया जाय। यदि कभी सामने मुठभेड़ हो जाती थी तो राजा आँखके लिहाजसे कुछ आश्वासन दे देता था, पर वास्तवमें उसकी इच्छा न थी कि मैं इसे कुछ दूँ। सबने समझ लिया कि अब यह वादा कभी

पूरा न होगा। कोलम्बसका शरीर दिन पर दिन गिरता जा रहा था, इसलिए राजाको आशा हुई कि अब इस तकाजगीरसे जल्दी ही छुटकारा मिल जायगा।

कृतघ्न राजाकी आशा पूरी हुई। जिस देश और जिस राजाकी उसने आजन्म सेवा की, जिसके यशका विस्तार उसने सारे भूमंडल पर कर दिया, जिसके राज्यको उसने कई गुना अधिक बढ़ा दिया, जिस आलसी स्पेन जातिकी उसने संसारकी एक प्रतिष्ठित जातिमें गणना करा दी—वह कोलम्बस उन्हीं मनुष्योंके नीच अत्याचारोंसे जर्जरित होकर ५८ वर्षकी आयुमें इस संसारसे बिदा होगया। वह बुरा दिन १५०६ ई० के मई महीनेकी २० वीं तारीख थी। कोलम्बसका धैर्य असीम था और मृत्युके समय भी उसमें पूरा धैर्य था। वह धैर्य और उत्साहकी मूर्ति था। उसके शवके साथ कृतघ्नताकी निशानी वे बेड़ियाँ भी गाड़ी गईं।

छठा अध्याय ।

सिंहावलोकन ।

If what shone afar so grand,
Turn to nothing, in thy hand;
On again, the virtue lies,
In the struggle, not the prize.

पाठक, कोलम्बसकी जीवनी पढ़ चुके हैं। उसने अपने जीवनमें जो कुछ भला बुरा किया और उसके देश तथा उसकी जातिको उससे जो लाभ पहुँचा वह भी पाठक जान चुके हैं। उसे अपने देशवासियोंसे कैसा बदला मिला यह भी अब पाठकोंसे छिपा नहीं है। यदि कोलम्बसका जीवन अन्तमें आनन्दमय होता तो इस अध्यायके लिखनेकी कोई आवश्यकता न होती, पर कोलम्बसके जीवनका अन्त दुःखमय हुआ है, उसे उसके घोर परिश्रमका कुछ फल नहीं मिला। इस कारण यहाँ हमें उसके समग्र जीवन पर एक दृष्टि डाल जानेकी आवश्यकता प्रतीत होती है।

सबसे पहली बात यह देखनी है कि कोलम्बसको अपने जीवनमें सफलता हुई या असफलता? जो लोग कार्यके अन्तमें इच्छित फल मिल जानेको सफलता कहते हैं वे यही कहेंगे कि कोलम्बसका जीवन निष्फल गया। पर वास्तवमें बात यह

नहीं है। स्वयं सफलता भी एक साधन या उपाय ही है। वह अन्तिम ध्येयकी सबसे ऊँची सीढ़ी है, पर स्वयं अन्तिम ध्येय नहीं है। यदि कोलम्बसके समान निरन्तर कार्यशील व्यक्तिको कुछ सांसारिक सुख न प्राप्त हो सके, तो वह अपने जीवनमें निष्फल नहीं कहा जा सकता। ऊपर एक अँगरेज कविका पद्य लिखा है, जिसका आशय यह है कि मनुष्यके भले गुणोंका दर्पण उसके कार्योंका ऊपरी दिखाव नहीं है, बल्कि उसके सद्गुणोंका दर्पण उसकी सदा जागरित रहनेवाली उत्साहपूर्ण कार्यशक्ति है। वास्तवमें स्तुति करनेयोग्य वही मनुष्य है जो कँटीले वृक्ष पर चढ़ कर फल तोड़ सके, अन्यथा बाँस या लग्गीके द्वारा फल तोड़नेवाले तो हजारों हैं। आवश्यकता पूरी हो जानेका नाम भी सफलता नहीं है। सफल मनुष्य वही है जो अपने निश्चित किये हुए शुभ उद्देश पर बाधाओं, विघ्नों और आपत्तियोंको सहता हुआ डटा ही रहे— चाहे उसका सारा जीवन कोलम्बसके ही समान साधनाकी वेदी पर अर्पण हो जाय। अटल धैर्ययुक्त कार्यशीलताके अन्तिम स्वरूपका नाम सफलता है। फल प्राप्त करलेनेका नाम सफलता नहीं है। क्योंकि फल मिलना न मिलना अपने हाथकी बात नहीं है, पर निरन्तर विघ्न बाधाओंमें डटे रह कर कर्म करते जाना अपने हाथकी बात है। कर्मयोगी श्रीकृष्णने

कहा है–" कर्मण्येवाऽधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।" अर्थात् तुम्हारा अधिकार कर्म करनेमें है, फल पानेमें नहीं। इसलिए कोलम्बसका जीवन निष्फल नहीं कहा जा सकता। अपने कर्म करनेमें वह कभी नहीं घबराया, कर्ममें एक बार भी उसका उत्साह घटा हुआ नहीं देखा गया। उसका शरीर कालकी ठोकरें खाकर जर्जरित हुआ, उसके साथी ही शत्रु बने, और उसके उपकृत लोग ही कृतघ्न बने; पर अपने जीवनके उद्देशसे वह कभी विचलित नहीं हुआ। जो उत्साह और धैर्य उसमें पन्द्रह वर्षकी अवस्थामें था वही मौतसे कुछ घंटे पहले भी उसमें था। जिस बातकी खोजमें वह बचपनसे लगा था, उसीकी खोजमें बूढ़ा हो गया, पर उसने निराश होकर उसे छोड़ा नहीं। अपने सहायक जुटानेके लिए वह लगातार आठ वर्ष तक स्पेनके दरबारमें चक्कर लगाता रहा और बरसों इधर उधर भटकता रहा। उसकी बातको जो सुनता था वही आकाशकुसुम कहकर हँस देता था, पर वह किसी ओर नजर न करता हुआ अपने एक मात्र उद्देशके ध्यानमें रहता था। उसके जीवनमें भोगविलासकी गंध भी नहीं आती, सांसारिक आनन्दकी ओर उसका ध्यान भी नहीं देखा गया, स्वयं राजा बननेकी उसकी कभी इच्छा नहीं हुई–बस सोते जागते, उठते बैठते यदि उसे कोई ध्यान था तो एक मात्र

अपने उद्देशका। ऐसा दीर्घोद्योगी कर्मवीर कोलम्बस अपने जीवनमें कुछ सांसारिक सुख न मिलनेके कारण निष्फल नहीं कहा जा सकता। उसका कर्त्तव्यमय जीवन सफल है। किसी अँगरेज कविने कहा है,

"Who is the man defeated? Columbus in his cell.
Or Livingston dying or Gordon when he fell?
Not these, the hopeful, who have striven and died,
The real and fatal failures are those who have never tried."

अर्थात् जीवनसंग्राममें पराजित अथवा निष्फल मनुष्य कौन है? क्या आपत्तिका मारा, पर दीर्घोद्योगी कोलम्बस अकृतकार्य कहा जा सकता है? जननी जन्मभूमिके लिए जन्मभर आफ्रिकाके जंगलोंमें खाक छाननेवाला लिविंगस्टन पराजित कहा जा सकता है? नहीं, ये कभी पराजित नहीं समझे जा सकते; क्योंकि इन्होंने आशारूपी रस्सीके सहारे, बारम्बार गिरने पर भी आकाशमें चढ़नेका यत्न किया है। इनके जीवनका एक मात्र व्रत था—"कार्यं वा साधयामि शरीरं वा पातयामि"। ये लोग अपने कार्योंमें निरन्तर लगे रहे और अपने प्राणोंकी आहुति दे गये; अतः यथार्थमें ये ही कृतार्थ और सफल हुए। असफल और पराजित मनुष्य तो वह है जिसने गिरनेके डरसे कभी खड़े होनेका यत्न ही नहीं किया। जो अपने उद्देशकी सिद्धिमें मर जाता है वह धन्य है; पर वह आलसी कायर किस कामका जो असफलताके डरसे काम ही शुरू नहीं करता!

कोलम्बसने काम किया, प्राणोंकी बाजी लगा कर काम किया। उसके काममें विराम या विश्राम नहीं था और उसी धुनमें उसका शरीरान्त होगया, इसलिए वह सफल है।

क्या कोलम्बस लोभी था? नहीं। उसने राजारानीसे अपने घरानेके प्रतिनिधि बनाये जानेकी शर्त जरूर लिखवा ली थी और वह जीवनके अन्त तक इस शर्तको पूरी करनेके लिए राजारानीसे कहता भी रहा। पर इससे उस पर लोभीपनका दोष नहीं आ सकता। वह सोनेकी खानोंका मालिक रहा और मनों सोना उसने राजाकी भेट किया, पर उसमें लोभकी मात्रा कभी नहीं देखी गई। उसके शत्रु इतने अधिक थे कि उसमें यदि जरा भी यह दोष होता तो उसे बदनाम कर डालते; पर उन्हें कभी एक अक्षर कहनेका भी साहस नहीं हुआ। उसका गम्भीर जीवन विश्वास, आशा, दृढता और उत्साहका नमूना था। जीवनव्यापी उद्योगकी वह मूर्ति था।

कोलम्बसके जीवनसे कर्त्तव्यमें निरन्तर धीरता और दृढतासे लगे रहनेकी शिक्षा मिलती है। यह भी मालूम होता है कि कुछ स्वार्थी और ईर्षालु प्रकृतिके मनुष्योंके कारण जीवनमें असीम कष्टों और विपत्तियोंका सामना करना पड़ता है। इस स्थान पर जंगली हिंसक जन्तुओंकी अपेक्षा भी मनुष्य अधिक भयानक जीव बन जाता है। जीवनसंग्राम इसीका नाम है।

यह तोपोंकी गर्जनासे थर्राते हुए रणक्षेत्रकी अपेक्षा भी अधिक भयानक और कठिन है। आगे बढ़ते हुएको पीछे घसीट लेना ही इस संग्रामका अन्यतम कौशल है। यहाँ बाजी लगी हुई है कि देखें सबको पीछे छोड़ कर आगे कौन निकलता है। जिन लोगोंसे आगे नहीं बढ़ा जाता, वे बढ़नेवालेका पल्ला पकड़ कर उसे भी नहीं बढ़ने देना चाहते। उसे धक्का मार कर किसी प्रकार आप आगे बढ़नेका प्रयास करते हैं। न जाने कितने लोग इस खींचातानीमें गिर कर कुचले जाते हैं, कितने औंधे मुँह होकर गिर पड़ते हैं और कितने धींगाधींगीसे उदास होकर सबका साथ छोड़ देते हैं। ऐसे बहुत कम शूरवीर निकलते हैं जो इन उपद्रवोंको सहते हुए और कंटकपूर्ण मार्गको तै करते हुए आगे ही बढ़े चले जायँ। ऐसे ही लोग जीवनसंग्रामके विजेता कहलाते हैं। कोलम्बस इस जीवनसंग्रामका विजयी वीर था। कालकी अदम्य शक्तिने उसके शरीरको अवश्य ही शिथिल कर दिया, किन्तु उसके हृदयमें उत्साह और साहसका वही भीम वेग बना रहा। उसके शत्रुओंकी भस्म न मालूम कितने रूपोंमें परिवर्तित हो गई होगी, किन्तु कोलम्बसका उत्साहपूर्ण दीर्घोद्योगी जीवन अब भी प्रत्येक देशके बालकोंको निरन्तर उद्योगकी शिक्षा दे रहा है। इतिहासके पृष्ठ अब भी उज्ज्वल भाषामें

उसकी कीर्तिका गान कर रहे हैं। न मालूम कितने निराशामें पड़े हुए हृदयोंको कोलम्बसकी जीवनीने आशा दिलाई है और भविष्यमें भी न मालूम वह कितनोंको आश्वासन देगी। यही सफलताका लक्षण है। भविष्यमें न मालूम कितने लेखक कोलम्बसकी जीवनी पर कुछ न कुछ लिख कर संसारको शिक्षा देंगे। ऐसा सजीव कर्तव्यका पुतला प्रत्येक दशामें मनुष्यको शिक्षा देता है। जीवनसंग्रामके योद्धाओंको सम्बोधन करके एक महापुरुष कहता है—“हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्।” यह विकट जीवनसंग्रामकी अचूक शिक्षा है और इसका जीता जागता उदाहरण कोलम्बस है। इस पुरुषकी जीवनी शिक्षा देती है--“आपत्ति, विपत्ति और घोर संकटमें भी अपने कर्मका लक्ष्य न त्यागो। बादलोंकी कड़क और बिजलीकी चमकसे लक्ष्यको मत भूल जाओ। मनुष्य-शरीर धारण किये हुए राक्षसोंके पैने दाँत देख कर मत डरो। तुच्छ शारीरिक पीड़ाओंसे मत बिलखो। अनन्त निराशाकी काली चादर देख कर आशा मत त्यागो। यदि सब विपत्तियोंके पार तुम जा सकते हो तो केवल जीवनव्यापी परिश्रम और उद्योगके ही बलसे।” भारतमाताके सपूतो, उठो, और कोलम्बसकी इस शिक्षाको अपने जीवनमें सार्थक करके दिखा दो।